



# उदयपुर की जीवन रेखा आयड़ नदी

**प्रस्तावना :** आयड़ नदी उदयपुर शहर की मुख्य नदी है। यह नदी उदयपुर झील संकुलों और उदयपुर शहर के उत्तर-पूर्व पर घेरा डालते हुए उदयसागर झील में समाहित हो जाती है। नगर के विस्तार के बाद अब यह नगर के बीच में आ गई है। उदयसागर भरने के पश्चात् इस नदी को बेड़च नदी कहा जाता है। आयड़ नदी इस भू-भाग के करीब 500 वर्ष पुराने आहाड़ सभ्यता के वर्तमान टीलों के यहाँ पुरावशेष विद्यमान हैं, के निकट होकर बहती है, इसी कारण इस नदी का प्राचीन नाम आहाड़ नदी रहा होगा, जो कालान्तर में अपभ्रंश होकर वर्तमान में आयड़ कहलाता है।

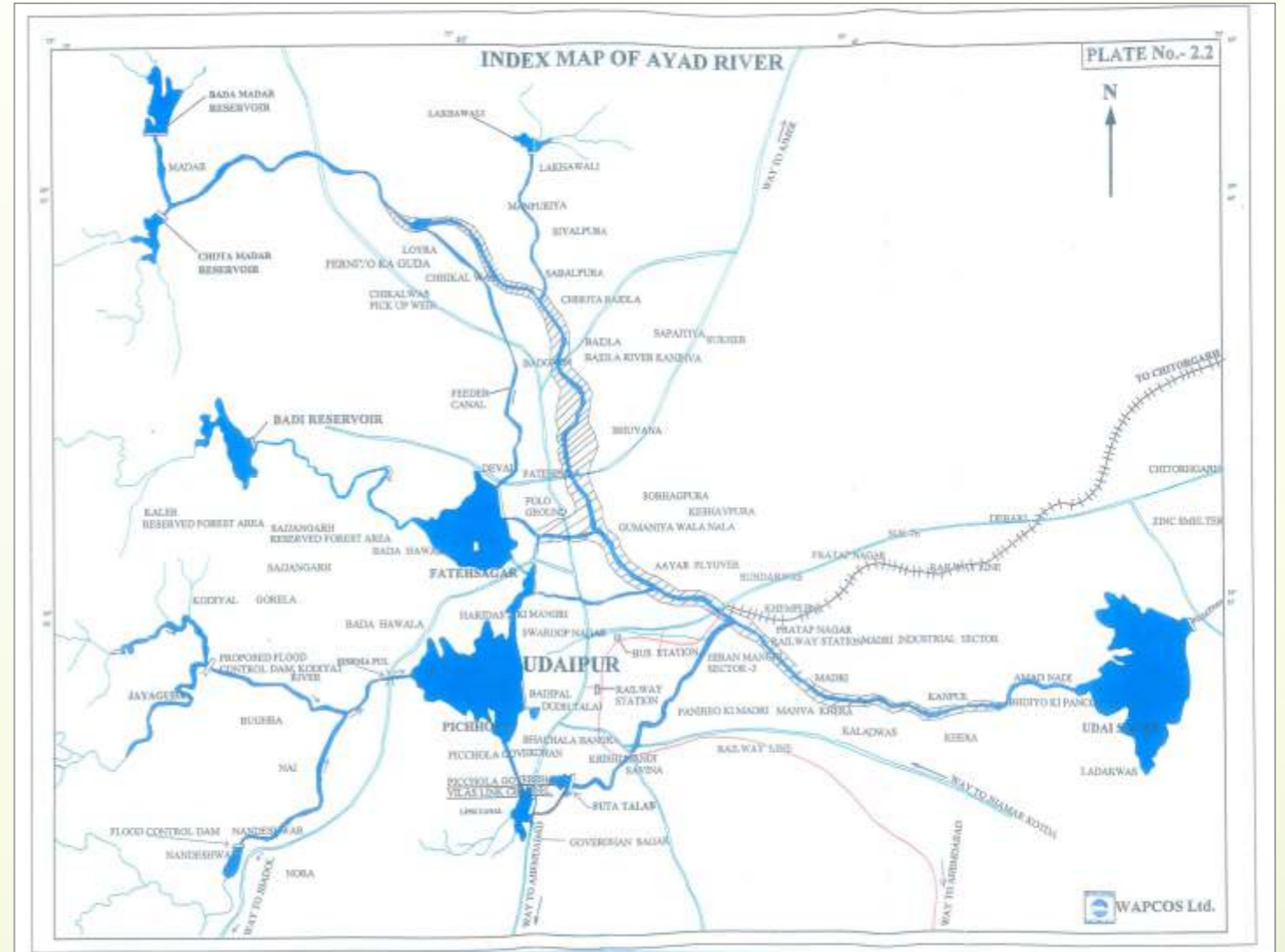
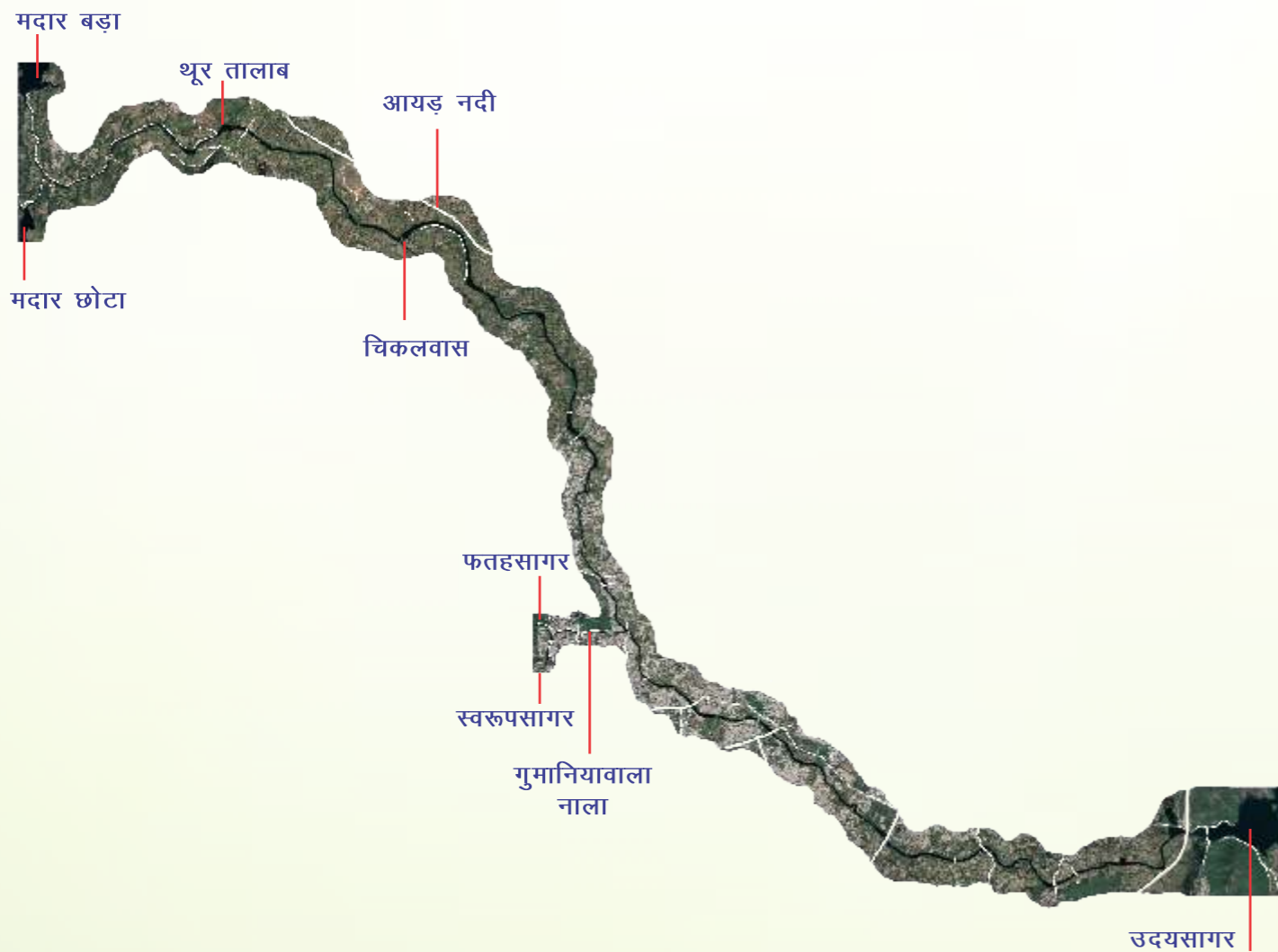
सीसारमा नदी इसकी मुख्य सहायक नदी है जो पिछोला-फतहसागर झील संकुलों को भरकर गुमानियावाला नाले में बहती हुई अलीपुरा घोर पर इसमें मिल जाती है। महाराणा उदयसिंह अपने इष्टदेव भगवान एकलिंग जी के दर्शनार्थ जा रहे थे तो इस नदी के कल-कल नाद और इसकी निकटवर्ती हरियाली चारों ओर पहाड़ों से घिरे हुए सुरम्य गिर्वा क्षेत्र ने उनका मन मोह लिया था। विशाल जल राशि और पर्वतों द्वारा यह संरक्षित क्षेत्र उनके मन को इतना भाया कि उन्होंने चितौड़ के स्थान पर इस क्षेत्र को अपनी राजधानी के लिए अति उपयुक्त माना और उदयपुर नगर की स्थापना की।

आयड़ नदी का उद्गम स्थल गोगुन्दा की पहाड़ियों के अनेक नालों से मिलकर 18.5 कि.मी. दक्षिणी-पूर्व में बहने के पश्चात् थूर के पास महाराणा जयसिंह द्वारा 1687 ई. में निर्मित एक तालाब जो वर्तमान में टूटा हुआ है, में मिलकर इसके पथरीले भाग में इसकी जल राशि अपनी सुरम्य दृश्य छटा बिखेरती है। इन नालों में जाम्बुडिया नाला प्रमुख है। इसके अतिरिक्त घटक नाले, मदार छोटा, मदार बड़ा, थूर का तालाब आदि इस नदी के प्रमुख जल स्रोत हैं।

इस नदी का जल आवक क्षेत्र 292.30 वर्ग कि.मी. है। थूर से दक्षिण-पूर्व की ओर चिकलवास, बड़गांव, बेदला आदि गांवों के पश्चात् आयड़ उदयपुर क्षेत्र के मध्य और राणा प्रताप रेलवे स्टेशन और अनेक गांवों (तालिका के अनुसार) के समीप बहते हुए आयड़ नदी उदयसागर में समाहित होती है। इस प्रकार आयड़ नदी की कुल लम्बाई 26 कि.मी. है। थोड़ी वर्षा के उपरान्त ही थूर फूटे तालाब का यह मिलन स्थल एक सुन्दर पिकनिक स्थल बन जाता है और उदयपुर शहर एवं आसपास के गांवों के हजारों लोग आत्म-विभोर होकर इस दृश्य को देखने के लिए उमड़ पड़ते हैं और जल-क्रीड़ा करते हैं।

झीलों के शहर की जीवन रेखा "आयड़ नदी" के जख्मों को भरने का प्रयास अब तक गंभीरता से नहीं किया गया है। कभी शहर के प्यासे कँठों को तर करने वाला यह विरासत में मिला जल स्रोत अब मात्र गंदे नाले में तब्दील हो गया है। शहर से गुजरते नदी के हिस्से अतिक्रमणों में डूबे हुए हैं। तीन बार सीमांकन होने के बावजूद भी इसके अवैध कब्जों को हटाया नहीं गया है।

आयड़ नदी के किनारे बसे गाँवों का विवरण	
दायीं तरफ	बायीं तरफ
थूर	कविता
लोयरा	राटौड़ों का गुड़ा
चिकलवास	डांगियों का गुड़ा
बेदला	लखावली
बड़गांव	सबलपुरा
देवाली	बेदला
उदयपुर सिटी	भुवाणा
मनवा खेड़ा	पुलां
कलड़वास	आयड़
एकलिंगपुरा	पारड़ा
कानपुर खेड़ा	पुरोहितों की मादड़ी
खरबड़िया	भोईयों की पंचोली



**प्रथम खण्ड अथवा उद्गम स्थल** : आयड़ नदी के प्रथम खण्ड का प्रारम्भ इसके उद्गम स्थल छोटे एवं बड़े मदार तालाब से होता है। इन तालाबों के पूर्ण भराव उपरान्त बहती हुई जल धाराएँ दोनों तालाबों के मध्य मदार गांव के पास एक संगम स्थल पर परस्पर मिलकर एक बड़ी जलधारा के रूप में आगे बढ़ती है, जो मदार गांव एवं उसके चारों ओर की पहाड़ियों से बहकर आने वाले जल को समाहित करते हुए थूर तालाब (फूटा तालाब) तक पहुँचती है। यहाँ एक बड़े नाले जाम्बुड़िया एवं अन्य छोटे नालों से प्राप्त अतिरिक्त जल इसमें समावेशित होता है। इस तालाब की रपट पर वेग के साथ बहता हुआ पानी

एक सुन्दर दृश्य प्रस्तुत करता है। वर्षाकाल में यह एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल का स्वरूप ले लेता है तथा शहरवासी इसमें नहाने एवं

जलक्रीड़ा करने पहुँचते हैं। यहाँ से बहता हुआ जल थूर, कविता, लोयरा, रातौड़ों का गुड़ा आदि गांवों के मध्य से होकर चिकलवास बंधे से टकराता है एवं एक छोटे तालाब का स्वरूप ले लेता है। यहाँ से यह जलधारा दो भागों में विभक्त हो जाती है जिसके प्रथम भाग में इस जल की दिशा परिवर्तन कर चिकलवास फीडर अथवा मदार नहर के माध्यम से सीधा फतहसागर में पहुँचता है। फतहसागर झील को 11 से 14 फीट तक भरने का मुख्य स्रोत भी मदार नहर ही है। इसके द्वितीय भाग में मदार नहर की क्षमता से अधिशेष जल रपट/स्लूस गेट से निकलकर बेदला बंधे की ओर आगे बढ़ता है।

## आयड़ - उद्गम स्थल से चिकलवास तलाई तक

### शहर की लाइफ लाइन व भावी पर्यटन स्थल-आयड़ नदी

शहर की लाइफलाइन व भविष्य में पर्यटन को और ऊँचाइयाँ देने वाली आयड़ नदी आज खुद विकास के वादों के भँवर में उलझ गई है। जनता भी इसके प्रति विमुख है। इसके पेटे को अतिक्रमण मुक्त करना तो दूर इसकी सफाई तक करने में पसीना आ रहा है। आयड़ ने क्या-क्या नहीं झेला है? मसलन झूठे वादे हो या शहर की गंदगी। यह नदी अपने में शहर का बड़ा विकास समेटे बैठी है। जिस पर किसी की नींद नहीं उड़ रही है, विशेषकर इसके किनारों पर रहने वालों की भी। जमीनों की दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही दरों, मँहगे होते निर्माण कार्यों के कारण लोगों ने पेटे के किनारे जहाँ जगह मिली, वहाँ पक्की ईमारतें बनाने का रिवाज पनपा दिया।

आयड़ के किनारे रहने वाले यदि संकल्प करें तो आयड़ का विकास संभव है। यदि उन्होंने नदी की कुछ जमीन पर अतिक्रमण कर रखा है तो उसे स्वयं मुक्त करें। किनारे पर सड़क बनाने में सहयोग करें। सड़क बनाने के पश्चात् पर्याप्त जगह छोड़कर निर्माण करें। किनारों पर स्थित कृषि भूमि पर स्वयं उद्यान लगावें एवं स्वीकृति उपरान्त रिसोर्ट/रेस्टोरेन्ट का रूप दे सकते हैं। किनारों पर उपलब्ध अधिकृत जमीन पर नगर निगम/नगर विकास प्रन्यास से स्वीकृति

बड़ा व छोटा मदार तालाब की जल धाराओं का संगम स्थल

रातौड़ों का गुड़ा

बड़ा मदार तालाब

थूर का तालाब

लोयरा

चिकलवास फीडर (मदार नहर)

आयड़ नदी बेसिन की टोपोग्राफी, पहाड़ों एवं पहाड़ियों से बनने वाली प्राकृतिक जल प्रवाह व्यवस्था एवं पिछोला, फतहसागर सहित समस्त छोटे तालाबों के मूल स्वरूप व प्राकृतिक किनारों को बचाने से ही आयड़ नदी एवं अन्ततः उदयपुर बचेगा।

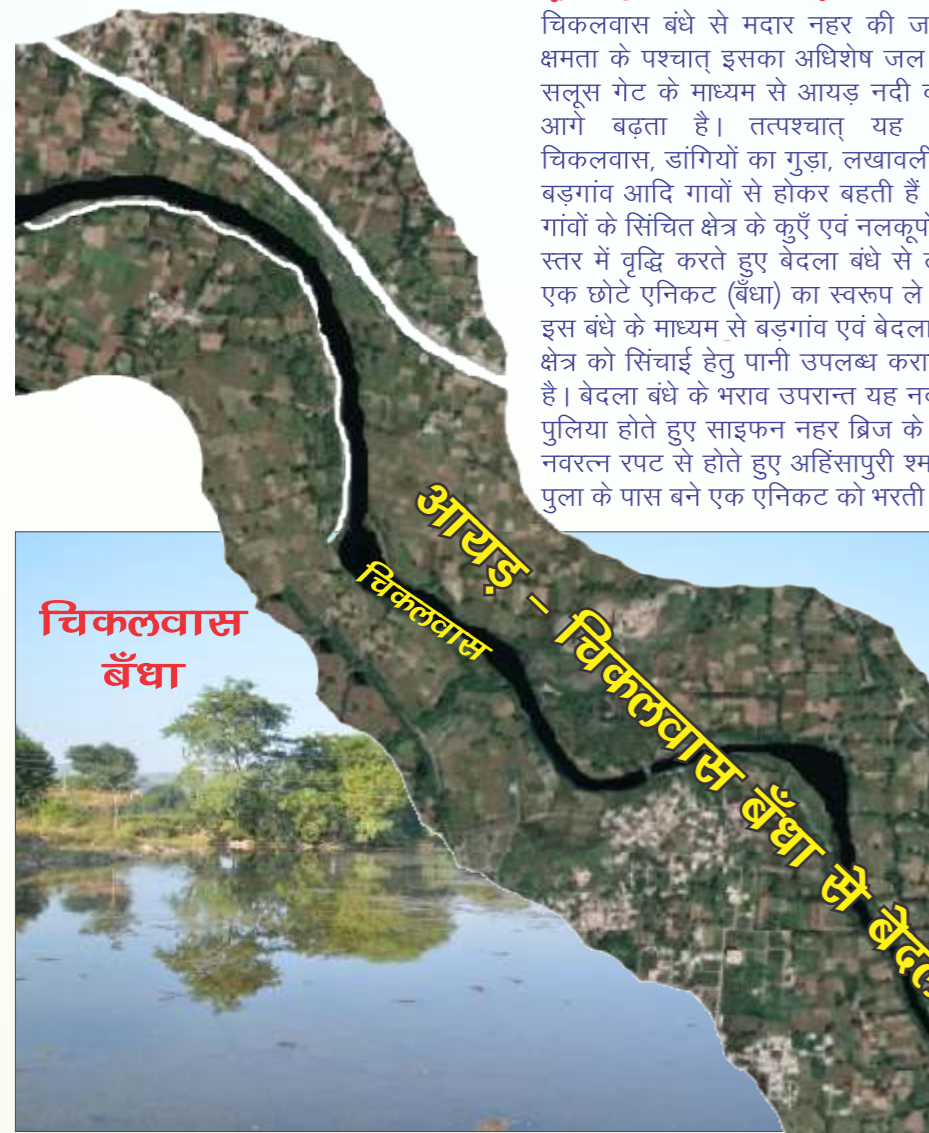
छोटा मदार तालाब : मुख्य पाल एवं रपट

छोटा मदार तालाब : रपट

उपरान्त बहुमंजिले भवन, होटल, मूविंग रेस्टोरेन्ट बनाये जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त मेवाड़ी शैली और हेरिटेज लुक के छोटे रेस्टोरेन्ट्स हो। नदी में मेवाड़ परम्परा के अनुसार अत्याधुनिक नावों का संचालन हो। नदी के किनारों पर पर्यटकों के ठहरने की विशेष आवास व्यवस्था हो। नदी के किनारों पर मनोरंजन के साधनों के साथ आकर्षक झाँकियाँ बनायी जावे। नदी के दोनों किनारों को शहर से जुड़ी विशेष जानकारियों से सुसज्जित किया जावे। नदी के दोनों किनारों पर हाई फ्लड लेवल का ध्यान रखते हुए कॉलोनियों को जलप्लावन से बचाने के व्यवस्था की जाए।

नदी किनारे रिटेनिंग वॉल एवं सड़क बनाने का कार्य राज्य सरकार, नगर विकास प्रन्यास, नगर निगम एवं कॉरपोरेट जगत की सहभागिता से किया जा सकता है। शेष कार्य समुचित नियम बनाकर जनता पर छोड़ सकते हैं। उदयपुर की जनता पर विश्वास करें, उसका मनोबल बढ़ाये, तो आयड़ विकसित होगी।



### चिकलवास बंधा

**द्वितीय खण्ड अथवा जल दिशा परिवर्तन स्थल :**  
चिकलवास बंधे से मदार नहर की जल भराव क्षमता के पश्चात् इसका अधिशेष जल रपट या सलूस गेट के माध्यम से आयड़ नदी का बहाव आगे बढ़ता है। तत्पश्चात् यह जलधारा चिकलवास, डांगियों का गुड़ा, लखावली, बेदला, बड़गांव आदि गांवों से होकर बहती हैं तथा इन गांवों के सिंचित क्षेत्र के कुएँ एवं नलकूपों के जल स्तर में वृद्धि करते हुए बेदला बंधे से टकराकर एक छोटे एनिकट (बंधा) का स्वरूप ले लेती है। इस बंधे के माध्यम से बड़गांव एवं बेदला के कृषि क्षेत्र को सिंचाई हेतु पानी उपलब्ध कराया जाता है। बेदला बंधे के भराव उपरान्त यह नदी बेदला पुलिया होते हुए साइफन नहर ब्रिज के नीचे एवं नवरत्न रपट से होते हुए अहिंसापुरी श्मशान एवं पुला के पास बने एक एनिकट को भरती है।

### थूर फूटा तालाब - पिकनिक स्थल



### चिकलवास बंधा



### चिकलवास तलाई

### आयड़ नदी

### आयड़ नदी के मूलभूत एवं वैज्ञानिक तथ्य

- नदी की कुल लम्बाई 26 कि.मी. है। इसमें 11 कि.मी. भाग शहर की सघन आबादी वाले क्षेत्र में है। नदी साइफन तिराहे से शहर में प्रवेश करती है। पुला, अलीपुरा, भूपालपुरा, अशोक नगर, आयड़ एवं सेवाश्रम पुलिया के बाद नव विकसित शहरी सीमा का हिस्सा बन जाती है। इस नदी का जल आवाह क्षेत्र 292.30 वर्ग कि.मी. है।
- चिकलवास गांव के पास इस नदी पर एक एनिकट बना हुआ है जिससे चिकलवास फीडर/मदार नहर निकलती है, जो वर्तमान में फतहसागर झील को भरती है।
- नदी का पानी उदयसागर झील को भरने के बाद आगे बने हुए कई बाँधों वल्लभनगर, बड़गांव, घोसुन्डा आदि को लबालब करता है।
- नदी में प्राकृतिक वर्षा जल की आवक पूर्व में वर्ष भर रहती थी लेकिन वर्तमान में अधिकतम चार महीनों तक ही होती है। शेष आठ महीने सूखे ही बीतते हैं।
- सीसारमा नदी इसकी मुख्य सहायक नदी है जिसकी क्षमता पिछोला संकुल की झीलों को भरने तक ही सीमित है और इसकी बहुत कम जल राशि आयड़ नदी को मिल पाती थी।
- वर्षाकाल के चार महीनों में जल प्रवाह इसके आवाह क्षेत्र में होने वाली वर्षा पर निर्भर करता है। सामान्यतया चार-पाँच वर्षों में केवल एक बार ही नदी में पर्याप्त वर्षा जल बहाव देखा जाता था। पिछले वर्षों में उपरोक्त परिस्थिति में कुछ बदलाव आया है। देवास द्वितीय परियोजना से प्राप्त अतिरिक्त जल से पिछोला तंत्र, फतहसागर भरकर छलकने से गुमानियावाला से पानी बहकर आयड़ नदी में समाहित होने से नदी में जल बहाव देखा जा रहा है।
- आयड़ नदी उदयसागर में जाकर समाप्त हो जाती है। सामान्यतया यह नदी उदयसागर को भरने में अक्षम रहती है। औसतन 4-5 वर्षों में एक बार यह नदी झील को लबालब कर, बेड़च नदी की उद्गम बनती है।

### चिकलवास फीडर (मदार नहर)



### बेदला बंधा



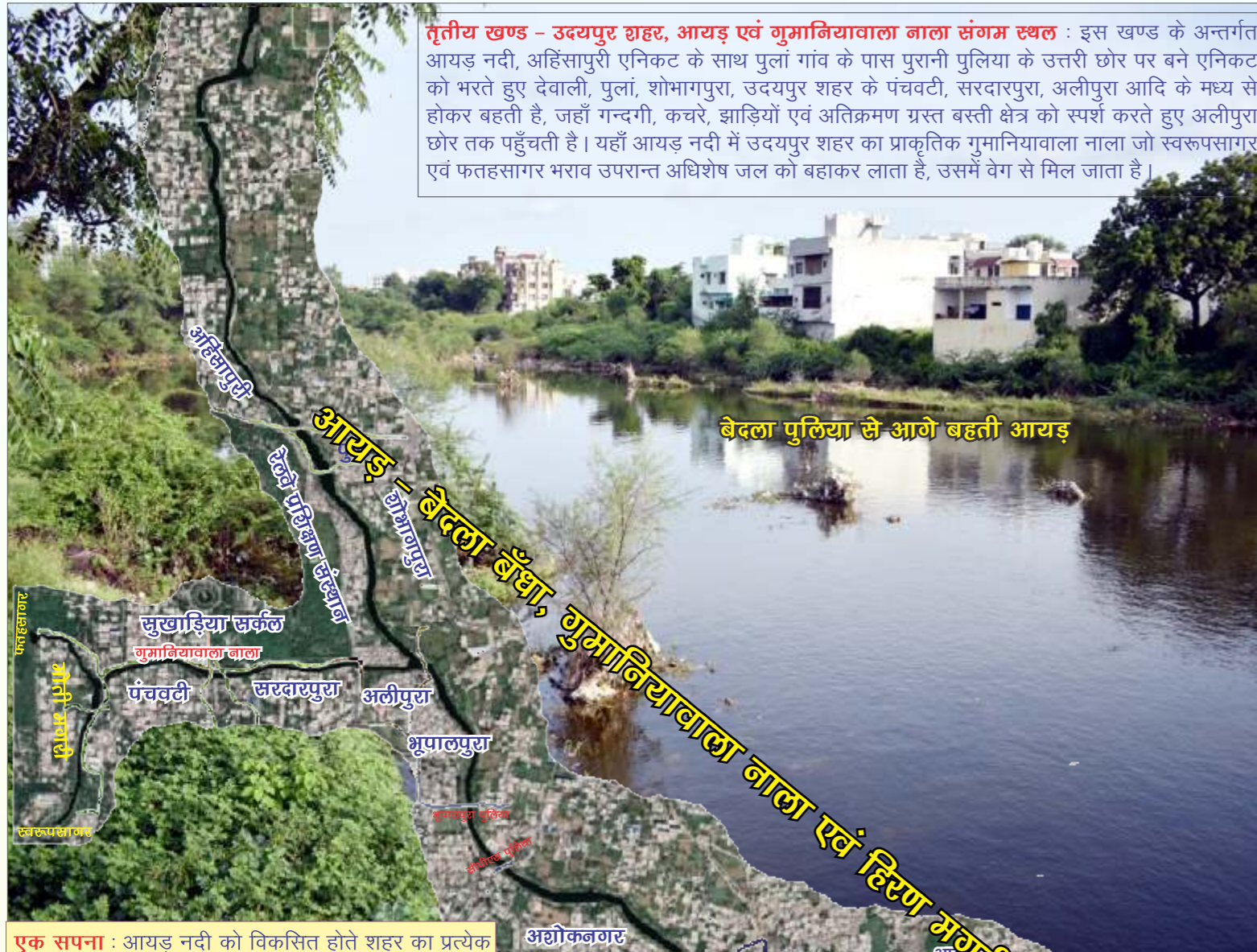
### चिकलवास फीडर (मदार नहर)



### जल दिशा परिवर्तन

### आयड़ नदी की भौगोलिक स्थिति - मदार बड़ा से उदयसागर झील तक

क्र.सं.	आयड़ नदी क्षेत्र	स्थिति		समुद्रतल से ऊँचाई (फीट में)	Eye Alt (फीट में)
		अक्षांश	देशान्तर		
1.	मदार बड़ा	24°40'49.10" N	73°36'20.39" E	2102	5009
2.	मदार छोटा	24°39'52.30" N	73°36'22.21" E	2102	2991
3.	थूर की पाल	24°40'33.31" N	73°38'11.92" E	2022	3796
4.	चिकलवास	24°39'35.83" N	73°39'46.43" E	1973	3397
5.	बेदला बंध	24°37'58.73" N	73°41'24.81" E	1921	2668
6.	अलीपुरा पुलिया	24°35'54.39" N	73°42'01.63" E	1876	4223
7.	भूपालपुरा पुलिया	24°35'35.72" N	73°42'07.98" E	1874	4991
8.	सीपीएस पुलिया	24°35'27.28" N	73°42'13.37" E	1873	3783
9.	आयड़ पुलिया	24°35'13.69" N	73°42'40.47" E	1862	3783
10.	सेवाश्रम पुलिया	24°34'58.29" N	73°43'27.51" E	1842	3157
11.	सेक्टर-3 व यूएलटी कॉलोनी के मध्य की पुलिया	24°34'30.11" N	73°44'03.26" E	1819	5470
12.	एन.एच. 8 ब्रिज	24°34'00.00" N	73°44'35.50" E	1815	3340
13.	कलड़वास पुलिया	24°34'56.12" N	73°45'30.78" E	1803	3324
14.	उदयसागर से (गांव के बाहर वाली) तीसरी पुलिया	24°33'37.37" N	73°46'11.71" E	1809	2375
15.	उदयसागर से दूसरी पुलिया	24°33'43.00" N	73°46'23.76" E	1800	2495
16.	उदयसागर से प्रथम पुलिया	24°34'00.73" N	73°47'26.99" E	1792	2365
17.	उदय सागर पुलिया	24°34'03.25" N	73°47'52.23" E	1793	2462



**तृतीय खण्ड - उदयपुर शहर, आयड़ एवं गुमानियावाला नाला संगम स्थल :** इस खण्ड के अन्तर्गत आयड़ नदी, अहिंसापुरी एनिकट के साथ पुलां गांव के पास पुरानी पुलिया के उत्तरी छोर पर बने एनिकट को भरते हुए देवाली, पुलां, शोभागपुरा, उदयपुर शहर के पंचवटी, सरदारपुरा, अलीपुरा आदि के मध्य से होकर बहती है, जहाँ गन्दगी, कचरे, झाड़ियों एवं अतिक्रमण ग्रस्त बस्ती क्षेत्र को स्पर्श करते हुए अलीपुरा छोर तक पहुँचती है। यहाँ आयड़ नदी में उदयपुर शहर का प्राकृतिक गुमानियावाला नाला जो स्वरूपसागर एवं फतहसागर भराव उपरान्त अधिशेष जल को बहाकर लाता है, उसमें वेग से मिल जाता है।

**एक सपना :** आयड़ नदी को विकसित होते शहर का प्रत्येक नागरिक देखना चाहता है। लोगों की हसरत है कि आयड़ में नौकायन हो, पर्यटकों की चहल-पहल रहे और किनारों की खूबसूरती और इसमें बहती धारा स्वच्छ हो। प्रत्येक शहरी को भी संकल्प लेना होगा कि शहर की सुन्दरता को चार चाँद लगाने वाली इस नदी को कचरा डालकर व अवैध निर्माण कर बदसूरत नहीं करें। तभी आयड़ झीलों की नगरी की शान बन सकेगी। आयड़ नदी में बढ़ रहे अतिक्रमण एवं प्रदूषण से उदयपुर घाटी की जैव विविधता नष्ट हो रही है।

**आयड़ नदी की भौगोलिक स्थिति - स्वरूपसागर-फतहसागर से अलीपुरा पुलिया**

क्र.सं.	गुमानियावाला नाला	स्थिति		समुद्रतल से ऊँचाई (फीट में)	Eye Alt (फीट में)
		अक्षांश	देशान्तर		
1.	स्वरूप सागर	24°35'31.12" N	73°41'07.15" E	1954	2506
2.	यू.आई.टी. पुलिया	24°35'52.52" N	73°41'14.29" E	1898	2695
3.	पंचवटी पुलिया	24°35'53.50" N	73°41'30.07" E	1896	2695
4.	वेस्टर्न रेलवे	24°35'54.78" N	73°41'37.62" E	1895	2933
5.	आलू फैक्ट्री पुलिया	24°35'55.00" N	73°41'51.80" E	1886	3075
6.	अलीपुरा पुलिया	24°35'54.39" N	73°42'01.63" E	1876	4223



बेदला पुलिया एवं बेदला बंधा के मध्य आयड़



बेदला पुलिया



अहिंसापुरी एनिकट से नई पुलिया, पुलां



नई पुलिया, पुलां



पुलां पुरानी पुलिया एवं एनिकट



पुलां पुरानी पुलिया से अलीपुरा छोर तक बहती आयड़



गुमानियावाला नाला

मुख्य आयड़ से गुमानियावाला नाला मिलते हुए



आयड़ - शोभागपुरा सड़क से आगे बहते हुए

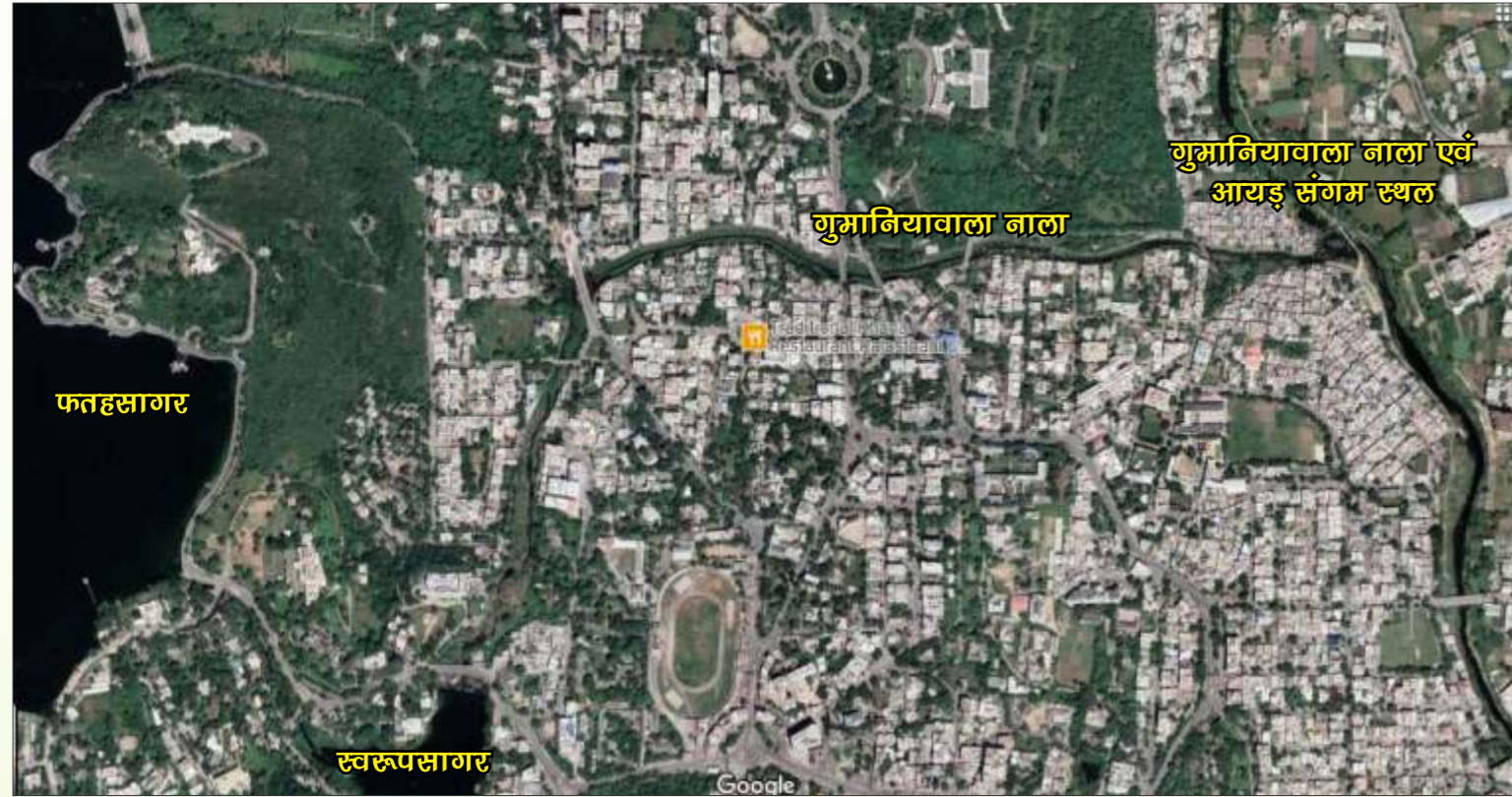
**गुमानियावाला नाला** : उदयपुर शहर की पिछोला तंत्र की अंतिम इकाई स्वरूपसागर एवं दूसरी महत्वपूर्ण झील फतहसागर के पूर्ण भराव उपरान्त इनका ओवरफ्लो एवं सलूस गेट के माध्यम से पानी पृथक-पृथक नाले के रूप में आगे बढ़ता हुआ नगर विकास प्रन्यास पुलिया पर परस्पर मिलता है, यहाँ से ही इसे गुमानियावाले नाले के नाम जाना जाता है। स्वरूपसागर से ओवरफ्लो पानी ऊँची पहाड़ी से चट्टानों के मध्य तीव्र ध्वनि युक्त बहाव के साथ दैत्य मगरी एवं मोती मगरी स्कीम (नगर विकास प्रन्यास कॉलोनी) के मध्य चौड़े पाट में बहते हुए मोती मगरी पुलिया से होते हुए नगर विकास प्रन्यास पुलिया से ठीक पहले फतहसागर से आने वाले नाले में मिलता है। इसी प्रकार फतहसागर के ओवरफ्लो के माध्यम से भव्यता के साथ गिरता नाला सहेलियों की बाड़ी के हरित क्षेत्र, नगर विकास प्रन्यास तथा नीलकंठ महादेव के पास टेक्नोक्रेट हाउसिंग कॉलोनी के मध्य एक पतली धारा के रूप में नगर विकास प्रन्यास पुलिया की ओर बढ़ते हुए स्वरूप सागर की ओर से आते हुए पानी से मिलता है। यहाँ से दोनों नाले परस्पर मिलकर एक मुख्य धारा के रूप में इस पुलिया के नीचे से होकर शांत एवं मनोहरी स्वरूप के साथ पंचवटी एवं न्यू फतहपुरा आवासीय बस्तियों के मध्य से होकर पंचवटी की दोनों पुलियाओं की ओर बहता है। इसके आगे सरदारपुरा पुलिया, आलू फैक्ट्री रपट से बहता हुआ अलीपुरा के अंतिम छोर पर यह आयड़ नदी में मिल जाता है।



फतहसागर ओवरफ्लो साईट - विहंगम् दृश्य



फतहसागर नाला



गुमानियावाला नाला एवं आयड़ संगम स्थल

गुमानियावाला नाला

फतहसागर

स्वरूपसागर

Google



स्वरूपसागर एवं फतहसागर नालों का संगम स्थल

स्वरूपसागर नाला

फतहसागर नाला



स्वरूपसागर ओवरफ्लो स्थल



चट्टानों के मध्य बहता नाला



मोती मगरी पुलिया से नीचे बहता नाला



नगर विकास प्रन्यास पुलिया से पूर्व पूर्ण भराव स्तर पर नाला

## गुमानियावाला नाला - आयड़ मिलन स्थल तक



नगर विकास प्रबन्धन पुलिया के नीचे से आगे की ओर बहता पानी



न.वि.प्र. पुलिया एवं प्रथम पंचवटी पुलिया के मध्य में पूर्ण भराव स्तर पर नाले का मनोहारी स्वरूप



न.वि.प्र. पुलिया से पंचवटी पुलिया की तरफ बहता पानी



पंचवटी पुलिया से टकराते हुए नाले की विशाल जलराशि



पंचवटी की दोनों पुलियाओं के मध्य नाले का भव्य स्वरूप



पंचवटी की दूसरी पुलिया से सरदारपुरा पुलिया की ओर बहता पानी



सरदारपुरा पुलिया से आलू फैक्ट्री रपट की ओर बहता पानी



सरदारपुरा एवं आलू फैक्ट्री रपट के मध्य नाले का विशाल स्वरूप



आलू फैक्ट्री रपट से अलीपुरा के अंतिम छोर तक बहता पानी



गुमानियावाला नाला आयड़ मिलन स्थल से पहले



आयड़ गुमानियावाला नाला मिलन स्थल से पहले



आयड़-गुमानियावाला नाला परस्पर मिलते हुए



आयड़-गुमानियावाला नाला मिलन स्थल का विहंगम स्वरूप - सौभागपुरा रपट की ओर बहता पानी

**तृतीय खण्ड (स) :** अलीपुरा एवं सौभागपुरा रपट के ऊपर एवं नीचे से पानी बहता हुआ भूपालपुरा एवं सेन्ट्रल पब्लिक स्कूल के पास स्थित दोनों बड़ी पुलिया पार करता है तथा श्मशान घाट को बिना अवरोध के स्पर्श करते हुए इसके पास बने एनिकट को भरते हुए आयड़ पुलिया तक आगे बढ़ जाता है। इस खण्ड में आयड़ नदी का जल आनन्द प्लाजा के पास निर्मित आयड़ द्वि-पुलिया से बहता हुआ सुभाषनगर स्थित पासपोर्ट कार्यालय के पास के एनिकट को भरते हुए पवित्र गंगुकुण्ड (राजपरिवार का मोक्षधाम) तक पहुँचता है। तत्पश्चात् आहड़ सभ्यता के अवशेष स्थल को स्पर्श करते हुए यह जल ठोकर चौराया स्थित द्वि-पुलिया की ओर आगे बढ़ जाता है। इस प्रकार आयड़ नदी मुख्य शहर की सीमा को पार करते हुए नये उदयपुर अर्थात् एक ओर जोरेनगर, हिरण मगरी, सेक्टर 3, 4 व मनवाखेड़ा तथा दूसरी ओर महाराणा प्रताप रेलवे स्टेशन, एफसीआई गोदाम, आकाशवाणी के मध्य से होकर आगे बढ़ती है।

अलीपुरा - सौभागपुरा रपट



अलीपुरा - सौभागपुरा रपट से आगे बहती आयड़



**चतुर्थ खण्ड - आयड़ नदी का उदयसागर में समावेश :** आकाशवाणी कार्यालय के बाद यह नदी ग्रामीण अंचल व गहन कृषि क्षेत्र कलड़वास, एकलिंगपुरा, पारड़ा, कानपुरखेड़ा, पुरोहितों की मादड़ी, खरबड़िया, भोईयों की पंचोली आदि गाँवों के साथ औद्योगिक क्षेत्र मादड़ी के पास बहते हुए उदयसागर झील में समाहित हो जाती है। उदयसागर के अधिकतम जल भराव क्षेत्र के किनारे पानी को रोककर इन गाँवों की औद्योगिक सीवरेज से खराब हुई भूमि पर अति आधुनिक उदयपुर की बसावट के नियोजन पर गहनता से विचार अवश्य किया जाना चाहिये। आधुनिक शहर में उच्च स्तरीय होटल्स, रेस्टोरेन्ट्स मॉल, आवासीय कॉलोनियाँ, सड़कें आदि को उदयसागर झील को मध्य में रखते हुए विकसित किया जाना चाहिये।

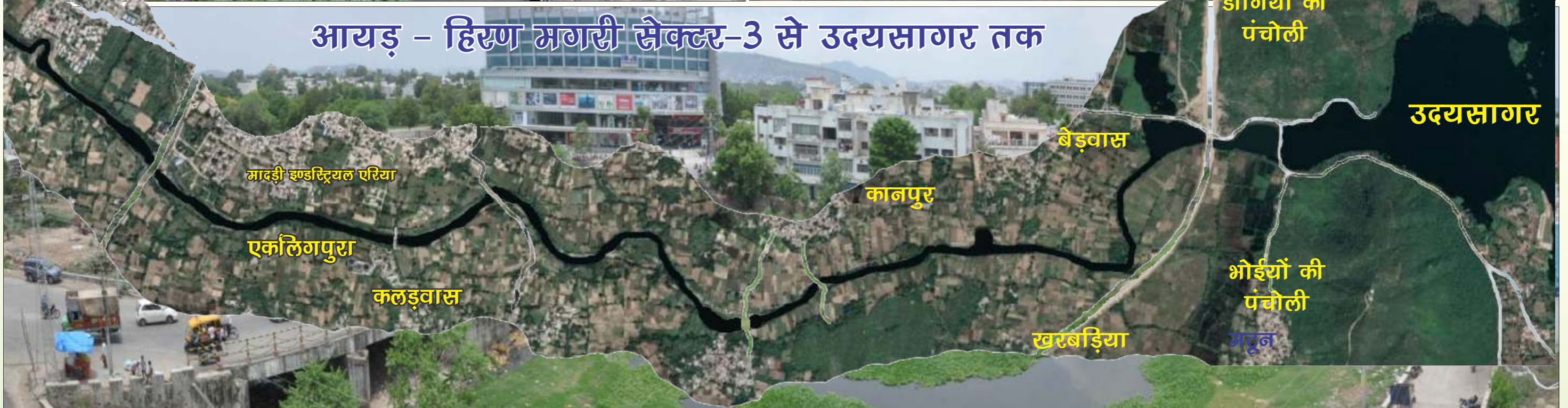
भूपालपुरा पुलिया से सी.पी.एस. स्कूल पुलिया - श्मशान की ओर बहती भव्य आयड़ नदी - अपने संकड़े स्वरूप में



अहोक नगर श्मशान से आयड़ पुलिया की ओर बहती वृहद् आयड़ नदी - सुभाष नगर की ओर - चौड़ा पाट



## आयड़ - हिरण मगरी सेक्टर-3 से उदयसागर तक



**आयड़ नदी का वर्तमान स्वरूप** : उदयपुर के जनमानस के लिए आयड़ नदी एक प्रकार की जीवनरेखा है, किन्तु समय के साथ जनसंख्या की वृद्धि के कारण शहर का विस्तार होता गया और उसको लेकर शहर पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय तंत्रों में अवांछित बदलाव आये, जिससे आयड़ नदी सुन्दर सरिता से एक गन्दे नाले के रूप में परिवर्तित हो गयी। झीलों और प्राकृतिक सौन्दर्य के नजारों से भरपूर इस शहर की आयड़ नदी में बहता गंदा पानी यहाँ की खूबसूरती पर बदनमा दाग है। यहाँ आने वाले पर्यटक ही नहीं, स्थानीय लोग भी इस पीड़ा से व्यथित हैं। इसके मुख्य कारण शहर में जल-मल बिना किसी उपचार और नियंत्रण के नदी में समाहित होने के अतिरिक्त नदी तल और नदी तट पर हो रहे अतिक्रमण भी हैं। इन्हीं कारणों से यह नदी गाद से अटी हुई है। ठोस अपशिष्ट पदार्थ नदी के प्राकृतिक प्रवाह को अवरुद्ध कर रहे हैं। काई, झाड़ियाँ, जंगली बबूल, जलकुम्भी आदि निर्बाध रूप से पनप रहे हैं। गन्दगी और बदबू से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इसी प्रकार आयड़ नदी अनेक समस्याओं से ग्रसित है जिनका विस्तार से विवेचन किया जा रहा है।

**पर्यावरणीय समस्याएँ - बढ़ता मानवीय हस्तक्षेप** : आयड़ नदी के किनारे स्थित गांवों और उदयपुर शहर की आबादी में गत कई वर्षों में बहुत तीव्र गति से वृद्धि हुई है। इसके कारण आवासीय बस्तियों का विस्तार हुआ, जिससे मानवीय हस्तक्षेप में वृद्धि हुई। इन बस्तियों के साथ ठोस कचरा, नींव की मिट्टी, भवन सामग्री अपशिष्ट, निस्तारण का पर्याप्त प्रबन्धन नहीं होने से यह निरन्तर नदी में डाला जाता रहा। नदी तट के किनारे अनेक बस्तियाँ नगर विकास प्रत्यास एवं निजी भवन निर्माताओं ने बिना निरीक्षण रोड के बना दी। इससे आयड़ नदी का पाट सिकुड़ता गया एवं जल बहाव क्षमता में कमी आती गई। जल आवाह क्षेत्र में वनस्पति आच्छादन में भी कमी आयी है। निरन्तर बहाव के अभाव में प्राकृतिक जल शुद्धिकरण करीब-करीब समाप्त हो चुका है।

#### नदी किनारे बसी आवासीय बस्तियाँ - ठोस कचरा एवं गन्दे पानी का समावेश



आयड़ नदी के पेटे में नगर निगम द्वारा पट्टे मिल जाने से मकान बना लिए गये हैं। निगम द्वारा जारी किये गये पट्टे तकनीकी अध्ययन एवं भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखे बिना ही जारी कर दिये गये हैं। नदी के पेटे की ओर आवासीय पट्टे देने पर प्रतिबन्ध है। नदी के सौन्दर्यीकरण की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इन्हें हटाना पडे तो भी हटाकर पट्टाधारियों को सरकार द्वारा दूसरे स्थान पर बनाये गये मकान या भूमि आवंटित की जानी चाहिये।

**अपशिष्ट जल का नदी में प्रवाह** : उदयपुर शहर में जल-मल प्रवाह की समुचित व्यवस्था नहीं रही है। जैसे-जैसे घरों में पेयजल की उपलब्धता बढ़ती गई, सड़कों के दोनों तरफ नालियाँ बनने लगी। गन्दा एवं मलयुक्त पानी नालियों-नालों के माध्यम से अन्ततोगत्वा शहर के सबसे निचले

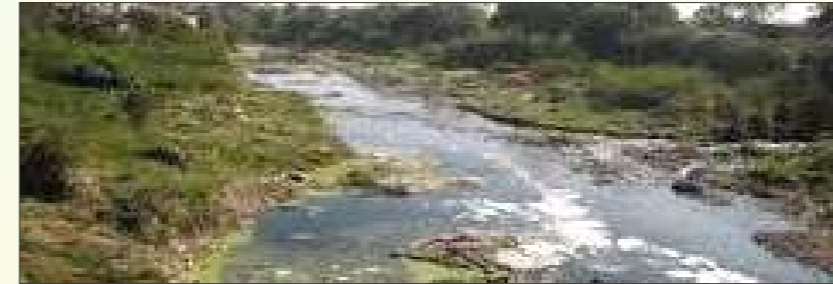


#### विभिन्न जनगणना के अनुसार उदयपुर शहर की जनसंख्या

वर्ष	जनसंख्या	वृद्धि दर
2021	580,000	21.33%
2011	478,000	21.94%
2001	392,000	26.04%
1991	311,000	32.34%
1981	235,000	44.17%
1971	163,000	44.24%
1961	113,000	25.56%
1951	90,000	3.45%
1950	87,000	0.00%

भूभाग पर अवस्थित आयड़ नदी में समावेशित होने लगा। अधिकांश नव विकसित बस्तियों और उप नगरों में घरेलू सेप्टी टैंक बनते गये एवं इन बेतरतीब बने टैंक का दूषित जल अन्ततः आयड़ नदी में पहुँच जाता है।

वर्ष 2021 के एक अनुमान के अनुसार लगभग 50-60 एम.एल.डी. (500-600 लाख लीटर) अनुपचारित जल प्रतिदिन आयड़ नदी को दूषित करता है। छोटे और बड़े उद्योग भी आयड़ को प्रदूषित कर रहे हैं। नदी के किनारे के अनेक उद्योग अपने रसायनों से लदे अनुपचारित या अर्द्ध-उपचारित जल को नदी में डाल देते हैं। ये उद्योग भी लगभग 20 से 30 एमएलडी प्रतिदिन दूषित जल डालकर नदी को प्रदूषित करते हैं। एक और सर्वे के अनुसार शहर के 139 स्थानों पर गन्दे पानी के नाले आयड़ नदी में गिर रहे हैं। इसके अतिरिक्त आयड़ नदी स्वरूप सागर, रंग सागर एवं कुम्हारिया तालाब का प्रदूषित जल जो वर्षा से पहले छोड़ा जाता है, उसे भी समाहित करती है। आयड़ नदी की यह सारी गन्दगी अन्ततोगत्वा उदयसागर में समाहित होती रही है।



वर्तमान में आयड़ नदी में भूमिगत सीवरज लाइने बिछाई जा रही हैं। इससे भविष्य में अपशिष्ट जल नदी में नहीं जायेगा एवं सीधे फिल्टर प्लान्ट तक पहुँचेगा। ऐसा होने पर इस नदी का कायाकल्प संभव हो सकेगा।

#### आयड़ नदी का इतिहास

आयड़ एक ऐतिहासिक नदी है, जिसके किनारे 2000 वर्षों से भी अधिक पुरानी आहाड़ सभ्यता के पुरावशेष विद्यमान हैं। आयड़ नदी के उद्गम स्थल की पहाड़ियों से रिसते शुद्ध जल से यह नदी वर्षभर बहती रहती थी। इससे लगे गांव एवं शहर के लोगों तथा पालतू व जंगली जानवरों का यह मुख्य पेयजल स्रोत रही है। इस क्षेत्र की इसे जीवन रेखा भी कहा जाता है। गांवों एवं शहर के श्मशान घाट भी इस नदी पर अवस्थित होने से दाह-संस्कार पश्चात् सभी मांगलिक कार्य भी इसके जल से पूर्ण किये जाते थे।

सपनों के इस शहर की आबादी बढ़ती गई। कई बस्तियाँ बसायी गयी। शहर एवं इन बस्तियों में जल-मल प्रवाह की समुचित व्यवस्था नहीं होने एवं घरेलू सेप्टी टैंक का दूषित जल अन्ततः आयड़ नदी में पहुँचने लगा। नदी में गन्दगी बढ़ती गई। ठोस अपशिष्ट भी डाले जाने लगे एवं आयड़ नदी के अनेक जख्म उभरने लगे। नदी का आकर्षक स्वरूप बिगड़ने लगा।

समय पर इन जख्मों को भरने के प्रयास गंभीरता से नहीं किये गये। कभी शहर के प्यासे कंठों को तर करने वाला यह जल स्रोत अब गन्दे नाले के रूप में परिवर्तित हो गया। शहर से गुजरते नदी के हिस्से अतिक्रमणों में डूबे हुए हैं। समय-समय पर इन कब्जों को हटाने के लिए कदम तो उठाए गए लेकिन प्रभावी परिणामों का आना दूर की कौड़ी साबित हो रहा है। सत्ता में रहे सभी जनप्रतिनिधि एवं जिम्मेदार अधिकारी नदी की दिशा और दशा सुधारने के लिए वर्षों से दावे करते रहे, लेकिन कटु सत्य यह है कि धरातल पर आयड़ नदी की स्थिति के सुधार के लिए पूर्ण नियोजित ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं।

अनेक लोग गवाह हैं कि पंचवटी, भूपालपुरा, अशोक नगर, सुभाष नगर आदि को बसाते समय नगर विकास प्रत्यास ने नदी की तरफ एक निरीक्षण रोड रखी थी। नदी का पाट बहुत बड़ा था। लेकिन समय के साथ नगर विकास प्रत्यास ने पश्चिमी तट पर आवासीय

**रेत निकासी :** नदी से स्थानीय स्तर पर रेत निकाली जाती रही है। इससे इसकी प्रतिवर्ष जलधारण क्षमता लगातार घटती जा रही है। रेत के अभाव में वर्षा जल तीव्र गति से बहकर कुछ समय के लिए तो बाढ़ के हालात बना देता है किन्तु भूमि के जल स्तर को बढ़ाने में पर्याप्त योगदान नहीं कर पाता है। नदी की उत्तम पर्यावरणीय परिस्थिति के लिए रेत आवश्यक अंग है एवं इसकी पर्याप्त उपस्थिति में अवांछित खरपतवार भी नहीं पनपती हैं।

**ठोस अपशिष्ट प्रवाह :** शहर में ठोस अपशिष्ट को नालों और नालियों में पृथक करने की कोई सुचारु व्यवस्था नहीं है। यह आयड़ नदी में समाहित होते हैं। दैनिक उपयोग में प्रयुक्त प्लास्टिक अपशिष्ट प्राकृतिक प्रवाह में व्यवधान डालते हैं और सीवरेज, नालों और नालियों का जल प्रायः सड़कों पर फैलता रहता है। ध्वस्त किये गये भवनों व उद्योगों की अनुपयोगी सामग्री भी कभी-कभी आयड़ नदी में डालते हुए देखा गया है। इन सभी से आयड़ की जल बहाव क्षमता में कमी आती गयी। वर्ष 1973 एवं 2006 में इस नदी में भी बाढ़ की स्थिति देखी गयी एवं नदी के किनारे बसी बस्तियों में भी बाढ़ का पानी एवं कीचड़ भर गया था।



बेदला पुलिया के पास ठोस अपशिष्ट

**साईफन चौराहे के पास विरासत में मिली फतहसागर नहर के मेहराब के नीचे भवन एवं औद्योगिक अपशिष्ट**



**भू-जल प्रदूषण :** अनेक उद्योग, होटल और संस्थान प्रदूषण की रोकथाम के नाम पर छोटे-मोटे टैंक बना देते हैं किन्तु अपशिष्ट जल के उपचार की कोई व्यवस्था प्रायः नहीं होती है, जिसके परिणामस्वरूप भू-जल का जैविक, जैव-रासायनिक और रासायनिक प्रदूषण एक ज्वलन्त समस्या है जिससे शहर के अनेक हैण्डपम्पों के जल को पीने के अयोग्य जल स्रोत के रूप चिह्नित और घोषित किया जा चुका है। इसके साथ ही यह प्रदूषित जल भूमिगत बहाव से आयड़ नदी में समाहित एवं एकत्रित होता है।



आयड़ नदी के दोनों छोर पर निर्मित आवासीय बस्ती

**सामाजिक समस्याएँ - नदी तट अतिक्रमण :** आयड़ नदी वर्षाकाल को छोड़कर वर्ष के अधिकतर महीनों में सूखी रहती है। इसके किनारों को बाँधा नहीं जा सका, निगरानी सड़क बनाने का शहर नियोजकों ने कभी सोचा ही नहीं। अतिक्रमण लगातार जारी है जिससे यह नदी अपने अस्तित्व को खोने के कगार पर है। नदी के थूर से कानपुर खेड़ा तक 26

किमी लम्बे आयड़ नदी के पेटे के 200-200 मीटर के दायरे में राजस्व विभाग की खाली पड़ी सरकारी एवं व्यक्तिगत जमीनों, अवांछनीय कब्जों की इंजीनियरिंग एवं राजस्व सर्वे के आधार पर 172 स्थानों पर कब्जे चिह्नित किये गये। नदी के पेटे और उससे सटकर (किनारों) पर हुए कब्जों का सर्वे थूर से शुरू किया गया था जो लोयरा, चिकलवास, डांगियों का गुड़ा, लखावली, बेदला, सबलपुरा, बड़गांव, देवाली, भुवाणा, पुलां, उदयपुर, शोभागपुरा, आयड़, पायड़ा, मनवाखेड़ा, मादड़ी पुरोहितान, एकलिंगपुरा, कलड़वास और कानपुर खेड़ा गांवों तक हुआ है। कब्जों का कुल क्षेत्रफल तालिका में दर्शाया गया है। पेटे में अस्थायी रूप से पत्थरों की चारदीवारियां, ईमारतें, खेती की कोट, सुलभ कॉम्प्लेक्स, चिकित्सालय, कुएँ, आवास के लिए छोटे-मोटे कमरे, झोपड़ियाँ, देवरे, मन्दिर, सड़कें, श्मशान, विद्युत पोल, हैण्डपम्प, रेलवे क्वार्टर, कलवर्ट आदि बना लिए गए हैं, उनकी स्थितियाँ निकाली गई जिसमें 1000 हेक्टेयर क्षेत्रफल शामिल है। लोगों के अवैध निर्माणों के अलावा सरकारी विभागों की परिसम्पत्तियों के भी निर्माण आड़े आ रहे हैं। बड़गांव, देवाली, पुलां, उदयपुर, पायड़ा में कई पक्की ईमारतें पेटे में आ रही हैं। राजस्व सर्वे में 21 स्थानों पर पक्की ईमारतों के कब्जे आ रहे हैं। आयड़ नदी के हित में इस अभियान को और तीव्रता दे तो प्रशंसनीय होगा। इंजीनियरिंग सर्वे के अनुसार थूर से लेकर सूखा नाका तक आयड़ पेटे में 50 से 100 मीटर दायरे में दोनों ओर पेटे की जद दर्शाते हुए

विभिन्न गाँवों में अनधिकृत कब्जों का विवरण	
गाँव	क्षेत्रफल (हेक्टेयर)
बेदला खुर्द	12.95
बेदला	11.75
सबलपुरा	3.09
बड़गांव	0.48
देवाली	9.10
पुलां	7.185
शोभागपुरा	0.82
उदयपुर शहर	2.495
आयड़ गाँव	26.505
(सौजन्य : राजस्थान पत्रिका 21.05.2013)	

लगभग 5 हजार मुटाम लगाने की जरूरत है। दोनों तरफ मुटाम लगाने और उनके निर्देशांक निकालकर अंकित करने के बाद सीमांकन का मोटा काम पूरा हो सकेगा। आयड़ नदी में हर वर्ष बढ़ते जा रहे कब्जों और उसके किनारों पर अवैध निर्माणों के लिए राजस्व विभाग, नगर विकास प्रन्यास, नगर निगम, सिंचाई विभाग और जिला प्रशासन सीधे तौर पर जिम्मेदार है। नदी का पेटा राजस्व के नाम रिकॉर्ड में दर्ज है तो सिंचाई विभाग तकनीकी तौर पर जिम्मेदार है जबकि नदी किनारे कृषि भूमियों पर निर्माण, कब्जों के लिए नगर विकास प्रन्यास व घनी आबादी इलाकों में पक्के निर्माणों के लिए नगर निगम को कार्रवाई करने की जरूरत है। प्रदूषण नियंत्रण मण्डल भी जिम्मेदार है कि उसने नदी में हो रहे प्रदूषण को रोकने के लिए सघन प्रयास नहीं किये।

**नदी पेटे में खेती :** नदी के अल्प प्रवाह काल में गन्दे पानी और ठोस कचरे को नदी में डालने से नदी मात्र एक गन्दे नाले में परिवर्तित हो जाती है एवं भू-जल बहुत अधिक प्रदूषित हो चुका होता है। इसके पेटे में फूल, सब्जियाँ, फसलें आदि बोई जाती हैं, जिससे इसकी गुणवत्ता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है एवं इन सब्जियों के सेवन से अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैलती हैं। साथ ही एकत्रित गन्दे जल से शहर के आवासीय हिस्से के क्षेत्रवासियों का स्वास्थ्य भी दांव पर लगा हुआ है।

**अतिक्रमण क्षेत्र पर निर्माण :** आयड़ नदी किनारे निवासित भूखण्डधारी एवं प्रभावशाली व्यक्ति नदी क्षेत्र पर अतिक्रमण कर, नगर विकास प्रन्यास, नगर निगम से बिना स्वीकृति भवन निर्माण कर अपना स्वामित्व जताते हुए निर्माण सामग्री व नींव की खुदाई से निकली हुई मिट्टी को नदी के पेटे में डालकर उसे संकीर्ण करते हैं तथा बहाव की दिशा परिवर्तन की भी चेष्टा करते रहते हैं क्योंकि नदी के प्राकृतिक प्रवाह के पेटे का न तो कोई वैधानिक रिकॉर्ड उपलब्ध है, न हद दर्शाते हुए स्थायी मुटाम लगे हुए हैं, न ही नदी के किनारे होने वाले निर्माणों की उचित दूरी के प्रभावकारी दिशा-निर्देश हैं। कुछ क्षेत्र में नदी की सुरक्षा दीवार के पास बहुमंजिला ईमारतों की सीमाएँ आ रही हैं जो नदी के पेटे की चौड़ाई को घटा रहे हैं। भारी वर्षाकाल और बाढ़ के समय जरूरी है कि नदी का बहाव क्षेत्र बिना अवरोध के आसान बना रहे।



आयड़ : भूपालपुरा पुलिया के बाद सीपीएस पुलिया तक



आयड़ पेटे में निर्मित भवन

भूखण्ड काटकर आवंटित या नीलाम कर दिये। जहाँ सड़क नहीं बनाई गई, वहाँ अतिक्रमण हुए। इन सब कार्यों में कितना दोष है? इनके कारण उदयपुर को विरासत में मिली स्वच्छ, निर्मल, बारहमासी बहने वाली आयड़ नदी आज एक गन्दे नाले में परिवर्तित हो गई है। नगर विकास प्रन्यास, सिंचाई विभाग, नगर निगम, राजस्व विभाग के सहयोग से 1947 के राजस्व ग्रामवार नक्शों के आधार पर आयड़ नदी का सीमांकन कर मुटाम लगवाकर अतिक्रमण, अलोटमेन्ट, राजस्व आय प्राप्त के साधनों को चिह्नित कर इसके पाट को सिकुड़ते-सिकुड़ते बड़े नाले में क्यों परिवर्तित किया गया एवं निरीक्षण रोड क्यों नहीं छोड़ी गई? यह एक अध्ययन का विषय है।

उदयपुर शहर के प्रत्येक झील प्रेमी नागरिक का ख्वाब है कि आयड़ नदी में वर्षपर्यन्त शुद्ध पानी मुहैया हो ताकि इससे इसकी तस्वीर बदलकर नदी की खूबसूरती बढ़ने पर इसके किनारों को पर्यटन केन्द्र की तरह विकसित किया जा सके। इससे लोगों को रोजगार ही नहीं मिलेगा बल्कि अन्य फायदे भी होंगे। आयड़ में बहते सीवरेज के शुद्धीकरण से भूजल स्तर में वृद्धि के साथ शहर की खूबसूरती भी बढ़ेगी। इसके अतिरिक्त आयड़ की सारी गंदगी जो वर्तमान में उदयसागर में समाहित हो रही है, इससे यह झील दूषित होने से बच जायेगी। यदि आयड़ स्वच्छ होगी तो इसका निर्मल जल उदयसागर में आएगा और यही पानी पेयजल किल्लत के समय वरदान साबित होगा। नए उदयपुर को इससे पानी पिलाया जा सकता है। आयड़ से पेयजल स्रोत ही नहीं पूरा वाटर रिचार्ज सिस्टम, हमारी कृषि-बागवानी और पर्यटन भी विकसित हो सकता है। "जरा ऊँचाई से आयड़ को देखो, कितनी खूबसूरत नजर आती है, उसी ऊँचाई से इसके लिए सपने बुनो। ऐसे बुनो जिन्हें आप और हम मिलकर साकार भी कर सकें।"

अतः उदयपुर में भी अहमदाबाद शहर से होकर गुजरती साबरमती नदी एवं जयपुर का अमानीशाह नाला के विकास की तर्ज पर आयड़ को विकसित करने की एक नई सोच लानी चाहिए।

इसके अतिरिक्त पिछले कुछ वर्षों में नाली निर्माण सामग्री, सीवज लाइन बिछाने, फूड कोर्ट आदि काम के चलते स्वरूपसागर, गुमानियावाला नाला एवं आयड़ नदी में मलबे की मात्रा कई गुना बढ़ गई है। कार्य पूर्ण होते ही मलबा हटा दिया जाना चाहिये। प्रतिवर्ष हजारों क्यूबिक मीटर मलबा नदी के तेज बहाव से उदयसागर में समाहित हो रहा है एवं उदयसागर झील की जल भराव क्षमता को कम कर रहा है।

**औद्योगिक क्षेत्रों से गन्दगी :** कई फैक्ट्रियां आयड़ में प्रतिबंधित केमिकल, मार्बल स्लरी, एसिड, गन्दगी आदि बहाकर प्रदूषण फैला रही हैं। ऐसा ज्ञात हुआ है कि घातक प्रदूषण फैलाने की दोषी पाई जाने के बावजूद इन पर प्रदूषण नियंत्रण मण्डल और अन्य सहायक एजेन्सियाँ कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर पा रही हैं। प्रशासनिक रिपोर्ट के अनुसार कई केमिकल बनाने वाली फैक्ट्रियों को मादड़ी इण्डस्ट्रियल एरिया से बंद करवाना चाहिये अथवा फैक्ट्रियों में ही इसके निस्तारण करने के सघन प्रयास किये जाने चाहिये। इसके अतिरिक्त वाहनों की धुलाई का गन्दा पानी, तो कहीं कार बाजार एवं कार गैराज का मैला पानी आयड़ में समाहित हो रहा है।

प्रतापनगर स्थित अजमेर विद्युत वितरण निगम लि. के कार्यालय से निकल रहा प्राकृतिक नाला बेड़वास होते हुए धांगणा कानपुर में रिलायंस केमोटिक के पीछे होते हुए सीधा आयड़ की मुख्य नदी में मिलता है। इस नाले में बेड़वास एवं मादड़ी इण्डस्ट्रियल एरिया की केमिकल बनाने वाली फैक्ट्रियों का केमिकलयुक्त पानी बहकर नदी में आता है। पहले ही शहर की गन्दगी को समाहित करने वाली आयड़ शहर मुख्यालय से 8 से 12 कि.मी. दूर और विषैली हो जाती है। इस विषैलेपन के कारण नदी के दोनों किनारों पर 4 पंचायतों के 14 गाँवों में बने कुओं व नलकूपों का पानी भी विषैला हो गया है। किसानों की उपजाऊ जमीनें लगातार रसायनयुक्त प्रदूषित पानी से सिंचित होने से खराब हो रही है। विशेषज्ञों के अनुमान एवं विचारों के आधार पर :-

- सर्वाधिक प्रभावित बेड़वास, कानपुर, भोईयों की पंचोली व मटून जहाँ 50 से ज्यादा कुएँ, बावड़ी, नलकूप विषैले जल से प्रभावित हैं।
- आंशिक प्रभावित कलड़वास, एकलिंगपुरा, कानपुरा खेड़ा, मनवाखेड़ा, खरबड़ियाँ, कमलोद, कमलोद डूंगर, टीला खेड़ा, डांगियों की पंचोली, धूपीमाता आदि।



सेवाश्रम रेलवे पुलिया के बाद से औद्योगिक अपशिष्ट युक्त पानी का प्रवाह

- इससे करीब 10-15 हजार बीघा कृषि भूमि के साथ करीब 7000 किसान परिवार दूषित व विषैले पानी से प्रभावित है।
- विषैले पानी में हेवी मेटल्स टी.डी.एस. फ्लोराइड होने के कारण कैंसर, पथरी, चर्मरोग, टी.बी. जैसी बीमारियाँ पाँव पसार रही हैं।
- कुछ फैक्ट्रियाँ अपने केमिकल युक्त अपशिष्ट गहरे कुएँ व नलकूप में डालती हैं जो रिसकर नदी या भूतल के जल को विषैला बना रहे हैं।
- इस क्षेत्र की मृदा में भी जैविक कार्बन, उपलब्ध फास्फोरस, पोटेश, सल्फर सहित कई तत्व तय मानकों के अनुरूप नहीं पाये गये।
- केमिकल युक्त व प्रदूषित पानी से सिंचित फसलें एवं सब्जियों की कम पैदावार के साथ मानव स्वास्थ्य के लिए भी ये हानिकारक है।
- मादड़ी इण्डस्ट्रियल एरिया में केमिकल फैक्ट्रियों में जल शुद्धीकरण यंत्र एवं अपशिष्ट सूखाने के लिए सोलर ऊर्जा का उपयोग नहीं किया जा रहा है।

**आयड़ पेटे में कच्ची बस्ती एवं व्यापारिक गतिविधियाँ :** शहर के पुलां, अलीपुरा, आलू फैक्ट्री, सेवाश्रम एवं अन्य स्थानों पर नदी के पेटे एवं किनारों के पास खाली जमीन पर कच्ची बस्तियाँ एवं व्यापारिक गतिविधियाँ लगातार बढ़ती जा रही हैं। इस प्रकार बसी बस्तियाँ वहाँ रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है तथा वर्षाकाल में आई अचानक बाढ़ की स्थिति में जनहानि की भी आशंका बनी रहती है।

**जैविक विविधता एवं जैविक प्रदूषण :** उदयपुर शहर की इस प्रमुख नदी और इसकी सहायक नदियों के आवाह क्षेत्रों के नदी तटों पर होने वाले अवांछित मानवीय हस्तक्षेप से यहाँ की जल जैविक विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कुछ स्थानीय प्रजातियाँ तो लुप्त हो चुकी हैं और कुछ प्रजातियाँ लुप्त होने की कगार पर पहुँच चुकी हैं। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है जिसके कारण कहीं नदियों के तटों पर कटाव हो रहा है तो कहीं पर इनके पैदे पर गाद एकत्र हो रही है, जिससे जल प्रवाह में बाधा पहुँचती है और कृत्रिम रूप से बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होती है। नदी पथ और उससे सटे हुए भू-भागों में अनेक प्रकार की झाड़ियाँ और विलायती बबूल पनप रहे हैं जो अनेक प्रकार के घातक रोग वाहक वेक्टरों के प्रजनन और फैलाव के लिए आश्रय स्थल बने हुए हैं। वर्षा ऋतु और अक्टूबर माह तक इस प्रकार की बीमारियों के इन क्षेत्रों में बढ़ने के संकेत मिलते रहे हैं।

केचमेन्ट पर पड़ रहे विभिन्न पारिस्थितिकी दबावों से वातावरण में जैव-विविधता का प्रतिशत भी नदी के आसपास के क्षेत्रों में घट रहा है। इससे कई प्रकार की वानस्पतिक गन्दगी को भी विकसित होने का मौका मिल रहा है। आयड़ नदी के केचमेन्ट, वन क्षेत्र में बढ़ते मानवीय दखल से हरियाली घट रही है जो सतही जल के लिए महत्वपूर्ण है। इस वजह से भू-क्षरण बढ़ रहा है। इससे नदी और उदयसागर झील में मिट्टी का अधिक जमाव हो रहा है।

**आयड़ के आवाह क्षेत्र का अवक्रमण :** आवाह क्षेत्र के निरन्तर अवक्रमण से इस क्षेत्र की अनेक वनस्पति और जीव प्रजातियों के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। कुछ प्रजातियाँ तो लुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी हैं। भूमि के कटाव के कारण झीलों के तल में गाद एकत्रित होती जा रही है। इस प्रकार आवाह क्षेत्र के लगातार अवक्रमण से इस भू-भाग के संपूर्ण क्षेत्र की पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिति बिगड़ती जा रही है। पूरे क्षेत्र में वानस्पतिक आच्छादन बहुत कम हो गया है। इस क्षेत्र के वनों का क्षेत्रफल मात्र 10 प्रतिशत रह गया है जिससे वनवासियों की भोजन और ईंधन की समस्या गंभीर हो गयी है। पशुओं के लिए चारे का भी अभाव खटकने लगा है। वनस्पति एवं पेड़ों रहित नंगी पहाड़ियों से जल प्रवाह तीव्र हो जाने से घाटियों और निम्न भू-भागों की कृषि भूमि में अपमर्दन हो रहा है। आवाह क्षेत्र का भूजल स्तर तीव्रता से गहरा होता जा रहा है। उदयपुर जिले के बड़गाँव और गिर्वा ब्लॉक का भूजल तो अति दोहन की भेंट चढ़ चुका है और गोगुन्दा ब्लॉक की जल उपलब्धता की स्थिति और भी नाजुक बनी हुई है।

**आयड़ जलग्रहण क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण एवं वनस्पति कटाई, भूमि कटाव आदि के कारण वर्षा के तुरन्त बाद नदी में सघन गादयुक्त पानी बहता है, जो झीलों, आयड़ एवं अन्तत्वोगत्वा उदयसागर में समाहित होता है। इससे इन सभी की जलग्रहण क्षमता प्रभावित होती है।**



मदार-शूर मार्ग रपट



शूर का तालाब



बेदला बाँधा

**जल ग्रहण क्षेत्र में निर्माण एवं आवास :** आयड़ नदी के ऊपरी आवाह क्षेत्र में स्थित छोटा मदार, बड़ा मदार और बड़ी तालाब झीलों में अब तक तो कोई खास मानवीय हस्तक्षेपजनित प्रदूषण नहीं हुआ है किन्तु विगत कुछ ही वर्षों में जलग्रहण क्षेत्रों में राष्ट्रीय सड़क मार्ग के निर्माण से भूजल एवं वर्षाजल आवक पर प्रतिकूल प्रभाव दिखाई देने लगा है। उदयपुर की झीलों समेत कई क्षेत्रों में प्रदूषण के संकेत मिलने लगे हैं और अपमर्दन से अपूरणीय क्षति की प्रबल आशंका है। लघु झीलें तो तीव्रता से प्रदूषण और अतिक्रमणों की शिकार होती जा रही हैं। आयड़ नदी के बेसिन के मध्य में उदयपुर नगर में स्थित झीलें भी प्रदूषण का प्रमुख कारण बनी हुई हैं। झीलों के तटों पर अनेक होटलें बनी हुई हैं, जिनमें लगभग हजारों पर्यटकों के साथ झील के इर्द-गिर्द बसी आबादी भी अपनी ठोस, द्रव, जल-मल आदि से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से झीलों को निरन्तर प्रदूषित करती रहती है। शहर के कचरे और भराव के अतिरिक्त छोटे-बड़े मृत पशु भी झीलों के पास डाले जाते हैं जो अन्ततः झीलों में पहुँचते हैं।



गुमानियावाला नाला

**आयड़ नदी में प्रदूषण जाँच :** आयड़ नदी में प्रवाहित हो रहे विभिन्न रसायनों एवं फार्मास्यूटिकल अपशिष्ट की जाँच नियमित रूप से राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल द्वारा होनी चाहिये। विशेषज्ञों का कहना है कि जाँच से निकले निष्कर्षों से साबुन, डिटरजेंट्स, कॉस्मेटिक्स, गर्भनिरोधक एवं हार्मोनल दवाइयों सहित विभिन्न फार्मा वेस्ट एवं घरों में उपयोग लिए जा रहे विभिन्न जीवाणुरोधी रसायनों के प्रभाव से आयड़ नदी के पर्यावरण में हो रहे परिवर्तन एवं उदयपुर के नागरिकों के स्वास्थ्य पर हो रहे दुष्प्रभावों को आंका जा सकता है। जीवाणुरोधी रसायनों एवं दवाइयों इत्यादि से किसी भी जलीय पर्यावरण तंत्र में भारी दुष्प्रभाव होते हैं। आयड़ नदी बहाव क्षेत्र में होने वाली इस जाँच से कई नये आयाम प्रतिपादित होंगे। इस विशिष्ट जाँच के लिए राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल उदयपुर द्वारा पी.आई. इण्डस्ट्रीज, वॉलकेम इण्डिया, हिन्दुस्तान जिंक, सीटीईई, राजस्थान

#### आयड़ नदी में अपशिष्ट नमूने लेने के लिए उचित स्थल

- थूर की पाल जहाँ पर दोनों मदार तालाब एवं झाम्बुडिया नाले का मिलन होता है।
- चिकलवास एनिकट, जहाँ से मदार नहर शुरू होती है और आयड़ का शहर में प्रवेश स्थल माना गया है।
- बेदला पुलिया के नीचे जहाँ से हल्की आबादी शुरू हो जाती है।
- पुलां की पुरानी पुलिया के नीचे जहाँ आबादी बढ़ना शुरू हो गई है।
- आलू फैक्ट्री के पास, जहाँ गुमानियावाला नाला मिलता है तथा शहर का सीवरेज भी गिरना शुरू हो जाता है।
- आयड़ श्मशान और पाठों की मगरी के पीछे वाले आयड़ नदी के क्षेत्र में जहाँ पूरे शहर का सीवरेज बहता हुआ मिलता है।
- एफसीआई – के सामने नई 100 फीट रोड की पुलिया के नीचे जहाँ औद्योगिक अपशिष्ट के भी शामिल होने की आशंका शुरू हो जाती है।
- कलड़वास पुलिया के नीचे जहाँ सीवरेज और औद्योगिक अपशिष्ट दोनों का प्रदूषित जल माना जाता है।
- भोईयों की पंचोली
- सूखा नाका जहाँ नदी उदयसागर में प्रवेश करती है। इससे सटकर ही ग्रीन ब्रिज भी बनाया गया था।

#### आयड़ के पानी में खतरनाक रसायन एवं हॉर्मोन

एजीथोमाइसिन, बेन्जोड्राइअजो, साइकलटामाइड, कैफिन, कार्बोमेजेमाइन, क्लेरीथोमाइसिन, साइक्लोफस्फामाइड, हाइक्लोफेनाक, डीटपडेसीप्रामाइन, डील्टियाजेम, ग्लिबेक्लामाइड, हाइफिनाड्रामाइन, पुरोसेमाइड, हाइड्रोक्लोरोथियाजाइड, इबुप्रोफेन, कटोप्रोफेन, मेलोक्सिकेम, मेथोट्रेक्सेट, मथाइलबेन्जोड्राइअजोल, नेप्रोफेन, पिंडोलोल, प्रोपेनोलोल, सेरटालीन, सोट्रेलोल, सल्फामेथाजोक्सोल, ट्रामाडोल, ट्राइमथोप्रिम, वेनलाफेक्सिनवेरापामिल, इनड्रास्टेरोन, डाइहाइड्रोटेस्टोरेसटोरोन, एस्ट्रोन, एस्ट्राडिओल, टेस्टोरेसटोरोन, बिस्फिनोल, ट्राइक्लोसेन जैसे रसायन।

कृषि महाविद्यालयों की अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं की सहायता ली जा सकती है। नियमित जाँच से प्रदूषण स्तर का पता चलेगा और सुधार के लिए बेहतर कार्ययोजना बनाने के प्रयास किये जा सकेंगे। इन जाँचों का विवरण दैनिक समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो ताकि शहरवासी प्रदूषण स्तर को जान सकें एवं प्रदूषण कम करने में अपना सहयोग कर सकें।

दो वर्ष पूर्व ऑस्ट्रेलिया के कॉमनवेल्थ साइंटिफिक एवं इंडस्ट्रीयल ऑर्गेनाइजेशन (सी.एस.आई.आर.ओ.) वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी, उदयपुर के विद्या भवन पॉलीटेक्निक और वॉलकेम पर्यावरण लेब द्वारा किये गये शोध के आधार पर आयड़ नदी अब जहरीली हो चुकी है। इसके पानी का सुखद अहसास अब बड़े रोगों के जन्म का संकेत दे रहा है। इसके पानी में जहरीले रसायन का खुलासा हुआ है। इस शोध के आधार पर उदयपुर के पानी में विकसित देशों की झीलों की तरह ही प्रदूषक तत्व हैं। इसमें एंटीबायोटिक अवसादरोधी, गर्भ-निरोधक एवं अन्य विभिन्न रोगों की

दवाइयों सहित कॉस्मेटिक व साबुन, शैम्पू, कीट व मच्छरों को मारने वाले तत्व एवं औद्योगिक रसायन हैं, जो पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से खतरनाक हैं। इनसे कैंसर, थॉयराइड, नपुंसकता, बांझपन जैसी बीमारियों का डर बढ़ गया है। शोध प्रतिवेदन के अनुसार विकसित देशों में हुए स्वास्थ्य क्षेत्र विकास, औद्योगिकीकरण व रसायनों पर आधारित जीवन शैली के कारण वहाँ उत्सर्जित होने वाले गंदे पानी में जिस प्रकार के विषैले प्रदूषक तत्व हैं, वैसी ही सान्द्रता भारत में उदयपुर जैसे कई शहरों के गंदे पानी में भी मिली है।

इस शोध के लिए चिकलवास, बेदला पुलिया, पुलां, आलू फैक्ट्री, गुमानियावाला, आयड़ श्मशान महासतिया के सामने, कलड़वास, भोईयों की पंचोली, सूखानाका तथा उदयसागर से पानी के नमूने लेकर उनकी जाँच की गई। इस शोध के निष्कर्ष के अनुसार आयड़ नदी में विभिन्न फार्मेस्यूटिकल दवाइयों के सक्रिय तत्वों की उच्च सान्द्रता पाई गई। ये प्रदूषक तत्व इस क्षेत्र के भूजल को भी प्रदूषित कर रहे हैं। आयड़ नदी के किनारों पर स्थित कई कृषक इस नदी के गंदे पानी से सब्जियाँ उगा रहे हैं। ऐसी सब्जियों को खाने से भी प्रदूषक तत्व हमारे शरीर के भीतर जा रहे हैं, जिससे विभिन्न गंभीर बीमारियों का प्रकोप बढ़ गया है।

राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल या उदयपुर की किसी अन्य सक्षम संस्था को नगर निगम व नगर विकास प्रन्यास द्वारा समय-समय पर उन्हें आर्थिक सहयोग देकर उनकी वर्तमान प्रयोगशालाओं को आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित करना चाहिये। इस तरह आयड़ एवं झीलों के तरल एवं ठोस अपशिष्ट के रसायन व फार्मेस्यूटिकल दुर्लभ तत्वों की नियमित जांच कर प्रदूषण के कारणों पर प्रभावशाली नियंत्रण कर सकेगा।

**आयड़ नदी की सफाई व्यवस्था :** थूर से सूखानाका तक 26 कि.मी. की लम्बाई वाले इस क्षेत्र को अनेक भागों में बाँटकर झाड़ियाँ, गाद, निर्माण सामग्री, प्लास्टिक अवशेष आदि को नियमित हटाकर सफाई की जावे। आयड़ नदी की सफाई व्यवस्था का संपूर्ण भार नगर निगम को वहन करना चाहिये। नदी के दोनों किनारों पर पूरे क्षेत्र में सीवरेज लाइन जब तक नहीं बने, तब तक नदी में गिरने वाले सैकड़ों नालों व नालियों के एकत्रित गन्दे पानी को नदी के मध्य गहरा नाला बनाकर नदी का बहाव बढ़ाया जाये एवं एसटीपी के माध्यम से इसका शुद्धीकरण कर इसे पुनः आयड़ नदी में डायवर्ट किया जाये। नदी के मध्य गहरा नाला बनाने से नदी के पाट के दोनों तरफ का क्षेत्र गाद, झाड़ियों एवं अवांछित वनस्पतियों से मुक्त रहेगा एवं नदी की सफाई व्यवस्था सुचारु रूप से की जा सकेगी।

शहर की आयड़ नदी को कई वर्षों से साफ करने के प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन आयड़ नदी बार-बार गन्दे नाले का रूप ले लेती है। जब तक नदी में पानी बहता है तब तक यह साफ दिखती है। नगर निगम ने आयड़ में गंदगी डालने से रोकने के लिए सूचना पट्ट लगाकर उन पर जुर्माना राशि भी अंकित करा रखी है और सभी पुल पर जालियाँ भी लगवा दी गई है। इसके बावजूद लोग वहाँ कचरा



डालने से नहीं चूक रहे हैं। इसके अतिरिक्त नदी में कुछ स्थानों से गन्दे नाले भी गिर रहे हैं।

स्वच्छ भारत अभियान की तीसरी वर्षगाँठ पर शहर के बीच में बहने वाली आयड़ नदी को आठ भागों में बाँटकर विभिन्न संस्थाओं को जिम्मेदारी देकर 2 अक्टूबर, 2017 से अहिंसापुरी श्मशान से होकर रेलवे ब्रिज तक साफ करने का अभियान शुरू किया गया। इस सफाई अभियान के अन्तर्गत आयड़ नदी से झाड़ियों की गन्दगी हटायी गयी। इसके अतिरिक्त एक कच्ची ट्रेंच बनाकर पूरे क्षेत्र से सीवरेज सहित संपूर्ण पानी को एक दिशा दी गई, जिससे पानी एक निश्चित क्षेत्र और गहराई पर बहे और आसपास के पूरे क्षेत्र को साफ रखने का प्रयास किया गया। आर.यू.आई.डी.पी. एक निश्चित क्षेत्र में आयड़ के दोनों किनारों पर सीवरेज ट्रंक लाइन बिछा रही है। सफाई होने के बाद गंदे पानी को ट्रंक लाइन में और साफ पानी बीच की



ट्रेंच में बहाया जाएगा। ट्रेंच की गहराई एवं चौड़ाई पानी की मात्रा पर निर्भर होगी। पानी ट्रेंच से निकलकर बाहर नहीं आये इसके लिए ट्रेंच की लम्बे समय तक मॉनिटरिंग करने के बाद ही आयड़ नदी के बीच में पक्की नहर बनाई जायेगी। नदी के इस सफाई अभियान के माध्यम से इसके मूल स्वरूप को सामने लाया गया। इससे इसके सौन्दर्यीकरण परियोजना को तकनीकी रूप में नियोजित करने में सहयोग मिलेगा। सफाई उपरान्त घरों व बिल्डिंगों से गन्दे पानी के नाले आयड़ में गिरने के अशोभनीय दृश्य भी देखे गये। इस अभियान में विभिन्न औद्योगिक घरानों ने जो जिम्मेदारी वहन की, वह अत्यन्त प्रशंसनीय रही। क्या उदयपुर के समस्त औद्योगिक घराने सी.एस.आर. फण्ड के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग कर सौन्दर्यीकरण कार्य के अगले चरण के सहभागी बनेंगे, यह उदयपुर की जनता का विनम्र आग्रह रहेगा।

**सूचना :** कोई भी व्यक्ति आयड़ नदी में किसी प्रकार का कचरा, फूल-मालाएँ, पूजन सामग्री डालते अथवा शौच द्वारा प्रदूषित करते हुए पाया जायेगा तो उस पर राशि रु. 2000/- तक का जुर्माना/दण्ड का प्रावधान है। अतः समस्त नागरिक बन्धुओं से निवेदन है कि नदी को प्रदूषित करते हुए व्यक्ति का फोटो खींचकर व्हाट्सअप नम्बर 9610848443 पर अपलोड करें अथवा ई-मेल आई.डी. cleanayad@gmail.com पर ई-मेल कर सकते हैं। फोटो भेजने वाले की पहचान गोपनीय रखी जायेगी।

क्र.सं.	आयड़ क्षेत्र/संस्थाएँ
1.	अहिंसापुरी भम गान से पुराना पुलां का 500 मीटर का क्षेत्र – आर.के. मार्बल
2.	पुराना पुलां पुल से करजाली हाउस का 400 मीटर का क्षेत्र – मिराज ग्रुप
3.	करजाली हाउस से कृष्णपुरा जंक्शन का 500 मीटर क्षेत्र – सिक्योर मीटर
4.	कृष्णपुरा जंक्शन से गुमानिया वाला नाला 150 मीटर का क्षेत्र – आर.एस.एम.एम.एल.
5.	कृष्णपुरा से भूपालपुरा पुल तक का 880 मीटर का क्षेत्र – यूसीसीआई एवं उदयपुर सीमेन्ट
6.	भूपालपुरा पुल से सी.पी.एस. पुल का 300 मीटर का क्षेत्र – माइनिंग एसोसिएशन
7.	सी.पी.एस. पुल से आयड़ पुल तक 900 मीटर का क्षेत्र – हिन्दुस्तान जिंक
8.	आयड़ पुलिया से टोकर स्थित सेवाश्रम रेलवे पुल तक 1600 मीटर का क्षेत्र एनएआई के माध्यम से टाटा व अन्य संबंधित कम्पनियों के सहयोग द्वारा



नदी में बने सभी पुलों से कुछ लोग अज्ञानतावश पूजन-सामग्री आदि को पानी में डालने की परम्परागत प्रवृत्ति को छोड़ नहीं पाने से नदी के पेटे में गन्दगी डालकर चले जाते हैं। लोग नगर निगम के द्वारा लगे हुए सूचना पट्ट पर लिखे निर्देशों की अवहेलना करते हैं। ऐसे लोगों को बदलना होगा, समझाइश अथवा दण्डात्मक तरीके से। पुल से पानी भी दिखे और गन्दगी भी अन्दर नहीं जाए, इसके लिए मजबूत जाली लगाई गई, यह एक आवश्यक कार्य था। जाली के तीनों तरफ लगी लोहे की मजबूत एंगल के साथ ही इसके ऊपर भी एक और लोहे की एंगल लगायी जाती तो यह निःसन्देह अधिक मजबूत एवं सुन्दर होता।



आयड़ - भूपालपुरा क्षेत्र



आयड़ - पुलं क्षेत्र



आयड़ - सेवाश्रम रेलवे पुलिया क्षेत्र

### आयड़ नदी को सदैव साफ एवं स्वच्छ रखने हेतु शहरवासियों से अपेक्षाएँ

आयड़ नदी को सदैव साफ एवं स्वच्छ रखने के लिए शहरवासियों एवं उसके किनारे रहने वाले नागरिकों को निम्नांकित आदतें छोड़नी होंगी :-

- नदी पेटे को शौचालय या मूत्रालय बनाना।
- नदी पेटे में कचरा फेंकना एवं भराव डालना।
- नदी के पुल से खड़े-खड़े घर की गन्दगी नीचे फेंकना।
- पुराने कपड़े, जूते एवं मृत्यु उपरान्त बिस्तर को नदी पेटे में डालना।
- पूजन सामग्री एवं मांगलिक आयोजनों की जूठन फेंकना।
- आयड़ के आसपास की बिल्डिंगों से गंदे नाले बंद करने होंगे।
- आयड़ किनारे भूखण्डधारियों को अपने राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार अपने भू-भाग की सीमा को सीमित करना होगा एवं स्वतः अतिक्रमण रोकना होगा।
- श्मशान में अंतिम संस्कार उपरान्त कफन, कपड़े, बाँस, माला, अवशेष लकड़ियाँ, राख-फूल (अस्थियाँ) आदि नदी में डालने से रोकने को लेकर कुछ सकारात्मक प्रयास करने होंगे।
- आयड़ किनारे रहने वाले शहरवासियों को इसे साफ, स्वच्छ, शुद्ध रखने हेतु संरक्षक की भूमिका निभानी होगी।
- विरासत में मिली इस नदी का पूजनीय एवं जीवनदायिनी के रूप में हमें स्नेह एवं आदर करना होगा।
- आयड़ नदी में जमा कीचड़ व कचरे को झीलों के ओवरफ्लो बहाव के साथ उदयसागर झील में जाने से रोकना होगा।
- उदयसागर झील को उदयपुर के नव विकसित शहर के लिए पेजयल का मुख्य स्रोत बनाना होगा। यह निर्णायक निश्चय ही आयड़ नदी को गन्दगी रहित, शुद्ध एवं स्वच्छ रख पायेगा।



आयड़ - सफाई उपरान्त निखरा स्वरूप : आयड़ पुलिया

सूचना पट्ट पर लिखे सख्त निर्देशों के अतिरिक्त नदी के दोनों किनारों पर ऊँचाई पर कैमरे एवं लाइटें लगाई जावें जिससे नदी पेटे की प्रत्येक गतिविधि पर दिन-रात निगरानी रखी जा सके। इससे रात के अन्धेरे में ट्रेक्टरों में भरकर गन्दगी एवं भराव नहीं डाल सकेंगे एवं डालने पर दण्डात्मक कार्यवाही सही रूप में सख्ती के साथ की जा सकेगी। यह कार्य नगर निगम द्वारा कुछ आर्थिक सहयोग से पी.पी.पी. मोड़ से भी किया जा सकता है। आयड़ नदी के पेटे में सफाई अभियान के तहत आठों चिह्नित स्थानों पर निकली गन्दगी एवं मलबा शहरवासियों की लापरवाही की पोल खोलती है। पर्यावरण के प्रति लापरवाह लोगों ने इसे प्रदूषित करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। उन्होंने बेझिझक उसमें घर का कूड़ा-करकट तो फेंका ही, साथ ही पुराने कपड़े से लेकर घरेलू बेकार वस्तुओं के अलावा कई जगह से मलबा लाकर डाल दिया। लापरवाही की एक और वानगी नजर आई जब घर को ध्वस्त करने के बाद शेष मलबा भी नदी पेटे में लाकर डाल दिया गया।

आयड़ नदी से सटी बस्तियों के निवासियों की ओर से गंदा पानी नदी में बहाने एवं कचरा डालने की रोकथाम के लिए इसके किनारे स्थित दीवार को मजबूत आर.सी.सी. से बनानी चाहिये, जिससे भविष्य में आसानी से इसे तोड़ी नहीं जा सके। नदी के किनारे बनी चारदीवारी को तोड़कर बनाए गए अवैध रास्तों को बन्द कर मजबूत ऊँची दीवार बनाई जावे।

नदी के पेटे में पानी से लबालब कुंओं को चिह्नित एवं संरक्षित कर भविष्य में नदी किनारे उद्यानों एवं हरियाली विकसित करने में इन्हें उपयोग में लिया जा सके। नदी के पेटे से कचरा एवं भराव उठाने का कार्य किसी विशिष्ट तकनीकी पारंगत सरकारी या निजी संस्था द्वारा कराया जाना

चाहिये। इससे नदी के पेटे को गहरा करने के साथ उसका समुचित ढलान रखते हुए पानी के बहाव की गति बनायी रखी जा सकेगी। नदी के बीच में पानी के प्रवाह के लिए एक निश्चित गहराई और चौड़ाई की ट्रेंच बन जाती तो आज जो स्थिति है, वह नहीं होती। नदी का पैदा झाड़ियों एवं खरपतवार रहित होता।

औद्योगिक घरानों व संस्थाओं को साथ लेकर आयड़ के स्वरूप को बदलने का अभियान शुरू किया गया था और वास्तव में आयड़ की गन्दगी सूरत साफ भी हो गयी थी। झाड़ियाँ, खरपतवार, गाजरघास, कचरा, मलबा आदि हटाकर विरासत में मिली नदी का वास्तविक स्वरूप पुनः दिखने लगा था। लेकिन नियमित सफाई, सावधानी एवं निरीक्षण के अभाव में चमकी आयड़ पुनः बदसूरती में बदलने लगी है। आयड़ के स्वरूप बदलने के साथ ही जैसे ही काम की गति रुकी तो आयड़ में पुनः झाड़ियाँ, गाजरघास दिखने लगी और गंदे नाले वापस गिरने लगे। अतः आयड़ की नियमित सफाई, निरीक्षण एवं प्रशासनिक सख्ती आयड़ को सदैव साफ एवं स्वच्छ रखने हेतु अति आवश्यक है।

आयड़ विकास के लिए राजकीय बजट के साथ सबको मिलकर काम करना होगा। पिछले दिनों शुरू किये गये अभियान में उद्यमियों, संस्थाओं और दानदाताओं ने जिस तरह का सहयोग किया, वह आयड़ की सूरत बदलने में अहम रहा है। आयड़ के विकास के लिए नगर विकास प्रन्यास को पहल करनी चाहिये एवं इस प्रयास को जनसाधारण का पूर्ण समर्थन मिलना चाहिये। नगर निगम, सिंचाई विभाग, गिर्वा तहसील, बड़े उद्योगपति, तकनीकी संस्थाओं, विशिष्ट दानदाताओं आदि के साथ नदी के दोनों किनारों पर बसे हुए नागरिकों से सहयोग लेने के लिए आयड़ नदी विकास के महत्व की बारीकी एवं इसके व्यावसायिक लाभ की जानकारी उन्हें दी जानी चाहिये।

## विश्व एवं देश की कतिपय प्रमुख नदियों के प्रदूषण मुक्ति के सफल अभियान

औद्योगिकीकरण के अग्रणी देश जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन आदि की अनदेखी से इन देशों की प्रमुख नदियां अत्यन्त प्रदूषित हो गयी थी। किन्तु इन देशों की सरकारों और जन सहयोग के प्रयासों से जर्मनी की राइन, फ्रांस की सान और इंग्लैण्ड की थेम्स नदियां आज पुनः अपने पूर्व रूप में स्वच्छ सलिल प्रवाहिनी बन गयी हैं। इसमें आर्थिक पक्ष से कही अधिक जन-सहभागिता और सरकारों के दृढ़ संकल्प का योगदान रहा। कतिपय दृष्टान्त निम्नानुसार हैं :-

**राइन बर्लिन :** पांच यूरोपीय देशों स्विट्जरलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, लज्जबर्ग और नीदरलैण्ड में बहने वाली राइन नदी के किनारे विशेषकर बर्लिन में तेजी से होते औद्योगिकीकरण से पानी में भारी मात्रा में धातु के कण, कीटनाशी रसायन, हानिकारक कार्बनिक यौगिक और जैविक क्लोरीन से प्रदूषित हुआ और जर्मनी सरकार को सकल में ला दिया। वर्ष 1950 में इन देशों ने प्रोटेक्शन ऑफ दी राइन अगेंस्ट पाल्यूशन (आई.सी.पी. आर.) नाम का एक अन्तरराष्ट्रीय आयोग बनाकर निम्न संयुक्त कार्यक्रम बनाया :-

- घुलित रसायन के स्तर का मानक बनाया गया।
- औद्योगिक क्षेत्र में प्रदूषित जल उपचारक संयंत्र विकसित कर पानी को साफ किया और फिर उसे राइन में छोड़ा गया।
- इसे प्रदूषण मुक्त रखने के लिए एक अनुसंधान व विकास संगठन का गठन किया गया। यह आज भी अनुसंधानरत है। इसके अपने न्यायिक अधिकार क्षेत्र है और इस पर सीधे नियंत्रण केन्द्रीय संस्थान का है।
- अनुसंधान व विकास संगठन ने राइन के लिए 83 रसायनों और जैविक उत्पादों को ब्लैक लिस्टेड कर रखा है।
- राइन तक पहुंचने वाले पानी के प्राकृतिक प्रवाह का अध्ययन कर उसे भी व्यवस्थित किया जाता है।

### राइन एक्शन प्लान :

- सभी माध्यमों से होने वाले प्रदूषण को नियंत्रित करना।
- बड़ी मात्रा में प्रदूषित पानी पैदा करने वाली प्रौद्योगिक इकाइयों और सीवरेज का छोटे ग्रीन ब्रिज और उपचारण संयंत्रों से नियंत्रण करना।
- प्रतिदिन पैदा होने वाले प्रदूषित पानी की मात्रा का निर्धारण करवाना व उसमें उपस्थित प्रदूषकों का निवारण करना।
- शुद्धीकरण संयंत्र लगाकर राइन के पानी में ऑक्सीजन की मात्रा मानक स्तर तक लाई गई।
- नए मानकों को अपना कर अब 12 अन्य रसायनों को और प्रतिबन्धित किया है।



**सान पेरिस :** फ्रांस की सान नदी को प्रदूषित होने से बचाने के लिए पेरिस में सन् 1370 में भूमिगत सीवरेज तंत्र का विकास किया गया था। इसके बाद आज तक सीवरेज प्रबन्धन पर अध्ययन व आधुनिकीकरण प्रक्रिया जारी है। दुनिया के किसी भी दूसरे शहर में पेरिस जैसा अत्याधुनिक सीवरेज प्रबन्धन नहीं है। यहां पर इस समय सीवरेज निस्तारण के लिए करीब 2100 किलोमीटर लम्बी टनल बनी हुई है। वहां पर प्रतिदिन 1.2 करोड़ घनमीटर गन्दा पानी जमा होता है और उपचारित होता है। यहां पर सीवरेज तंत्र के अध्ययन के लिए एक म्यूजियम भी बनाया गया है। पेरिस का आधुनिक सीवरेज तंत्र 1850 में बोरान हैसमैन ने विकसित किया था।

### सान पेरिस : विशाल शहर के मध्य बहती सुन्दर नदी एवं इस पर निर्मित भव्य ब्रिज



सीवरेज निस्तारण की टनल के साथ ही वहां पर पेयजल और सामान्य जल आपूर्ति की लाइन, बिजली, टेलीफोन और प्रसारण तंत्र केबल भी भूमिगत है। 1914 में पेरिस में सीवरेज तंत्र में समस्या आने लगी। इस पर बेलग्रांड सक्सेसर की योजना के तहत 1000 किलोमीटर की नई लाइन बिछाई गई। 1977 में यह योजना पूरी हुई। इसके बाद सीवरेज निस्तारण की समस्या से निपटने के लिए 50 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में एक ट्रीटमेन्ट प्लांट विकसित किया गया। इससे पानी को परिष्कृत कर पुनः सान नदी में छोड़ा जाता है। 1991 में सीवरेज तंत्र के आधुनिकीकरण की परियोजना शुरू की गई। इसमें सीवरेज तंत्र के रिसाव को सुधारा गया। 1000 किलोमीटर लम्बे सीवरेज तंत्र के लिए करीब 100 पम्पिंग स्टेशन बनाये गये। विभिन्न स्थानों पर प्रदूषक मापक यंत्र लगाए गए और सीवरेज बहाव पर नियंत्रण के लिए स्वचालित यंत्र लगाए गए। ठोस कचरे और ग्रिट के निस्तारण के लिए एक व्यवस्थित कार्यक्रम चलाया गया। इसके लिए एक कम्प्यूटराइज्ड नेटवर्क प्रबन्धन तंत्र विकसित किया गया। सान को बचाने के लिए बनाए गए सीवरेज टनल की सफाई वहां के कामगार व्यवस्थित और आधुनिक ढंग से करते हैं।

### एफिल टॉवर के पास बहती सान पेरिस



**थेम्स लंदन** : थेम्स दुनिया की सबसे बड़ी, चौड़ी और गहरी नदी नहीं है लेकिन सबसे प्रसिद्ध नदियों में से एक है और 19-20वीं सदी में ब्रिटिश सम्पन्नता का प्रतीक भी है। जब लंदन में औद्योगिक विकास हो रहा था, तो शहर बढ़ रहा था तो थेम्स घट रही थी। आज यह नदी बहुत साफ और खूबसूरत नजर आती है, लेकिन एक समय यह मृत हो चुकी थी। इसके बाद थेम्स के लिए एक व्यवस्थित सीवरेज तंत्र बनाया गया क्योंकि लंदनवासियों के लिए थेम्स एक भावनात्मक मामला था। लगभग वैसा ही जैसा कि उदयपुरवासियों के लिए झीलें और आयड़ नदी है। आज भी थेम्स पर करीब एक करोड़ तीस लाख लोगों के लिए सीवरेज प्रबन्धन किया जा रहा है।

**जल प्रदूषण मुक्ति एवं अल्फा लेवल पैटर्न :**

- वर्ष 1993 से यूनाइटेड किंगडम सरकार की संस्था अल्फा लेवल थेम्स की सफाई और निगरानी का काम कर रही है। इस संस्था ने लंदन में सीवरेज के प्रबन्धन और उपचारण के लिए व्यवस्थित काम किया है। जबकि लन्दन दुनिया के सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाले शहरों में से एक है। दुनिया में पानी के पास रहकर और अधिकतम जल उपलब्धता के बावजूद लंदनवासी पानी का सही ढंग से उपयोग करते हैं।
- ब्रिटेन में एक व्यक्ति वर्ष भर में 58000 गेलन पानी ही खर्च करता है, वहीं रेगिस्तानी क्षेत्र सीरिया में 95000 गेलन पानी प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष काम में लेता है।
- ब्रिटेन में अल्फा लेवल तकनीक काम में ली जाती है। जिसमें एक विकेन्द्रीकृत अभिकेन्द्रित उपकरण वाली मशीन काम में ली जाती है इससे ठोस सीवरेज और प्रदूषित जल अलग-अलग हो जाते हैं।
- लंदन की जनता द्वारा छोड़े जाने वाले सीवरेज के निस्तारण के लिए चारों दिशाओं में 100 किलोमीटर लम्बी सीवरेज पाइप लाइनें बनाई हैं।
- सारे सीवरेज को उपचारण केन्द्र पर जमा कर निर्जलीकृत किया जाता है। पानी को उपचारित कर खेती के लिए व ठोस कचरे को परिष्कृत कर खेतों में खाद के रूप में काम में लेते हैं।
- यहां पर हर घंटे में करीब 160 घन मीटर ठोस सीवरेज जमा होता है।
- वर्ष 1993 तक पारम्परिक तरीके से सीवरेज उपचारण होता था। इसमें गुरुत्वाकर्षण की मदद से पानी अलग कर ठोस सीवरेज जमा किया जाता था।



**Palace of Westminster**



**London Tower Bridge**



**London Eye**

**वेनिस** : वेनिस समन्दर पर खड़ी एक शानदार नगरी है, जिसकी बहती और बलखाती लहरें, उसकी सड़कें और तंग गलियाँ हैं। वेनिस देखने पर ऐसा लगता है, मानों वे समय की धारा में दो सौ या तीन सौ साल पीछे चले गए हैं। पूरी नगरी का माहौल ही बिल्कुल अलग है। नहरों पर जहाँ पत्थरों से बने मेहराबदार पुल आते हैं, वहाँ ट्रेफिक की आवाज़ सुनाई देती है। यहाँ मोटर गाड़ियों के बजाय कश्तियाँ चलती हैं। नगर के मुख्य चौक यानी "सेंट मार्क चौक" पर खुली हवा में रेस्तराँ है। यहाँ पर सैलानियों और स्थानीय निवासियों की भीड़ लगती है। ग्रैंड केनल पर मशहूर **रीआल्तो पुल** इस नगरी का सबसे मुख्य रास्ता है। यहाँ पर स्थित इस शानदार पुल एवं इसके नीचे से बिना आहट किए गुजरने वाली पतली व काले रंग की "गन्डोला" नौकाएँ सैलानियों के लिए आकर्षण का मुख्य केन्द्र हैं।



**Accademia Bridge**



**Heart of Venice**

**वेनिस प्रबन्धन :**

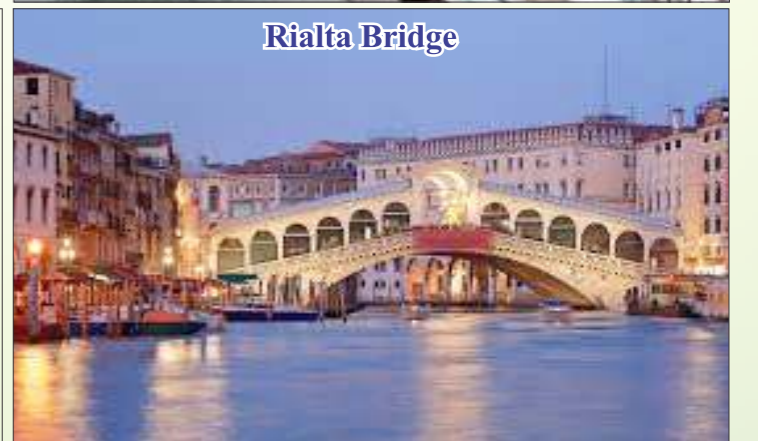
- शहर में अभी भी आधुनिक सीवरेज तंत्र नहीं है, लेकिन पुराने तंत्र का प्रबन्धन इतना व्यवस्थित है कि किसी प्रकार के जल प्रदूषण के साथ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी उत्पन्न नहीं होती हैं।
- वेनिस का करीब 75 प्रतिशत भाग लागून के पानी में हैं। लागून समुद्र से विभाजित होकर बनी विशाल झील को कहते हैं।
- भारत में चिल्का और अष्टमुदी प्रमुख लागून झीलें हैं।
- मौसमी और बेमौसम की बरसात और उच्च ज्वार की स्थिति में वेनिस शहर में बाढ़ कहर ढाती है। इस कारण वहां पानी को प्रदूषित होने से बचाने के लिए एक मजबूत सीवरेज तंत्र विकसित किया गया है। शहर में इसके बावजूद बारिश के मौसम में स्वास्थ्य और जल निकासी तंत्र को लेकर प्रशासन और जनता चिंतित रहते हैं। यहां



**Guglie Bridge**



**Gondola Boat**



**Rialta Bridge**

तक कि वहां के होटल व्यवसायी भी इसके लिए ठीक ढंग से प्रबन्धन करते हैं। इससे वहां का पर्यटन कभी कम नहीं हुआ है।

- स्थानीय प्रशासन की ओर से स्थापित अनुसंधान विभाग वेनिस लागून के जल प्रबन्धन और प्रदूषण नियंत्रण पर नियमित अध्ययन करता है और प्रति तीन माह में उसकी रिपोर्ट पर व्यावहारिक अमल किया जाता है।
- वहां पर सीवरेज के प्रबन्धन के लिए अभी भी पुराना तरीका काम करता है। पूरे शहर की सीवरेज लाइन को लीकेज प्रूफ बनाने के लिए पोलिमेर पाइप और टैंक काम में लिए गए हैं। उन्हें साफ करने के लिए मोबाइल सीवरेज कनेक्शन वैन काम करती है। स्थानीय प्रबन्धन ने इसके लिए पूरा एक विभाग स्थापित किया है, जो वर्ष भर इसकी नियमित देखरेख करता है।
- वेनिस में 1970 में वेनिस वाटर ऑथोरिटी का गठन किया गया था। वह स्थानीय जरूरत के मुताबिक वेनिस का जल प्रबन्धन करती है।
- वहां के नदी के बेसिन प्रबन्धन भी वेनिस वाटर ऑथोरिटी ही करती है। वह हमेशा इसका ध्यान रखती है कि जल निकासी में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं हो।
- वेनिस में सीवरेज के निस्तारण के लिए बने तंत्र में टैंक इस प्रकार के हैं कि जरूरत पड़ने पर उन्हें निकाल कर साफ किया जा सकें।

**सिंगापुर रिवर** : सिंगापुर रिवर सिंगापुर के मध्य क्षेत्र में स्थित है जो इसकी 150 वर्षों से जीवन रेखा है। यह रिवर समुद्र से इसके अंतिम छोर किम सेंग रोड तक 3.2 किमी तक लम्बी है। वर्षों तक यह नदी प्रदूषित रही लेकिन वर्ष 1965 में सिंगापुर को स्वतन्त्रता प्राप्त होने पर उसके प्रधानमंत्री ली क्वान यू ने इसे विकसित करने का निश्चय किया।

इस नदी के तट पर वर्ष 1977 में 46187 अवैध झुग्गी झोपड़ियाँ स्थित थी। इनमें रहने वाले अधिकांश व्यक्ति बकेट एवं लटकी हुई शौचालय से नदी में शौच विसर्जित करते थे। जल एवं जल निकास अभियन्ताओं द्वारा इस नदी से जुड़ी हुई पर्यावरणीय कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए एक विस्तृत विकास योजना बनाई गई जिसे वर्ष 1983 से क्रियान्वित की गई।

इस नदी के सफाई अभियान के अन्तर्गत पत्थर से बनी तटीय दीवारों की मरम्मत, पर्यावरण तंत्र को बिना हानि पहुँचाये पानी की सफाई एवं तटों को उन्नत कर इस नदी को नया जीवन प्रदान किया गया। नदी के दोनों तटों पर कार्यालय, गोदाम, पोतघाट एवं जनसंख्या वृद्धि के साथ आवासीय एवं व्यापारिक बहुमंजिले भवन, होटल्स आदि बनते गये।

नदी पर विभिन्न आकृतियों के 9 पुल बने हुए हैं एवं सिंगापुर का पर्यटक प्रतीक मर्लिनो पार्क भी इसी पर स्थित है। इस नदी पर लाइव फूड हब्स एवं मनोरंजक कक्ष भी स्थित हैं। पार्लियामेन्ट हाउस, न्यायालय एवं अन्य सरकारी भवन अवस्थित है। मनोरंजन के साधन एवं गतिविधियाँ बढ़ती गई। वार्षिक नववर्ष समारोह के दौरान बतख दौड़, मछली पकड़ने की प्रतियोगिता, अन्य कार्यक्रम इस नदी के तट पर भव्यता के साथ आयोजित होते हैं। यह नदी प्रत्यक्ष गवाह है – सिंगापुर की सफल विकास यात्रा की और इतिहास में यह सदैव स्मरणीय रहेगी।



South Bank of Singapore River



**साबरमती रिवरफ्रन्ट (अहमदाबाद)** : यह रिवरफ्रन्ट वह वाटरफ्रन्ट है जो अहमदाबाद की साबरमती नदी पर विकसित किया गया है। इसकी तुलना विकसित देशों के कामयाब प्रोजेक्ट से हो रही है और यह हुआ है रिवरफ्रन्ट योजना की बढौलत। लागत रुपये 1150 करोड़। शहर के बीच 10.5 किलोमीटर लम्बाई में हुए कायापलट का नतीजा है—साफ पानी से लबालब भरी साबरमती नदी।

इसका प्रथम प्रस्ताव अहमदाबाद के प्रमुख नागरिकों एवं फ्रेन्स वास्तुकार बरनार्ड कॉन ने वर्ष 1961 में दिया। नगर निगम, अहमदाबाद द्वारा मई, 1997 में भारत सरकार से प्राप्त प्रारम्भिक धन रु.

9 साल में रु. 1150 करोड़ खर्च सूखी साबरमती बन गई थेम्स जैसी

1.0 करोड़ के सहयोग से साबरमती रिवरफ्रन्ट डवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एसआरएफडीसीएल) स्थापित किया गया तथा इसे 10.5 किमी लम्बाई में फैले हुए साबरमती रिवरफ्रन्ट को विकसित करने की जिम्मेदारी दी गई। एक शहर के लिए इतने महंगे प्रोजेक्ट के लिए धन जुटाना भी एक बड़ी चुनौती थी। इसके लिए महानगर पालिका को कर्ज लेने पड़े। सरदार पटेल स्टेडियम, पश्चिम जोन का कार्यालय, दो प्लॉट तथा तटक्षेत्र की एक 90 हजार वर्गमीटर जमीन गिरवी रखनी पड़ी। ऋण की अदायगी के रूप में हर तीन माह में 25 करोड़ रुपये की किश्त चुकाई गयी।

इस परियोजना को प्रारम्भ में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिनमें विशेषकर जल स्तर एवं उपलब्धता, बाढ़ नियंत्रण, झुग्गी झोपड़ियों से हटाये गये लोगों के पुनर्वास एवं इस कार्य को न्यायोचित नहीं मानने वाले उत्साही सामाजिक कार्यकर्ताओं का विरोध, भूमि अवाप्तिकरण एवं विभिन्न विभागों से स्वीकृति प्राप्त करने की प्रक्रिया में देरी आदि मुख्य थे। इस कार्य में झुग्गी झोपड़ियों को हटाना अहमदाबाद शहर का आज तक का सबसे बड़ा कार्य रहा। वर्ष 2003 में इस परियोजना को नर्बदा मुख्य नहर से वासना बैराज तक 20 किमी तक बढ़ाया गया। वर्ष 2004 से जोर—शोर से रिवरफ्रन्ट का निर्माण शुरू हुआ।

साबरमती नदी की औसत चौड़ाई 382 मीटर (1253 फीट) जबकि नदी की सबसे तंग चौड़ाई 330 मीटर (1080 फीट) थी। एसआरएफडीसीएल ने रिवरफ्रन्ट विकास हेतु नदी की चौड़ाई बिना जल बहाव क्षमता को कम किये एक जैसी 275 मीटर (902 फीट) रखने का निश्चय किया जिससे दोनों तटों पर बनाई जाने वाली दीवारों से संपूर्ण भूमि क्षेत्र सुरक्षित रहेगा।



साबरमती आयड़ जैसी थी



साबरमती विकास यात्रा पर

### साबरमती रिवरफ्रन्ट का विकसित स्वरूप



साबरमती एक मौसमी नदी है जो वर्ष में 2-3 महीने ही बहती थी। इसके 10.5 किमी लम्बे विकसित रिवरफ्रंट क्षेत्र में एक मीटर गहरा पानी नर्बदा मुख्य नहर एवं वासना बैराज से प्राप्त कर वर्षभर भरा रखा गया। इसे प्रदूषण मुक्त रखने के लिए सीवरेज का सीधा प्रवाह सख्ती से रोका गया। नदी के दोनों किनारों पर समानान्तर एक बड़ी पाइप लाइन के जरिए सीवरेज को ट्रीटमेंट प्लांट से जोड़ा गया है।

एसआरएफडीसीएल द्वारा सुधारी गई 21 प्रतिशत भूमि आवास एवं वाणिज्यिक उपयोग हेतु विक्रय की गई एवं उससे प्राप्त 12 अरब रुपये की धनराशि से पैदल टहलने का मार्ग, सड़क निर्माण, विचरण पथ, तटपथ, उद्यान, झुग्गी झोंपड़ियों के पुनर्वास के अन्तर्गत 4000 मकानों का निर्माण, कन्वेंशन सेन्टर, मनोहारी एवं मनोरंजक पार्क, गोल्फ मैदान, जल क्रीडा स्थल एवं कोटरपुर वीयर (छोटा बाँध) का निर्माण सम्मिलित हैं। दोनों तटों को जोड़ने के लिए रोप-वे ब्रिज एवं एक लाख वर्गफुट में ट्रेड फेयर ग्राउण्ड बनाया गया। रिवरफ्रंट पर शहर के सबसे बड़े नौ किमी लम्बे बगीचे का निर्माण किया गया है। गांधी आश्रम के सामने स्थित नदी के छोर का कार्य पूर्ण हो गया है। इस परियोजना को प्रधानमंत्री पुरस्कार, 1999 "श्रेष्ठ नगर नियोजन एवं स्वरूप" एवं हुडको द्वारा "इनोवेशन इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेन्ट" राष्ट्रीय पुरस्कार, 2012 से सम्मानित किया जा चुका है।

## साबरमती रिवरफ्रंट के रात्रिकालीन अति मनोहारी विभिन्न स्वरूप



**Martyr's Memorial**



**विकसित साबरमती का मनोहारी दृश्य**



**Concept Plan - January, 2007**

**कांकरिया झील** : अहमदाबाद में मानव निर्मित कांकरिया झील 500 वर्षों से शहर की पहचान का एक अभिन्न अंग रही है। शहर के दक्षिणी-पूर्वी मणिनगर उप-नगरीय हिस्से में स्थित झील का निर्माण 15वीं शताब्दी में सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह द्वितीय द्वारा किया गया था। लगभग डेढ़ कि.मी. परिधि में फैली इस झील के मध्य नगीनावाड़ी नामक बहुत ही सुन्दर द्वीप-महल उपवन स्थित है। इस झील को पिछले वर्षों में बहुत उपेक्षा का सामना करना पड़ा। यह सीवरेज टैंक के रूप में परिवर्तित हो गई। वर्ष 2008 में अहमदाबाद नगर निगम ने लगभग 36 करोड़ रुपये की लागत से झील को बड़े पैमाने पर पुनर्जीवित किया। आज यह शहर का मुख्य आकर्षण है और कई गतिविधियों के साथ शीर्ष मनोरंजन हब के रूप में पहचानी जाती है, जिसमें पार्क, वॉक-वे, फूड हब सफारी से लेकर नौका विहार और टॉय ट्रेन शामिल हैं। झील के चारों ओर बहुत ही खूबसूरत बगीचे के साथ इसके निकट बाल वाटिका, चिड़ियाघर आदि स्थित हैं। वर्तमान में यह झील पर्यटकों के लिए भी एक एक्टीविटी सेन्टर है, जहाँ कई प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं।



**कांकरिया झील का सुनियोजित स्वरूप**



**झील का रात्रिकालीन भव्य स्वरूप**



**विशाल कांकरिया झील की अद्वितीय संरचना**

**अमानीशाह नाला (द्रव्यवती नदी)** : गुलाबी नगरी जयपुर में करीब 47 कि.मी. लम्बी नदी रजवाड़े के दिनों में द्रव्यवती नदी के नाम से जानी जाती थी, लेकिन धीरे-धीरे यह अमानीशाह नाला बन गया। अमानीशाह की मज़ार से निकलने की वजह से इसे लोग अमानीशाह नाला ही कहने लगे। यह नदी जयपुर की करीब सभी विधानसभा क्षेत्रों से होकर गुजरती है।

जयपुर शहर में 16 कि.मी. लम्बा क्षेत्र पूर्व में गन्दे नाले, कंटीली झाड़ियों, मल-मूल विसर्जन एवं अतिक्रमणग्रस्त स्थल के रूप में पहचाना जाने लगा। बहुआयामी प्रोजेक्ट्स के तहत इसके सौन्दर्यीकरण का कार्य जयपुर विकास प्राधिकरण एवं टाटा समूह द्वारा पूर्ण नियोजित रूप से साबरमती की तर्ज पर किया गया है। इसके तहत टॉयलेट्स बनाने, टाइल्स लगाने, स्कल्पचर व घास लगाने सहित अन्य विकास कार्य करवाये गये। इस नाले की सुन्दरता में निखार लाने हेतु हर 500 मीटर की दूरी पर घुमावनुमा लम्बी स्लेप लगाकर बैठक व्यवस्था के साथ वालमार्ट लाइटें लगाई गईं ताकि कुछ समय खुली हवा में शहरवासी अपना समय बीता सकेंगे एवं घूमने व सैर-सपाटे करने का भी अवसर मिल सकेगा।

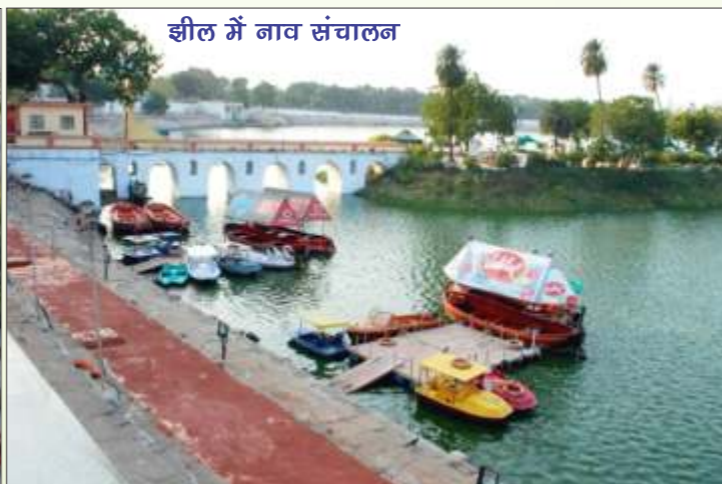
जयपुर में अमानीशाह नाले का पुनर्विकास राज्य सरकार के सहयोग से हुआ, फिर झीलों व पर्यटकों की नगरी उदयपुर में आयड़ विकास क्यों नहीं हो सका? इसके लिए आर्थिक सहयोग में देरी क्यों हो रही है?



**अमानीशाह नाले का विस्तृत स्वरूप**



**झील परिसर में भ्रमण हेतु सर्कुलर ट्रेन**



**झील में नाव संचालन**



**अमानीशाह नाला - विभिन्न विकसित स्वरूप**



**अमानीशाह नाला**

## आयड़ नदी का विकास, भावी संभावनाएँ एवं क्रियान्विति

### आयड़ की सफाई कब होगी? यह धारा निर्मल कब होगी एवं कब यह देश की साबरमती एवं विदेश की सिंगापुर रिवर बन सकेगी?

आयड़ की सफाई एवं विकास कार्य बहुत अधिक जटिल नहीं हैं, आवश्यकता सिर्फ इस बात की है कि हम दिल से इसे करना चाहे। उदयपुर को क्या सिंगापुर (जो मात्र 710 वर्ग किमी क्षेत्रफल में फैला हुआ है) की तरह विकसित नहीं किया जा सकता? आयड़ नदी को सिंगापुर रिवर फ्रन्ट की भाँति विकसित करना होगा। भारत सरकार, राज्य सरकार, नगर विकास प्रन्यास, कॉरपोरेट जगत (सी.एस.आर.) एवं जनभागीदारी के संयुक्त प्रयासों से ही यह कार्य संभव हो पायेगा।

यदि गुजरात की साबरमती नदी, जो कि कुछ वर्षों पूर्व गन्दे नाले के रूप में बहती थी, साफ हो सकती है, तो आयड़ साफ क्यों नहीं हो सकती? इस हेतु राजनीतिक इच्छाशक्ति से लेकर उदयपुर के

नियोजन एवं प्रबन्धन के स्तर पर कमियाँ रही होगी, जिसके चलते यह अभी तक गन्दे नाले के रूप में ही विद्यमान है। अब तक के अनुभव के आधार पर आयड़ की सफाई के सम्बन्ध में तीन प्रमुख समस्याएँ उभरकर आती हैं—पहली यह कि नदी में पानी का प्रवाह लगातार कम होता जा रहा है, दूसरी—आयड़ नदी के दोनों तटों पर (विशेषकर शहरी क्षेत्र 11 किमी में) भारी अतिक्रमण है, इसके अतिरिक्त नदी में

**साबरमती नदी और हमारी आयड़ नदी, दोनों की परिस्थितियाँ करीब-करीब एक जैसी ही हैं। साबरमती में भी अहमदाबाद का सीवरेज गिरता था एवं मुख्य धारा के प्रवाह की भी कमी थी, लेकिन दृढ़ संकल्प से ही संभव हुआ।**

गाद जमा होने के कारण नदी की गहराई भी कम होती जा रही है तथा तीसरी है प्रदूषण की समस्या। यह कोई नई बात नहीं है कि नदी में पानी के बहाव के स्तर पर ही नदी का प्रदूषण निर्भर करता है। पानी का बहाव बढ़ेगा तो प्रदूषण स्तर अपने आप कम हो जायेगा।

आयड़ नदी के तटीय क्षेत्रों में अत्यधिक भूजल दोहन होता है। इसलिए बड़ी मात्रा में आयड़ का पानी इस जमीन को रीचार्ज करने में चला जाता है। इसके लिए भूजल संरक्षण और भूजल पुनर्भरण के लिए व्यापक प्रयास करने होंगे। इस हेतु उदयपुर की झीलों को पूरा भरा रखा जावे। देवास—प्रथम, देवास—द्वितीय के अतिरिक्त देवास तृतीय, देवास चतुर्थ जल परियोजनाओं को भी अतिशीघ्र पूर्ण कर संचित जल राशि को उदयपुर लाया जावे तथा आयड़ नदी के बहाव को बढ़ाने के लिए इसे समय-समय छोड़ा जाये। इसके साथ शहर के सीवरेज पानी का शुद्धीकरण कर पुनः आयड़ में छोड़ा जाये। बहाव बढ़ाये बिना ट्रीटेड (सीवेज वॉटर ट्रीटमेन्ट प्लान्ट, वेस्ट वॉटर ट्रीटमेन्ट प्लान्ट व औद्योगिक वेस्ट ट्रीटमेन्ट प्लान्ट) पानी छोड़ना लाभकारी नहीं होगा। आज आयड़ में वही पानी बचा हुआ है जो हमारे शहर के गंदे नाले वगैरह डालते हैं, उसमें निर्मल पानी बचा ही नहीं है।

**आयड़ नदी विकास एवं भागीदारी :** आयड़ नदी के भौतिक विकास, अन्य भावी संभावनाओं एवं प्रारूप पर गहन चिन्तन व मनन की आवश्यकता है। इसमें राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ स्थानीय विद्वत् एवं सेवानिवृत्त अभियन्ताओं, उद्यान विशेषज्ञों, सामाजिक कार्यकर्ताओं की अपार बौद्धिक एवं अनुभव क्षमताओं का उपयोग करना चाहिये। आयड़ नदी के आसपास रहने वाले नागरिकों को भी नियोजन एवं विकास कार्यों में भागीदार बनाना चाहिये। आयड़ नदी विकास एवं गुमानियावाला सौन्दर्यीकरण, कई परियोजनाएँ बनी एवं बन रही हैं, उनका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार दिया जा रहा है :-

#### आयड़ विकास का सपना

- आयड़ नदी को वेनिस की तरह विकसित किया जाए।
- इसके किनारे पाथ-वे बनेंगे, जहाँ पर स्ट्रीप गार्डन में फूलों की क्यारियाँ महकेंगी। लोग उनमें सुबह-शाम घूम सकेंगे।
- नदी पेटे में वाटर पूल होंगे जिसमें साफ पानी भरा रहेगा। पक्षी कलरव करेंगे।
- मछलियाँ तैरती दिखेंगी।
- वाटर स्पोर्ट्स की गतिविधियाँ संचालित होगी।
- आयड़ नदी में वर्षभर स्वच्छ जल बहने से इस क्षेत्र के भू-जल स्तर में वृद्धि के साथ इसकी शुद्धता भी बढ़ेगी।
- क्षेत्र की हरियाली में आशातीत वृद्धि होगी।



आयड़ किनारे पर संभावित उद्यान की परिकल्पना

**वेपकॉस द्वारा प्रस्तावित आयड़ विकास योजना (₹. 907 करोड़) :** आयड़ नदी विकास की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) बनाने का कार्य राजस्थान सरकार द्वारा वेपकॉस (वाटर एण्ड पावर कन्सलटेन्सी सर्विसेज इण्डिया) लिमिटेड, गुडगांव को दिसम्बर, 2012 में रुपये 70 लाख की लागत से अनुबन्ध पर किया गया। इस हेतु सभी संबंधित विभागों से आयड़ नदी से संबंधित रिकॉर्ड, डाटा, नक्शे आदि प्राप्त कर परिचायक (Inception Report) रिपोर्ट प्रेषित की गयी। तत्पश्चात् नदी के जल की आवक, शहर में सीवरेज स्थिति, नदी के किनारों पर उपलब्ध सरकारी जमीन इत्यादि समस्त विषयों का अध्ययन कर एक अन्तरिम रिपोर्ट तैयार कर प्रेषित की गयी। अन्तरिम रिपोर्ट पर सम्बन्धित नॉडल विभाग (नगर विकास प्रन्यास) से प्राप्त सुझाव, अतिरिक्त प्रस्ताव आदि प्राप्त होने पर अंतिम विस्तृत परियोजना रिपोर्ट पर कार्ययोजना तैयार की जाकर प्रेषित किया जाना प्रस्तावित था। राज्य सरकार ने नगर विकास प्रन्यास, उदयपुर को इस परियोजना की नोडल एजेन्सी घोषित किया। इस परियोजना के आधार निम्नानुसार रहे :-

- आयड़ नदी थूर की पाल से होकर उदयपुर शहर के बीचो-बीच बहती हुई 26 कि.मी. का लम्बा सफर तय करते हुए उदयसागर में समाहित होती है।
- यह वर्षभर बहने वाली नदी वर्तमान में मात्र दो-चार महीने बहती है एवं इस समय यह उदयपुर की ठोस एवं अन्य द्रव्य गन्दगी का अपवहन करते हुए एक गंदे नाले के रूप में परिवर्तित हो चुकी है।
- इसमें औद्योगिक क्षेत्र से औद्योगिक अपशिष्ट भी गिरता है। वर्तमान में इसका जल अत्यन्त प्रदूषित है। यह पेयजल एवं सिंचाई के लिए भी अनुपयुक्त है।

**परिचायक व अन्तरिम रिपोर्ट** – प्रारम्भिक अध्ययन एवं उपलब्ध रिकॉर्ड के आधार पर तैयार की गई परिचायक रिपोर्ट को अप्रैल, 2013 एवं अन्तरिम रिपोर्ट जुलाई, 2013 में दी गई। जिसमें आयड़ नदी के किनारों पर उपलब्ध सरकारी जमीन को चिन्हित किया गया। आयड़ नदी में जल की अधिकतम आवक के अध्ययन के आधार पर रिवर चैनलाइजेशन का प्रावधान किया गया तथा आयड़ नदी को प्रदूषण मुक्त करने हेतु सीवरेज परियोजना एस.टी.पी., सी. ई.टी.पी. का प्रावधान रखते हुए तथा आयड़ नदी के किनारों के सौन्दर्यीकरण हेतु आवश्यक राशि भी प्रस्तावित की गई जिसका समस्त मूल्यांकन लगभग ₹. 907 करोड़ आंका गया, जो विभिन्न कार्यों हेतु सांकेतिक तौर पर परिचायक रिपोर्ट में उल्लेखित हैं :-

- इस प्रतिवेदन में आयड़ नदी में किये गये अतिक्रमणों के साथ दोनों किनारों पर उपलब्ध राजकीय भूमि का भी जिक्र किया गया है।
- अंतरिम रिपोर्ट जुलाई, 2013 में प्रेषित की गई जिसके माध्यम से यह बताया गया कि 26 कि.मी. लम्बी आयड़ नदी को तीन भागों में बांटा जाये, प्रथम-थूर से बेदला ब्रिज तक (0 से 9.4 किमी), द्वितीय बेदला ब्रिज से मादड़ी ब्रिज (9.4 किमी से 21.35 किमी) एवं तृतीय मादड़ी ब्रिज से उदयसागर ब्रिज (21.35 से 26.00 किमी)।
- उच्चतम बाढ़ स्तर तक रिवर चैनलाइजेशन कार्य किया जाना प्रस्तावित है, जिसके अन्तर्गत – 0 से 9.5 कि.मी. (621 से 1086 क्यूमेक्स) को अनलाइन्ड, रिसेक्सनिंग ऑफ साइट्स एण्ड ड्रेसिंग ऑफ बेड्स। – 9.5 से 20.5 कि.मी. (1086 से 1883 क्यूमेक्स) दोनों किनारों पर मेसनरी लाइनिंग एवं नदी तल अनलाइन्ड। – 20.5 से 26.0 कि.मी. (1883 क्यूमेक्स) को अनलाइन्ड, रिसेक्सनिंग ऑफ साइट्स एण्ड ड्रेसिंग ऑफ बेड्स।
- आयड़ नदी के साईट एवं नदी तल ड्रेसिंग द्वारा 2099705 क्यूबिक मीटर मिट्टी निकालना प्रस्तावित है।

क्र.सं.	विवरण	खर्च (करोड़ रु.)
1.	सीवरेज योजना	415
2.	एस.टी.पी. / सी.ई.पी.टी.	162
3.	रिवर चैनलाइजेशन	280
4.	सौन्दर्यीकरण कार्य	50
	<b>कुल लागत</b>	<b>907</b>

- विकास प्रतिवेदन में यह भी बताया गया है कि वर्ष 2011 में उदयपुर शहर की जल की आवश्यकता एवं डोमेस्टिक सीवरेज जनरेशन क्रमशः 90.01 एवं 52.09 एमएलडी है, जो वर्ष 2046 में जनसंख्या की वृद्धि से बढ़कर क्रमशः 149.48 एवं 97.01 एमएलडी हो जायेगा।
- इस सीवरेज जल (घरेलू एवं औद्योगिक वेस्ट) के उपचार हेतु दो एसटीपी (72 एवं 40 मिलियन लीटर प्रतिदिन), दो सीईटीपी (20 एवं 20 मिलियन लीटर प्रतिदिन) निर्माण करने का प्रावधान किया गया है। इसके अतिरिक्त एक एसटीपी प्लान्ट (20 मिलियन लीटर प्रतिदिन क्षमता) मनवा खेड़ा में हिन्दुस्तान जिंक द्वारा निर्मित किया जा रहा है।
- थूर व उदयसागर के मध्य धरातल के स्तर में 70 मीटर का अन्तर है तथा प्रतिवेदन में चार एनिकट बेदला 8.4 कि.मी., देवाली 11.6 कि.मी., मनवाखेड़ा 19.4 कि.मी. एवं खरबड़िया औद्योगिक क्षेत्र 20.8 कि.मी. पर बनाया जाना प्रस्तावित है।
- वेपकॉस द्वारा अतिरिक्त सुझाव, प्रस्ताव आदि प्राप्त होने पर अंतिम डीपीआर प्रेषित की जावेगी, इसमें परियोजना की लागत में परिवर्तन संभव है।

#### विभिन्न कार्यों पर अनुमानित लागत

विवरण	लागत (करोड़ों में)	कुल लागत (करोड़ों में)		
वर्तमान जनसंख्या (2012)	₹. 5 लाख			
अनुमानित जनसंख्या (2022)	₹. 8.3 लाख			
प्रतिव्यक्ति सीवरेज तंत्र पर खर्च	₹. 5 हजार			
कुल लागत (8.3 लाख × 5 हजार)	₹. 415 करोड़			
<b>सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट (एसटीपीएस/सीईटीपीएस) पर खर्च</b>				
घरेलू वेस्ट वाटर (एस.टी.पी.) की क्षमता (फेज-I) : 72 मि.ली. / दिन				
औद्योगिक वेस्ट वाटर (सीईटीपी)(निर्माणधीन) : 20 मि.ली. / दिन (Common Effluent Treatment Plant)				
घरेलू वेस्ट वाटर (एस.टी.पी.) (फेज-II) : 112-72 = 40 मि.ली. / दिन				
औद्योगिक वेस्ट वाटर सीईटीपीएस (फेज-II) : 40-20 = 20 मि.ली. / दिन				
लागत प्रति मि.ली. / दिन (एस.टी.पी.) – ₹. 1.0 करोड़				
लागत सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट (फेज-I) : 72 x 1 = ₹. 72 करोड़				
लागत सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट (फेज-II) : 40 x 1 = ₹. 40 करोड़				
लागत सीईटीपी (फेज-II) : (40-20) x 2.5 = ₹. 50 करोड़				
लागत 2.5 करोड़ प्रति मि.ली.				
कुल लागत एसटीपी एवं सीईटीपी : (72+40+50) = ₹. 162 करोड़				
<b>रिवर चैनलाइजेशन वर्क</b>				
शहरी क्षेत्र में चैनलाइजेशन लम्बाई – 11 किलोमीटर				
शेष अनलाइन्ड लम्बाई – 15 किलोमीटर				
चैनलाइजेशन लागत प्रति किमी लम्बाई – ₹. 20 करोड़ (औसत रिवर सेक्शन लम्बाई 160 मी x 3 मी)				
चैनलाइजेशन लागत – 11 x 20 = ₹. 220 करोड़				
लागत – अनलाइन क्षेत्र				
रिसेक्सनिंग ऑफ साइट्स एवं ड्रेसिंग ऑफ बेड्स / किमी – ₹. 4 करोड़				
कुल रिसेक्सनिंग ऑफ साइट्स लागत – 15 x 4 = ₹. 60 करोड़				
कुल लागत – 220 + 60 = ₹. 280 करोड़				
रिवरफ्रन्ट सौन्दर्यीकरण – ₹. 50 करोड़				
<b>अनुमानित लागत</b> – संक्षिप्त विवरण				
क्र.सं.	विवरण	लागत (करोड़ों में)	कुल लागत (करोड़ों में)	
		फेज-I	फेज-II	
1.	सीवरेज सिस्टम	-	415	415
2.	सीवरेज उपचारण संयंत्र	72	90	162
3.	रिवर चैनलाइजेशन	-	280	280
4.	रिवर फ्रन्ट सौन्दर्यीकरण	-	50	50
	<b>कुल लागत</b>	<b>72</b>	<b>835</b>	<b>907</b>

#### किनारों पर उपलब्ध भू-भाग पर संभावित सुन्दरतम् उद्यान



**वेपकॉस द्वारा आयड़ विकास का संशोधित प्रस्ताव (मात्र 180 करोड़) :** वेपकॉस द्वारा शहर के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों एवं नगर विकास प्रन्यास के वरिष्ठ अभियन्ताओं के परामर्श उपरान्त आयड़ विकास की मात्र 180 करोड़ खर्च पर एक संशोधित योजना बनाई गई, जिसके महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नानुसार हैं :-

**मुख्य प्रस्ताव एवं लागत :** आयड़ नदी को भरा रखने के लिए चैनलाइजेशन किया जाना। रिटेनिंग वाल के साथ 4 एनीकट पर 81.98 करोड़ रुपये, आयड़ नदी को प्रदूषण मुक्त करने पर 63.58 करोड़ रुपये, लैंडस्केप व नदी सौंदर्यीकरण पर 34.48 करोड़ रुपये लागत शामिल हैं।

**मुख्य बिन्दु :**

- शहर की लाइफ लाइन आयड़ नदी को खूबसूरत बनाने और इसकी सुरक्षा के साथ इसे सुधारने के लिए वेपकॉस लिमिटेड कम्पनी द्वारा रुपये 180 करोड़ की डी.पी.आर. का तकनीकी प्रस्तुतीकरण कर स्वीकृत कराने के लिए आरयूआईडीपी भेजा गया।
- थूर से सूखा नाका तक 26 किमी लम्बाई में आयड़ नदी की राह में 9 स्थानों पर उद्यान, 6 स्थानों पर व्यावसायिक सेन्टर, 3 क्षेत्रों में फुटब्रिज, 6 किमी पैदल भ्रमण स्थलों का निर्माण किया जायेगा।
- नदी का स्वरूप ऐसा बनाया जाएगा कि वह बहती रहे और लोग उसके किनारों पर बनने वाली सड़कों पर घूम सकें।
- रिवर फ्रंट लैंडस्केप : कुल 27 हेक्टेयर क्षेत्र में अलग-अलग स्थानों पर 7 लैंडस्केप साईटें बनाई जायेगी जिसमें 17.6 हेक्टेयर सरकारी और 9.4 हेक्टेयर निजी भूमि का शामिल है।
- 6 किमी लम्बाई में नदी किनारे सड़क जहाँ जमीन मिल रही है, वहाँ इसका निर्माण होगा।
- थूर में 5 हेक्टेयर व अन्य स्थलों पर 4.4 हेक्टेयर भूमि अवाप्त करना।
- नदी के तीन स्थलों पर 100-100 मीटर लम्बाई में कैंटीलीवर वॉक-वे बनाना।

**तीन जोन सीवरेज लाइन :**

आयड़ नदी के दोनों ओर 400 से 800 एमएम की 21.16 किमी लम्बी नई सीवरेज पाइपलाइन बिछाकर इसमें प्रदूषण निस्तारण के कार्य होंगे।

जोन - 1 : दाहिनी तरफ बड़गाँव से लेकसिटी मॉल वाया गुमानियावाला नाला तक 6.05 किमी तक 52 नाले एवं लेकसिटी मॉल से एकलिंगपुरा तक 3.7 किमी. क्षेत्र में 29 नाले कुल 81 नाले जोड़े जायेंगे।

जोन - 2 : बायीं तरफ बेदला से लेकर आयड़ तक 4.56 किमी लम्बाई में सीवरेज लाइन में 21 नाले एवं नालियों को जोड़ा जायेगा।

जोन - 3 : बायीं तरफ आयड़ गांव से पुरोहितों की मादड़ी तक 6.86 किमी लाइन डाली जायेगी जिसमें 36 नाले एवं नालियों का गन्दा पानी जोड़ा जायेगा।

**दो सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट :** प्रथम आयड़ नदी पर गुमानियावाला नाले के पास 10 एमएलडी का एक सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट स्थापित करना। दूसरा 10 एमएलडी का सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट पुरोहितों की मादड़ी में स्थापित होगा।

**एनिकट :** चार स्थानों पर दो मीटर ऊँचाई के एनिकट बनाये जायेंगे जिसमें चलायमान दरवाजे लगाकर वर्षाजल निकासी के अलावा गन्दगी आदि बाहर निकाली जा सकेगी। नदी के एनिकट वाले स्थानों के पास सुरक्षा दीवारें भी बनायी जायेगी।

राष्ट्रीय नदी संरक्षण परियोजना के तहत बनाई गई आयड़ विकास परियोजना जो 180.04 करोड़ रुपये लागत की बनाई गई, उसे 104 करोड़ रुपये तक सीमित किया गया। उपरोक्त सभी बिन्दुओं को यथापूर्व रखते हुए थूर से सूखानाका तक 26 कि.मी. लम्बाई में आयड़ नदी के प्रवाह मार्ग में तीन स्थानों पर सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लान्ट बनाकर गन्दे पानी को उपचारित किया जायेगा। परियोजना की लागत 104 करोड़ रुपये से 90 करोड़ तक लाया गया, जिस पर परियोजना क्रियान्विति अधिकारियों ने सिद्धान्ततः सहमति दी।

**आयड़ विकास के असाधारण लाभ**

- प्रदूषण रहित आयड़ नदी पर्यटन एवं शहरी व्यवसाय का नया केन्द्र होगी।
- समीपवर्ती लोगों को यहाँ की हरियाली से नया ऑक्सीजन हब मिलेगा।
- समीपवर्ती लोगों को अपने भूखण्ड पर कुछ स्थान छोड़कर प्रतिष्ठान स्थापित कर आमदनी के साथ शहरवासियों में रोजगार को बढ़ावा मिलेगा।
- उदयपुर भी वेनिस के रूप में विकसित हो सकेगा।
- समीपवर्ती इलाकों का भूजल स्तर स्वतः बढ़ जायेगा।
- आकर्षण स्थलों के विकास से आयड़ नदी पर्यटन को बढ़ावा देगी।
- पर्यावरण संतुलन बना रहेगा।
- उदयसागर भी प्रदूषण मुक्त हो सकेगा।



**विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तावित परियोजना का स्वरूप**

- कुल लागत - रु. 200 करोड़।
- करीब 52 कि.मी. लम्बाई (26 कि.मी. लम्बी आयड़ नदी के दोनों किनारों की लम्बाई)
- फाइबर रेनफॉर्स प्लास्टिक (एफ.आर.पी.) पाइप की लागत - रु. 100 करोड़
- पाइप स्थापना निर्माण व्यय - रु. 30 करोड़
- पाइप लाइनों व सहायक संरचनाओं के लिए आर.सी. सी. पर व्यय - रु. 20 करोड़
- स्ट्रेनर्स, हरियाली पर व्यय - रु. 25 करोड़
- आकस्मिक व्यय - रु. 25 करोड़

**परियोजना के मुख्य बिन्दु :**

- सीवरेज मात्रा तय कर उपयुक्त साईज की फाइबर रेनफॉर्स प्लास्टिक पाइप लाइन नदी के दोनों किनारों पर बिछाई जावे।
- पाइप को कुछ स्थानों पर आपस में इस प्रकार जोड़ा जावे कि जरूरत पड़ने पर सफाई और मरम्मत कार्य संभव हो सके।
- सभी मौजूदा सीवरेज को इन लाइनों के दोनों ओर से जोड़ा जाये।
- पाइप के जोड़ पर जाली भी लगे ताकि बाहरी अनावश्यक कचरे को वहीं रोका जा सके तथा जाली की स्वचालित यंत्र से स्वतः सफाई की जा सके।
- पाइपलाइन से सीवरेज को उपचार संयंत्रों तक पहुँचाया जावे।
- साफ पानी को पम्प के जरिए आयड़ नदी में उचित स्थान पर छोड़ा जाये।
- दुर्गन्ध और कीटाणुओं से बचने के लिए क्लोरिन की उपयुक्त मात्रा सुनिश्चित हो।
- शुद्ध पानी की उपस्थिति में आयड़ नदी में नौका विहार की भी प्लानिंग संभव है।
- अतिरिक्त पानी कृषि, उद्योग एवं भू-जल पुनर्भरण के लिए इस्तेमाल हो सकता है।
- सीवरेज ट्रीटमेन्ट से प्राप्त खाद का उपयोग कृषि में संभव है।
- आयड़ के दोनों छोर पर उद्यान एवं हरियाली विकसित की जा सकती है।

**श्री प्रदीप शर्मा, फाउण्डेशन सेक्रेटरी, इंजीनियर्स फाउण्डेशन द्वारा प्रस्तावित प्रारूप :** शहर की जान आयड़ नदी के 7 कि.मी. लम्बे बेदला पुलिया से मादड़ी तक के क्षेत्र को साबरमती रिवर फ्रन्ट की तर्ज पर निम्नांकित 7 स्टेप फोलो कर विकसित किया जा सकता है :-

**स्टेप 1 :** बेदला पुलिया से मादड़ी तक सफाई हो : बेदला पुलिया से नवरत्न कॉम्प्लेक्स, पुला पुलिया, गुमानियावाला नाले से सी.पी.एस. पुलिया, आयड़ पुलिया होते हुए मादड़ी तक सफाई हो।

**स्टेप 2 :** आयड़ नदी में विभिन्न स्थानों से गिरने वाले 35 नालों पर एस.टी.पी. लगाए जाए ताकि गन्दगी को अलग कर साफ पानी ही आयड़ में गिरे।

**स्टेप 3 :** बेदला से मादड़ी तक नदी पर चार चेकडेम बनाए जाए। इसमें पुला पुलिया, सी.पी.एस. पुलिया, आयड़ पुलिया और मादड़ी अण्डरपास के यहाँ पानी का स्तर ज्यादा गहरा नहीं होने के चलते चेकडेम बनाए जाए ताकि पानी ज्यादा या कम होने की स्थिति में उसका लेवल बरकरार रखा जा सके।

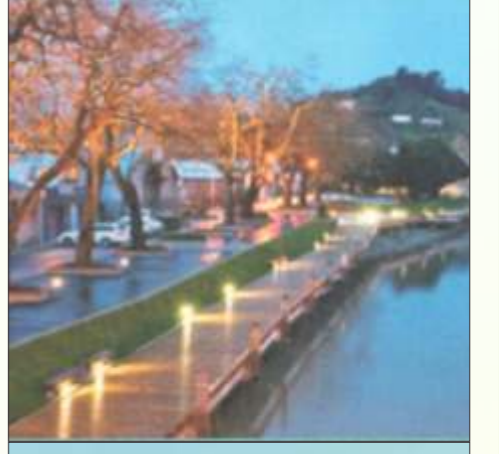
**स्टेप 4 :** तीन स्थानों पर रिवर फ्रन्ट के लिए नदी के किनारे प्लेटफार्म बनाए जाए। इसमें पुला पुलिया, अशोक नगर और आयड़ पुलिया के किनारे प्लेटफार्म विकसित किये जाए।

**स्टेप 5 :** नदी के किनारे अलग-अलग स्थानों पर फाउण्डेशन बनाए जाए।

**स्टेप 6 :** तीनों रिवर फ्रन्ट पर गार्डन विकसित कर पौधे लगाए जाए और मॉर्निंग वॉक, जिम, योग और सांस्कृतिक गतिविधियाँ संचालित हो।

**स्टेप 7 :** अशोक नगर से आयड़ तक लगभग 2 कि. मी. में नावों का संचालन किया जाए। इस क्षेत्र में गहराई ज्यादा होने से आसानी से थेम्स नदी की तर्ज पर नावों का संचालन किया जा सकता है।

**आयड़ किनारे संभावित सुन्दरतम स्थल**



### आर.यू.आई.डी.पी. प्रस्ताव

आर.यू.आई.डी.पी. (राजस्थान अरबन इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेन्ट प्रोजेक्ट) 120 करोड़ का आयुज सौन्दर्यीकरण हेतु स्वीकृत हुआ, जिसका विवरण निम्नानुसार है :-

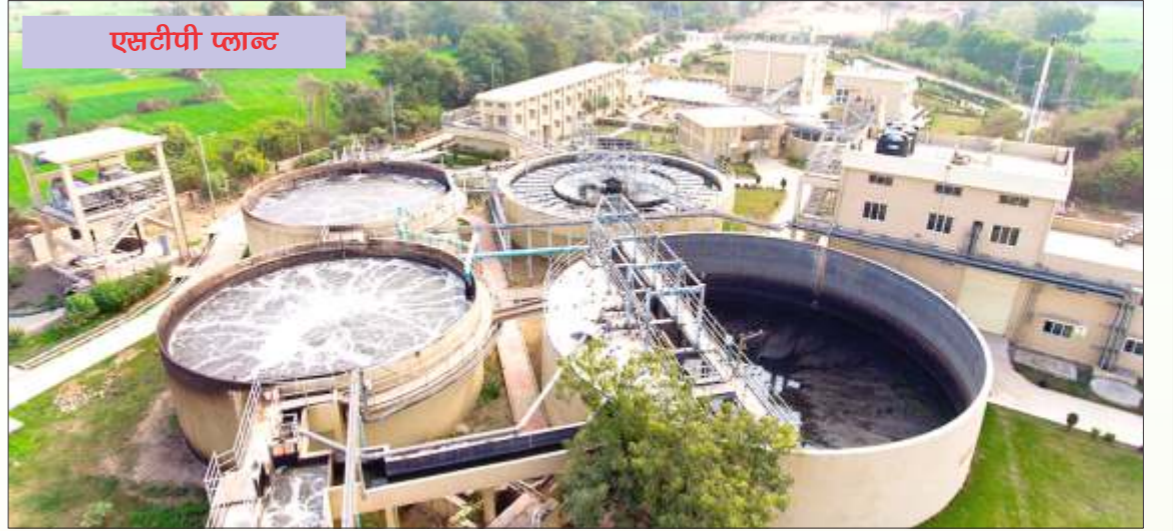
- इसके अन्तर्गत 70 करोड़ रुपये की लागत से 22 कि.मी. लम्बी सीवरेज ट्रंक लाइन बिछाई जायेगी जिसमें 40 छोटे एवं बड़े नालों का सीवरेज एवं गन्दा पानी समाहित कर शुद्धीकरण यंत्र तक ले जाया जायेगा। यह कार्य तीन चरणों में होगा :-
- प्रथम** : तीन रिवर फ्रन्ट – बेदला पुलिया से मादड़ी के मध्य साबरमती रिवर फ्रन्ट की तर्ज पर विकसित किये जायेंगे। बेदला से नवरत्न कॉम्प्लेक्स एवं पुला पुलिया, गुमानियावाला नाला से सीपीएस पुलिया एवं आयुज पुलिया से मादड़ी तक।
- द्वितीय** : एक एसटीपी स्थापित कर करीब 35 नालों का पानी साफ कर आयुज नदी में पुनः डाला जायेगा।
- तृतीय** : चार चेकडेम पुला पुलिया, सीपीएस पुलिया, आयुज पुलिया एवं मादड़ी अन्डरपास पर बनाये जायेंगे। यहाँ पानी की गहराई बहुत अधिक नहीं होती है। इस प्रकार पानी के बहाव को नियंत्रित किया जावेगा।
- तीन प्लेट फार्म** : रिवर फ्रन्ट : पुला पुलिया, अशोक नगर एवं आयुज पुलिया के पास रिवर फ्रन्ट बनाये जाये।
- नदी के किनारों पर चेकडेम के पास फव्वारें स्थापित किये जाये जिससे जल में ऑक्सीजन का समावेश होने से पानी में दुर्गन्ध नहीं बढ़ेगी।
- प्रातःकालीन भ्रमण, योग एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए उद्यानों के विकास के साथ भारी संख्या में पौधारोपण हो।
- नदी पर चेकडेम के पास दो कि.मी. लम्बे नदी पाट में नावें संचालित की जावे।
- आयुज में बिछाई जा रही सीवरेज लाइन के सहारे-सहारे पाथ-वे बनाया जावे।

### उदयपुर स्मार्ट सिटी कम्पनी द्वारा प्रस्ताव (वर्ष 2021) :

- रु. 49.2 करोड़ लागत
- आयुज – पुला से सेवाश्रम तक 5 कि.मी.
- 20 फरवरी, 2021 से 19 अगस्त, 2022
- आयुज चौड़ाई – 100 से 150 फीट
- आर.यू.आई.डी.पी. द्वारा नदी के दोनों छोर पर सीवरेज लाइन बिछाकर गंदे पानी को उपचारित कर आयुज नदी में पुनः डालना। पानी साफ रहेगा और नदी भी अलग दिखेगी।
- उपचारित पानी नदी के बीचों-बीच 18 फीट नाले में बहेगा।
- आर.यू.आई.डी.पी. द्वारा दो साइट में डाली गई सीवरेज लाइन के ऊपर पाथ-वे बनेगा।
- पानी के आस-पास वाले छोर पर आधा पक्का व आधा कच्चा होगा।
- पक्के वाले स्थान पर बिजौलिया पत्थर व कच्चे स्थान पर देशी घास लगाई जाएगी।
- स्मार्ट सिटी की देख-रेख में होगा कार्य, आधा पैसा नगर विकास प्रन्यास व आधा स्मार्ट सिटी खर्च करेगी।
- आयुज नदी में वर्ष-पर्यन्त शुद्ध पानी मुहैया हो और यह सदा नीर रहे।
- आयुज में बहते सीवरेज के शुद्धीकरण का फायदा भूजल स्तर को बढ़ाने में ही नहीं मिलेगा बल्कि शहर की खूबसूरती भी बढ़ जायेगी।
- प्राकृतिक स्वरूप बरकरार रखने के साथ आहड़ सभ्यता संपदा का पूरा ख्याल रखा जायेगा।

**जल शोधन संयंत्र स्थापना एवं भावी आवश्यकता** : मनवा खेड़ा एसटीपी प्लांट, उदयपुर शहर में प्रथम एसटीपी प्लांट है, जो कि उदयपुर की पूर्व दिशा में आयुज नदी के किनारे मनवाखेड़ा गांव में हिन्दुस्तान जिंक द्वारा स्थापित किया गया। 20 एमएलडी क्षमता के एसटीपी प्लांट का निर्माण, 25 वर्षों तक संचालन, रखरखाव और हस्तान्तरण का लेकर नगर विकास प्रन्यास, नगर निगम तथा हिन्दुस्तान जिंक के बीच त्रिपक्षीय अनुबंध निम्न शर्तों के आधार पर हुआ –

- हिन्दुस्तान जिंक 25 वर्षों तक सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लांट चलाकर आयुज के 20 एमएलडी उपचारित जल का अपने व्यापार के लिए इस्तेमाल करेगा।
- सीवरेज परियोजना को लेकर 25 वर्षों का त्रिपक्षीय समझौता नगर विकास प्रन्यास, नगर निगम और हिन्दुस्तान जिंक के बीच हुआ।
- हिन्दुस्तान जिंक 26 करोड़ रुपये लागत का अत्याधुनिक तकनीक आधारित सीवरेज ट्रीटमेन्ट प्लांट अपने खर्चे पर बनाएगा। इसके अलावा 10 करोड़ रुपये जल उपचारण के अन्य कार्यों पर व्यय करेगा।
- हिन्दुस्तान जिंक प्रतिवर्ष मार्च से जून के बीच उपचारित जल की 15 प्रतिशत जल राशि आयुज नदी में खुली छोड़ेगा ताकि आसपास क्षेत्र के पेयजल स्रोतों और भू-जल का पुनर्भरण होता रहे।
- सीएसआर के तहत शहर विकास के लिए एक करोड़ रुपये 25 वर्षों तक हिन्दुस्तान जिंक नगर निगम को देता रहेगा। नगर निगम के साथ जिला कलक्टर की कमेटी बनेगी और यह कमेटी राशि कहां खर्च करनी है, इसके लिए फैसले करेगी।
- हाथीपोल से 1200 एमएम की मुख्य सीवरेज ट्रंक लाइन डालने के लिए हिन्दुस्तान जिंक 15 करोड़ रुपये देगा।
- हिन्दुस्तान जिंक सीवरेज लाइनों की मरम्मत के लिए शुरू में 20 लाख रुपये प्रतिवर्ष के हिसाब से पांच वर्षों तक, फिर 30 लाख रुपये प्रतिवर्ष के हिसाब से पांच वर्षों तक, फिर शेष 15 वर्षों तक 40 लाख रुपये प्रतिवर्ष नगर निगम को देगा।
- प्रतिवर्ष आयुज में ट्रीटमेन्ट प्लांट से निकलने वाली खाद से 75 लाख रुपये की आय नगर निगम प्राप्त करेगा।
- जलदाय विभाग द्वारा 25 वर्षों में बढ़ाई जाने वाली पेयजल दर की 40 प्रतिशत राशि जिंक परियोजना शुरू होने के पाँच वर्ष बाद से नगर निगम को चुकाएगा।
- 25 वर्षों बाद प्लांट चालू हालत में नगर निगम को हस्तान्तरित किया जायेगा।
- नगर निगम प्लांट को 25 वर्षों बाद अपने किसी भी तरीके से चलाने के लिए स्वतंत्र होगा।
- सीवरेज प्लांट पर प्रतिवर्ष 3 करोड़ रुपये का होने वाला मरम्मत का खर्च भी 25 वर्षों तक हिन्दुस्तान जिंक वहन करेगा।
- हिन्दुस्तान जिंक जमीन खरीदकर नगर विकास प्रन्यास को देगा और नगर विकास प्रन्यास उसे एक रुपये प्रति वर्गमीटर की दर से लीज पर आवंटित करेगा।
- कोई भी विवाद होने पर प्रकरण पंच निर्णायक के तौर पर निस्तारित होने के लिए संभागीय आयुक्त के पास जाएगा।



एसटीपी प्लांट



एसटीपी प्लांट

### आयुज विकास के अन्य बिन्दु

आयुज नदी के किनारे सुनियोजित रूप से बसे भूपालपुरा, अशोक नगर, सुभाषनगर आदि के पास आयुज नदी का पाट चौड़ा था। यहाँ कुछ संस्थाओं एवं व्यक्तियों के दबाव से या राजस्व प्राप्ति के लिए भूखण्ड काटकर या तो आवंटित कर दिये या नीलाम कर दिये। यह असावधानी किसी की भी रही हो, नदी के किनारे इन बस्तियों की अंतिम सड़क के आगे स्थित भूखण्डों पर आवासीय निर्माण हो गये और नदी अतिक्रमित होती रही। घरों के नाले उसमें डाल दिये गये। समय के साथ यह नदी शुद्ध पानी के स्थान पर गन्दे नाले के रूप में परिवर्तित होती चली गई। शहर में प्रशासक एवं जनप्रतिनिधि बदलते गये। नदी वर्ष-दर-वर्ष और प्रदूषित एवं अतिक्रमणित होती गई। अब इसे वेनिस के रूप में बदलना बहुत कठिन है, हालांकि नदी किनारे बसे शहरवासियों से सहयोग मिले तो यह असंभव भी नहीं है।



### आयुज पर्यटकों के आकर्षण का नया केन्द्र

उदयपुर में प्रतिवर्ष देशी-विदेशी लगभग दस लाख पर्यटक आते हैं। इसमें लगभग आठ लाख देशी और 2 लाख विदेशी शामिल होते हैं। अनेक झीलों के फलस्वरूप उदयपुर शहर पहले से ही पर्यटकों के मध्य मशहूर है, ऐसे में अगर आयुज के किनारे रिवर फ्रन्ट, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, होटल, रेस्टोरेन्ट, मनोरंजन केन्द्र, फूड हब्स आदि का नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास, स्थानीय नागरिकों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के सहयोग एवं सक्रिय भागीदारी से विकास होता है तो यह पर्यटकों को और भी ज्यादा आकर्षित करेगा एवं पर्यटकों की संख्या में तीव्र वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोगों के लिए भी फतहसागर के बाद यह दूसरा बेहतरीन पर्यटन केन्द्र विकसित हो सकता है। साथ ही अपनी खूबसूरत शाम के लिए प्रसिद्ध उदयपुर में आने वाले पर्यटक रिवर फ्रन्ट पर भी अपनी शाम मनोरंजन के साथ सुगमता से गुजार सकेंगे एवं शुद्ध खाद्य सामग्री का भरपूर लुत्फ उठा सकेंगे। आयुज के विकास में इसके किनारे रहने वाले शहरवासियों की भागीदारी सुनिश्चित करना इसके आधुनिक विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

- हिन्दुस्तान जिंक एसटीपी क्षेत्र में अपनी प्रयोगशाला स्थापित करेगा, जिसमें उपचारित जल के नमूनों की जांच होगी और उसके पैमाने राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल तथा केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के अनुसार होंगे।
- हिन्दुस्तान जिंक एसटीपी क्षेत्र में आधारभूत विकास के तहत सड़कें, नालियाँ, प्रशासनिक भवन, जलापूर्ति, शौचालय, चारदीवारियाँ आदि बनवाएगा।
- रुपये 2.5 करोड़ की बैंक गारन्टी रखकर हिन्दुस्तान जिंक 18 माह में एसटीपी बनाएगा। एकलिंगपुरा में एसटीपी तक मनवाखेड़ा से अतिरिक्त डाली जाने वाली ट्रंक लाइन का खर्च भी हिन्दुस्तान जिंक ही वहन करेगा।

उपरोक्त अनुबन्ध प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए लेखक की ओर से निवेदन है कि हिन्दुस्तान जिंक को आयड़ नदी के सौन्दर्यीकरण एवं नियमित बहाव को कायम रखने हेतु शुद्धीकरण उपरान्त संपूर्ण जल को आयड़ नदी में पुनः डाल देना चाहिये। हिन्दुस्तान जिंक की ओर से उदयपुर की जनता को सी.एस.आर. के अन्तर्गत इससे बड़ी सेवा नहीं हो सकती। यह हिन्दुस्तान जिंक की ओर से आयड़ नदी सौन्दर्यीकरण के लिए अनुपम भेंट होगी।

**दूसरे एसटीपी की आवश्यकता :** शहर के संपूर्ण गन्दे जल (करीब 60 एमएलडी) को उपचारित करने एवं आयड़ नदी को वर्षभर जलमय रखने हेतु छोटी एवं बड़ी क्षमता के एसटीपी प्लांट उपयुक्त स्थान पर स्थापित करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त मनवाखेड़ा में पूर्व में स्थापित 20 एमएलडी एसटीपी प्लांट की उपचारित क्षमता 40 एमएलडी तक बढ़ायी जानी चाहिये एवं भविष्य की आवश्यकता के अनुसार एक अतिरिक्त 20 एमएलडी क्षमता का एसटीपी प्लांट वहाँ बनाया जाना चाहिये।

**एसटीपी के लिए चिह्नित स्थान :** बेदला पुलिया के बायीं ओर सरकारी भूमि, गुमानियावाला नाला एवं आयड़ नदी के जंक्शन के पास, आयड़ नदी की पुलिया आगे पूर्वी क्षेत्र पर ओरियन्टल पैलेस और इससे आगे आयड़ के पास महासतिया क्षेत्र।



**औद्योगिक वेस्ट वाटर प्लांट :** आयड़ नदी के अंतिम बहाव क्षेत्र खरबड़िया या भोईयों की पंचोली के पास उचित स्थल पर औद्योगिक वेस्ट वाटर प्लांट (सीईटीपी) का निर्माण कर औद्योगिक क्षेत्र से प्राप्त रसायनयुक्त पानी को शुद्धीकरण उपरान्त उदयसागर में छोड़ा जाये।



**सीवरेज लाइन एवं एनिकटों का निर्माण :** आयड़ नदी में स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय कल-कल करता शुद्ध जल बहता था। समय के साथ नदी के आस-पास नवीन बस्तियाँ एवं विरासत में मिले शहरकोट के भीतर सड़क के दोनों तरफ नालियाँ बनने से गन्दा पानी सभी तरफ से आयड़ नदी में समाता रहा और यह नदी गन्दे पानी के नाले के रूप में परिवर्तित हो गई। वर्षभर नदी में गन्दा पानी, सीवरेज एकत्रित होता रहा। जल एवं वायु प्रदूषित होते गये और यह नदी बीमारियाँ फैलने का बड़ा स्रोत बन गई। शहर के विस्तार के साथ इसमें समाने वाले नालों से गन्दगी और बढ़ती गई। इन गन्दे नालों के पानी से नदी तट पर बसे किसानों ने सब्जियाँ उगानी प्रारम्भ कर दी। नदी का गन्दा एवं सीवरेज धीरे-धीरे विरासत में मिली उदयपुर के प्रमुख जल स्रोत उदयसागर को भी प्रदूषित करती गई एवं उसका निर्मल जल पीने योग्य नहीं रहा। इस प्रकार विरासत में मिले दो मुख्य जल स्रोत आयड़ नदी एवं उदयसागर को हम पिछले कई वर्षों से प्रदूषित करते गये।

पिछले दो-ढ़ाई दशक से आयड़ को वेनिस नदी की तरह स्वच्छ बनाने का सपना संजोया गया, लेकिन आयड़ का विकास उस उच्च अभिलाषा के अनुरूप नहीं हो रहा है, फिर भी कतिपय कार्यों का उल्लेख करना उचित होगा।

- आयड़ नदी में गिरने वाले करीब 139 नालों को नदी के दोनों किनारों पर करीब 125 करोड़ रुपये लागत से 15 कि.मी. लम्बी सीवरेज ट्रंक लाइन से जोड़ा जा रहा है। इससे आयड़ का स्वरूप थोड़ा अवश्य निखरेगा।
- इन सीवरेज ट्रंक लाइनों में गन्दा सीवरेज पानी बहे और इसे आगे ले जाकर सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट में ट्रीट किया जाये। शुद्धीकरण उपरान्त पानी नदी में पुनः छोड़ा जाये।
- आयड़ नदी सौन्दर्यीकरण के तहत नदी को वर्षभर पानी से भरा रखने की दृष्टि से अहिंसापुरी शमशान एवं सेवाश्रम पुलिया के मध्य 6 स्थानों पर अहिंसापुरी शमशान, पुला पुरानी पुलिया, अशोक नगर शमशान, सुभाष नगर-प्रथम (मन्दिर से पश्चिम की ओर), सुभाष नगर-द्वितीय (मन्दिर से पूर्व की ओर, पासपोर्ट कार्यालय के पास) एवं सुभाष नगर-तृतीय (मन्दिर से पूर्व की ओर शमशान के पास) एनिकट बनाये गये। इनके निर्माण में करीब 5 करोड़ रुपये लागत आई जिनमें शुद्ध या शुद्धीकरण उपरान्त पानी भरा जाना प्रस्तावित है।





**पुलां पुलिया एनिकट : इसके वर्तमान लोहे के गेट से पानी को पूर्णतया रोकना संभव नहीं है**

- इन एनिकटों पर अच्छी वर्षा के बाद तकनीकी परामर्श के अनुसार लोहे के गेट लगाकर पूर्णतया भरा रखने हेतु प्रयास किये जाने चाहिये।
- जिस उद्देश्य से ये एनिकट बनाए गए, वह पूरा होता नहीं दिखा। वर्षाकाल के बाद ये एनिकट जलीय घास एवं सीवरेज पानी से भर गये हैं। पानी का बहाव नहीं होने पर भरा हुआ स्थिर पानी दुर्गन्ध फैलाता है। भू-जल और वायु प्रदूषण पर विपरीत प्रभाव के साथ आसपास के रिहायशी इलाकों में मौसमी बीमारियों का प्रकोप भी बढ़ने का अंदेशा भी रहता है।
- एनिकटों को भरने से पूर्व इनकी साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिये। साथ ही नियमित रूप से इनकी सफाई के साथ जलीय घास निकालना आवश्यक है। पानी की दुर्गन्ध पर नियंत्रण के लिए उसका बदलाव एवं बहाव के साथ ही जलीय जीव भी छोड़ने होंगे।
- इन एनिकटों को समान रूप से 4-5 फीट तक गहरा किया जाना चाहिये। एनिकटों के पास सीवरेज युक्त गन्दे पानी को साफ करने हेतु छोटे शुद्धीकरण यंत्र लगाकर स्वच्छ जल इन एनिकटों में छोड़ना चाहिये जिससे नदी तल एवं आसपास की बावड़ियाँ, नलकूप आदि शुद्ध जल से रिचार्ज हो सके।
- आयड़ को सीवरेज एवं गन्दे पानी से मुक्त किया जाए ताकि एसटीपी से निकलने वाले शुद्ध पानी से ये एनिकट वर्षभर भरे रहे एवं इनसे पानी निरन्तर बहता रहे।
- इन एनिकटों पर गेट लगाने में कोई तकनीकी कठिनाई आती है तो चिकलवास बंधे की तर्ज पर पानी की निकासी की व्यवस्था की जा सकती है। चिकलवास बंधे के पीछे स्थित चिकलवास तलाई को वर्षों से भरा हुआ देखा गया है।
- इन एनिकटों में छोटी/पेडस्टल नावें संचालित करते हुए संचालक फर्म को इसकी सफाई व्यवस्था की पूर्ण जिम्मेदारी दी जा सकती है।

**विशिष्ट डिजाइन के गेट :** विशेष रूप से डिजाइन किये गये गेट के माध्यम से इन एनिकटों के पानी को रोका जाना चाहिये। ये गेट अति-प्रवाह अर्थात् फतहसागर, स्वरूपसागर के ओवरफ्लो होने पर 90 डिग्री तक घूमने में सक्षम होते हैं, ऐसे में ओवरफ्लो की स्थिति में नदी में बहता पानी आसानी से बह सकेगा एवं शहर के दूसरे हिस्सों में जल प्लावन की समस्या भी उत्पन्न नहीं होगी।

**इन्फिल्ट्रेशन टेस्ट :** आयड़ नदी के एनिकट अहिंसापुरी श्मशान से ठोकर चौराहा तक क्षेत्र के पेटे का इन्फिल्ट्रेशन टेस्ट कराया जाना चाहिए जिससे यह पता लग जायेगा कि नदी के पेटे से वर्ष में कितना पानी रिस जायेगा। इस टेस्ट से यह साफ हो जायेगा कि आयड़ नदी में बदलाव व पानी से लबालब रखने की परियोजना की आगे की तस्वीर क्या होगी? क्या वर्षभर एस.टी.पी. से प्राप्त शुद्ध जल या देवास बेसिन से अतिरिक्त पानी की आवश्यकता होगी, इनको भरा रखने के लिए।



**अशोक नगर श्मशान के पास स्थित एनिकट : सीवरेज/गन्दा पानी बहते हुए**



**अशोक नगर श्मशान के पास स्थित एनिकट : वर्षाकाल में पानी बहते हुए**

**सुभाषनगर एनिकट : मन्दिर से पश्चिम की तरफ - पूर्णतया रिक्त अवस्था में**



श्री महेश शर्मा, झील विशेषज्ञ का मत है कि शहरी क्षेत्र में रिवर सेक्शन संकड़ा है, इसलिए वहाँ एनिकट नहीं बनाये जाए। चूंकि पूर्व में 1973 की बाढ़ के बाद चार एनिकट सरकार की विशेषज्ञ समिति ने तुड़वाए थे।



**सुभाषनगर एनिकट : मन्दिर से पश्चिम की तरफ - वर्षाऋतु में पानी बहते हुए**



**सुभाषनगर एनिकट-द्वितीय, मन्दिर से पूर्व की ओर (पासपोर्ट कार्यालय के पास) : रिक्त अवस्था में**



**सुभाषनगर एनिकट-द्वितीय, मन्दिर से पूर्व की ओर (पासपोर्ट कार्यालय के पास) : वर्षाऋतु में पानी बहता हुआ**



सुभाषनगर एनिकट-तृतीय, मन्दिर से पूर्व की ओर (रमशान के पास) : रिक्त अवस्था में



सुभाषनगर एनिकट-तृतीय, मन्दिर से पूर्व की ओर (रमशान के पास) : वर्षाऋतु में पानी बहते हुए

**आयड़ नदी का सौन्दर्यीकरण** : उदयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा स्मार्ट सिटी परियोजना में एनिकट के अतिरिक्त आयड़ नदी सौन्दर्यीकरण कार्य हेतु 49.49 करोड़ रुपये स्वीकृत किये गये हैं। इसके अन्तर्गत आयड़ नदी पर आयड़-सुभाषनगर काजवे के पूर्व 260 मीटर लम्बे क्षेत्र के सौन्दर्यीकरण के तहत 2 करोड़ की लागत से इको पाथ-वे, मनोरंजन-मौज मस्ती के लिए प्रोमेनेड, सड़क, पब्लिक पार्क आदि के लिए दोनों किनारों पर भराव डाला गया। इससे नदी की जल बहाव क्षमता में कमी आई एवं वर्षा ऋतु के दौरान काजवे पुलिया के नीचे से (पाइप के माध्यम से) आयड़ नदी के पानी की पूर्ण रूप से निकासी नहीं हो पाई तथा नदी का यह पानी काजवे पुलिया के ऊपर होकर बहने लगा।



आयड़ - सुभाषनगर काजवे



आयड़ - सुभाषनगर पुलिया (काजवे) के ऊपर होकर बहता पानी  
“आयड़ नदी है, नाला नहीं”

#### आयड़ सौन्दर्यीकरण :

- आयड़ नदी के काजवे से 260 मीटर लम्बाई में सौन्दर्यीकरण किया गया।
- 113.99 मीटर चौड़ी नदी के तल को 9 मीटर में सीमित कर दिया।
- भराव डालकर इसकी गहराई 5 से 6 फीट तक कम कर दी गई।
- नदी के दोनों किनारों पर मिट्टी डालकर घास लगाई गई।
- तेज बहाव क्षेत्र में पत्थर की फर्शी लगा दी गई।
- मलबा डालकर पेटे में दोनों ओर पत्थर की फर्शियाँ बिछाकर पाथ-वे बनाया गया।

#### वर्ष 2022 में सीमित बहाव से हुए नुकसान :

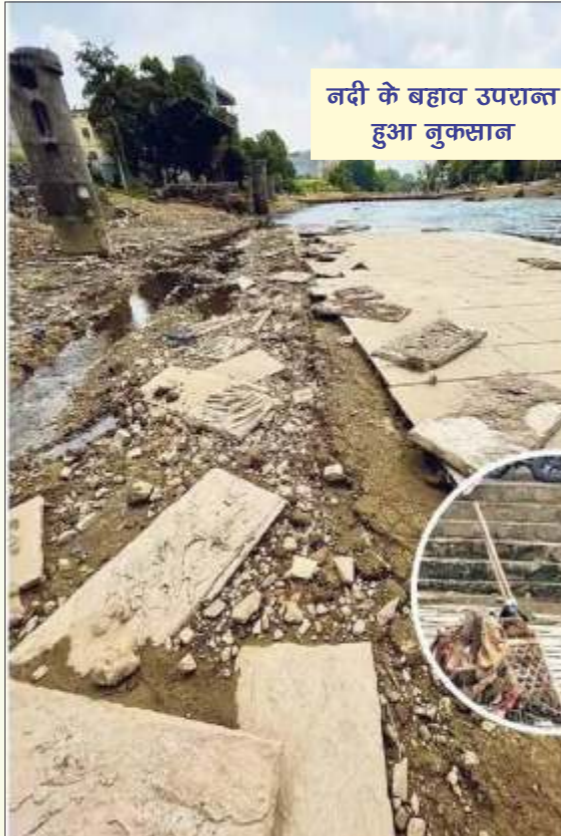
- नदी के तल एवं दोनों किनारों पर बने पाथ-वे की फर्शियाँ उखड़ कर 10-20 फीट दूर तक बह गई।
- इस पर लगाये गये सुन्दर पेड़-पौधे मय ट्री-गार्ड बह गये।
- बैठने के लिए लगाई गई कुर्सियों के साथ पत्थर हट गये।
- नदी में सीवरेज को रोकने के लिए बिछाई गई पाइप में लीकेज हो गया और नदी में गन्दा पानी पुनः घुलने लगा।
- दोनों किनारों पर झाली गई मिट्टी भी काफी हद तक बह गई।



आयड़ सौन्दर्यीकरण का प्रस्तावित प्रारूप



निर्माणाधीन पार्क



नदी के बहाव उपरान्त हुआ नुकसान



आयड़ नदी का वेग वर्ष 1973, 2006, 2018 एवं 2022 में इतना तीव्र रहा था कि नदी में कोई भी कच्चा निर्माण इसके सामने नहीं ठहर पाया, चूंकि “आयड़ नदी है नाला नहीं”, अतः इसे साबरमती के तर्ज पर विकसित किया जावे, न कि अमानीशाह नाले (जयपुर) की तर्ज पर।

वर्तमान में नगर निगम, नगर विकास प्रन्यास एवं स्मार्ट सिटी लिमिटेड के तहत स्वीकृत राशि एवं भविष्य में नियोजित राशि के तहत उपरोक्त प्रकार के कार्य नहीं करवाकर यदि निम्नलिखित कार्यों पर ध्यान देंगे तो उत्तम रहेगा :-

- नदी के दोनों किनारों पर राजस्व रिकॉर्ड के अनुसार सभी अतिक्रमणों को हटाना एवं यदि मुआवजा देना पड़े तो स्वीकृत राशि में से उसका भुगतान हो। चिह्नित पूजा स्थलों को उचित स्थान पर हस्तान्तरित किया जावे।
- आयड़ नदी के शहरी क्षेत्र के दोनों किनारों को प्राथमिकता के आधार पर पर्याप्त नींव के साथ आरसीसी की मजबूत दीवार बनाकर भावी अतिक्रमणों से बचाना।

- दोनों किनारों पर जहां स्थान उपलब्ध हो या अधिग्रहण किया जा सके, वहां पर पक्की आरसीसी की सड़क बना दें।
- सभी एनिकटों पर पानी रोकने के लिए गेट लगाये जावे।
- सभी एनिकटों के पीछे के स्थल को करीब 2-3 फीट समान रूप से गहरा करने साथ उसे झाड़ियों एवं कचरे से मुक्त किया जावे।
- बचे हुए गन्दे सीवरेज नालों को सीवरेज लाइन से जोड़ा जावे।

**गुमानियावाला नाला सौन्दर्यीकरण एवं वर्तमान स्थिति :** शहर के मध्य स्थित 800-1000 मीटर लम्बा गुमानियावाला नाला वर्षाकाल में अति सुन्दर लगता है। रात्रिकालीन समय में इसका स्वरूप और भी बेमिसाल है। इस नाले के सौन्दर्यीकरण के लिए अनेक निर्माण कार्य नगर विकास प्रन्यास, उदयपुर द्वारा पिछले कुछ वर्षों में किये गये, जिनमें से मुख्य निम्नांकित हैं :-

- नगर विकास प्रन्यास पुलिया •नगर विकास प्रन्यास पुलिया के पास रपट
- मीरा पार्क •नाले के मध्य गहरी वाटर चैनल •नाले के दोनों तरफ सीवरेज हेतु नालियाँ।

इन सभी कार्यों से निःसन्देह गुमानियावाला नाले की सुन्दरता में वृद्धि का विशेष उद्देश्य रहा होगा। वर्षाकाल में जब फतहसागर एवं स्वरूपसागर की रपट से बहता पानी नगर विकास प्रन्यास पुलिया की रपट से टकराकर झरने के रूप में गिरता है तो अति मनोहारी लगता है। फिर शांत रूप से वाटर चैनल के ऊपर से बहता हुआ पंचवटी एवं सरदारपुरा पुलिया के नीचे की ओर होते हुए आलू फैक्ट्री रपट के नीचे व ऊपर से तीव्र गति के साथ अलीपुरा के अंतिम छोर तक पहुंच कर आयड़ नदी में मिलता है। इसके विपरीत वर्षाकाल के कुछ महीनों बाद इसकी दशा देखकर मन काफी व्यथित होता है।



**रात्रि में चमकती दोनों पंचवटी पुलिया**



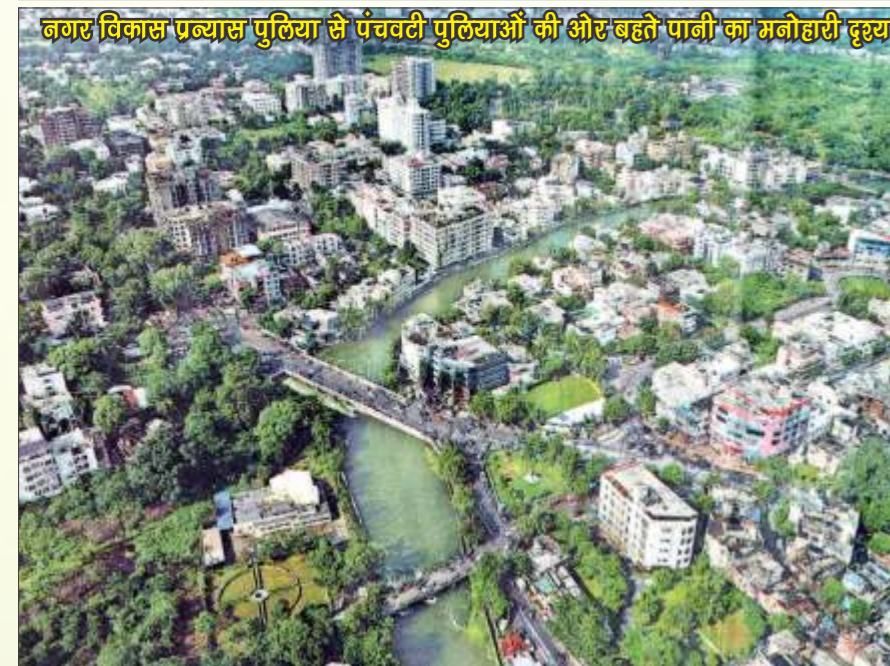
**नगर विकास प्रन्यास की पुरानी पुलिया के ऊपर से ओवरफ्लो होते हुए पानी का विहंगम स्वरूप**



**स्वरूपसागर से - मोती मगरी एवं नगर विकास प्रन्यास पुलिया की ओर बहता पानी**



**पंचवटी की दोनों पुलिया, सरदारपुरा पुलिया एवं आलू फैक्ट्री पुलिया से बहते पानी का भव्य स्वरूप**



**नगर विकास प्रन्यास पुलिया से पंचवटी पुलियाओं की ओर बहते पानी का मनोहारी दृश्य**

**नगर विकास प्रन्यास पुलिया :** चेटक सर्कल से फतहसागर एवं सहेलियों की बाड़ी को जोड़ने वाले प्रमुख मार्ग के गुमानियावाला नाला पर बनी पुलिया का स्तर नीचा होने से वर्षाकाल में स्वरूपसागर एवं फतहसागर के ओवरफ्लो का पानी अधिक मात्रा में आने पर प्रतिवर्ष कुछ समय के लिए यह पुलिया जलमग्न हो जाती थी एवं यह मार्ग अवरुद्ध हो जाता था। इस पर शहरवासियों की ओर से निरन्तर यह मांग की जा रही थी कि इस पुलिया के स्थान पर बड़े मेहराब वाली ऊँची पुलिया का निर्माण किया जावे, जिससे उक्त झीलों से आने वाले ओवरफ्लो पानी से यह रास्ता अवरुद्ध न हो।



**मीरा पार्क के सामने स्थित मोती मगरी एवं नगर विकास प्रन्यास पुलिया पर वर्षाकाल के दौरान ओवरफ्लो पानी**



इस मांग एवं आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नगर विकास प्रन्यास द्वारा पुरानी पुलिया को ध्वस्त कर 3.5 करोड़ रुपये की लागत से 3.5 मीटर ऊँची 70 मीटर लम्बी एवं 15 मीटर चौड़ी नई पुलिया जिसमें 5 पीलर एवं 6 मेहराब जो करीब 5-7 मीटर की दूरी पर स्थित है, का निर्माण किया गया है। इस पुलिया के साथ पश्चिम की ओर रपट का निर्माण भी किया गया है।

**निर्माणाधीन नगर विकास प्रन्यास पुलिया**



**नवनिर्मित नगर विकास प्रन्यास पुलिया**

**पुलिया के साथ रपट का निर्माण** : नगर विकास प्रन्यास पुलिया के निर्माण के साथ इसके पश्चिमी छोर की कुछ दूरी पर गुमानियावाला नाले के पेटे से 3-4 फीट ऊँचा वीयर बनाकर झरने का रूप देने का प्रयास किया गया, यह प्रशंसनीय है एवं निःसन्देह स्वरूप सागर और फतहसागर का ओवरफ्लो पानी जब झरने के रूप में गिरता है तो इसका सुन्दर स्वरूप बहुत ही मनोहारी होता है तथा इसके बाद यह पानी शांत भाव से पुलिया के नीचे से बहता हुआ पंचवटी पुलिया की ओर बढ़ जाता है।



**न.वि.प्र. पुलिया पर निर्मित रपट - वर्षाकाल के बाद काई, अवांछित खरपतवार एवं प्लास्टिक अवशेष**



**न.वि.प्र. पुलिया - रपट से बहता पानी मनोहारी स्वरूप**



**स्वरूपसागर एवं फतहसागर के ओवरफ्लो पानी का संगम स्थल : न.वि.प्र. पुलिया एवं रपट एक विशाल स्वरूप**

इस रपट से पुलिया के अपस्ट्रीम में गुमानियावाला नाले का बेडस्लोप ऊँचा होकर पानी के बहाव क्षेत्र में अवरोध पैदा हो गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि गुमानियावाला नाले का पैंदा ऊँचा होने से यदि स्वरूपसागर के चारों गेट सीसारमा नदी में अधिक जल आवक होने पर चार फीट तक एक साथ खोल दिये गये तो सीनियर टाउन प्लानर कार्यालय के पास बनी मोती मगरी पुलिया पानी में डूब सकती है और नाले का पानी मीराबाई सर्कल पर फैलने के उपरान्त नवनिर्मित पुलिया के ऊपर से बह सकता है। इसके अलावा पानी के दबाव के चलते सड़क व पुलिया का ऊँचाई वाला क्षेत्र टूट भी सकता है। वर्ष 1973 एवं 2006 में आई बाढ़ के स्तर का पानी आने पर नवनिर्मित पुलिया के पूर्ण रूप से डूबने की संभावना रहेगी। काश! इस पुलिया की ऊँचाई, रपट के उपरान्त नाले के बेडस्लोप को ध्यान में रखते हुए रखी जाती, तो विषम परिस्थितियों में भी यह पुलिया नहीं डूबती। विशेषज्ञों के अनुसार नाले के बेड स्लोप पर बनी रपट की उपयोगिता एवं स्थान पर पुनः विचार किया जाना चाहिए। यह रपट मोती मगरी पुलिया के दोनों तरफ पर्याप्त दूरी पर बनायी जा सकती थी एवं इसे दूर से देखा भी जा सकता था।



**न.वि.प्र. पुलिया से पूर्व - मोती मगरी पुलिया से बहता पानी**



**मोती मगरी एवं न.वि.प्र. पुलिया के मध्य बहती जलधारा**

गुमानियावाला नाले पर बनी इस रपट पर फतहसागर एवं स्वरूपसागर से पानी की आवक नहीं होने की स्थिति में पानी का बहाव एवं बदलाव अवरुद्ध हो जाने से काई जमने के साथ पानी से बदबू भी आने लगती है। रपट के नीचे काई के साथ कचरा, प्लास्टिक अवशेष, पूजन सामग्री आदि बिखरी हुई देखी जा सकती हैं। गुमानियावाला नाले को और अधिक खूबसूरत एवं दर्शनीय बनाने के उद्देश्य से नगर विकास प्रन्यास ने करीब 1.75 करोड़ रुपये खर्च किये।

**मीरा पार्क** : दैत्य मगरी, पंचवटी एवं मोहता पार्क से आने वाले मार्गों के मिलन स्थल तथा नगर विकास पुलिया से पूर्व एक सुन्दर पार्क का निर्माण नगर विकास प्रन्यास द्वारा किया गया है, जिसमें भक्त-शिरोमणि, मेवाड़ गौरव एवं समाज सुधारक मीरा बाई के भक्तिमय स्वरूप की मूर्ति स्थापित कर इसका नामकरण मीरा पार्क के नाम से किया गया है। वर्षों काल में दैत्य मगरी की ओर से स्वरूपसागर ओवरफ्लो का नाला तीव्रता से बहता हुआ इस पार्क के पास से गुजरता है तथा यह दृश्य अति सुन्दर एवं मनोहारी परिलक्षित होता है। इस पार्क की सुन्दरता बनाये रखने के लिए यह उत्तम रहेगा कि इसके चारों ओर व्यापारिक गतिविधियों का संचालन नहीं हो।



**मोती मगरी एवं न.वि.प्र. पुलिया के मध्य स्थित मीरा पार्क**

● **नाले के मध्य वाटर चैनल** - नगर विकास प्रन्यास पुलिया से पंचवटी पुलिया तक 470 मीटर लम्बी 3.0 मीटर चौड़ी, 0.75 मीटर गहरी पक्की सीमेन्ट-कंकरीट चैनल करीब 75.00 लाख रुपये खर्च कर इस उद्देश्य के साथ बनाया गया कि इसमें वर्षभर साफ पानी भरा रह सकेगा। लेकिन वर्षा ऋतु के दौरान स्वरूपसागर और फतहसागर के गेट खोलने पर पानी के तेज बहाव से मिट्टी-पत्थर आदि बहकर इस वाटर चैनल में भर जाते हैं। वर्षाकाल के बाद यह वाटर चैनल स्वच्छ पानी के स्थान पर मिट्टी-पत्थर, गन्दा सीवरेज, टाइफा ग्रास, जलकुंभी, काई आदि से भरा रहता है। अतः इस वाटर चैनल के उद्देश्यपूर्ण क्रियान्विति हेतु इसकी नियमित साफ-सफाई के साथ पानी का बहाव भी सुनिश्चित किया जाना चाहिये।



**गुमानियावाला नाले के मध्य निर्मित वाटर चैनल के वर्षाकाल उपरान्त विविध अशुभनीय दृश्य**



**जन्म तिथि** : श्रावण शुक्ल  
**एकम विक्रम संवत्** 1561  
**शुक्रवार (ईस्वी सन् 1504)**  
**स्थान** : कुड़की, मेड़ता  
**पिता** : श्री रतन सिंह  
**माता** : श्रीमती वीर कुँवर  
**विवाह** : महाराणा सांगा के पुत्र श्री भोजराज जी  
**निर्वाण** : विक्रम संवत् 1603 (1546) को द्वारका में

**मीरां बाई की प्रतिमा भक्तिमय स्वरूप**

**मीरा बाई** : मीरा बाई एक मध्यकालीन हिन्दू आध्यात्मिक कवयित्री और अनन्य कृष्णभक्त थी। वह भक्ति आंदोलन के सबसे लोकप्रिय संतों में से एक थी। मीरा बाई का जन्म राजस्थान के मेड़ता के चौकड़ी (कुंडली) गांव में सन् 1498 में राजपूत रियासत के राज परिवार एवं शासक श्री रतन सिंह राठौड़ के यहाँ हुआ। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी तथा बचपन में ही उनकी माता का निधन हो गया था। तत्पश्चात् मीरा का पालन-पोषण उनके दादा की देख-रेख में हुआ, जो विष्णु उपासक, एक योद्धा व भक्त हृदयी थे। मीराबाई को संगीत, धर्म, राजनीति और प्रशासन जैसे विषयों की शिक्षा दी गयी एवं साधु-संतों और धार्मिक लोगों के संपर्क में रही। बचपन से ही उन्हें कृष्ण के प्रति गहरी आस्था थी तथा वह उनकी अनन्य भक्त थी।

मीरा का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश में राणा सांगा के पुत्र राजकुमार भोजराज के साथ सन् 1516 में सम्पन्न हुआ। पति भोजराज दिल्ली सल्तनत के शासकों के साथ एक संघर्ष में सन् 1518 में घायल हो गए और इसी कारण सन् 1521 में उनकी मृत्यु हो गई, जब मीरा मात्र 23 वर्ष की थी। मीराबाई ने सामाजिक और पारिवारिक कुर्रतियों व दस्तूरों का बहादुरी से मुकाबला किया। पति की असामयिक मृत्यु के बाद उनको ससुराल वालों ने सती होने को बाध्य किया लेकिन वे तैयार नहीं हुईं और धीरे-धीरे वे संसार से विरक्त हो गयीं एवं उन्होंने गिरधर-कृष्ण को अपना सब कुछ मान लिया। कृष्ण भक्ति में लीन होकर सड़कों एवं मन्दिरों में जाकर कृष्ण मूर्ति के सम्मुख भाव-विभोर होकर भक्तिमय भजन के साथ नृत्य करने लगीं। यह सब राज परिवार को पसन्द नहीं था, अतः उन्होंने मीरा को अनेक कष्ट दिए। यहां तक कि उनको विष का प्याला दिया गया, परन्तु भगवान के प्रति असीम भक्ति के कारण कुछ नहीं हुआ। अनेक कष्टों को सहते हुए कृष्ण के प्रति आसक्ति और प्रेम बढ़ता गया एवं वे वृंदावन चली गईं तथा संत रविदासजी की शिष्या बन गयीं। वृंदावन के बाद वे द्वारिका चली गईं, जहां 1557 ई. में एक मन्दिर में श्री कृष्ण की मूर्ति में समाहित हो गयीं।

उनकी रचनाओं में मीरा पदावली, गीत गोविन्द टीका, राग सोरठ और नरसी का मायरा आदि मुख्य हैं। उनके भाव में अधिकतर भक्ति रस का उल्लेख मिलता है। मीरा का समय बहुत बड़े राजनैतिक उथल-पुथल का समय रहा है। बाबर का हिन्दुस्तान पर हमला और प्रसिद्ध खानवा का युद्ध मीरा के समय में हुआ था। इन सभी परिस्थितियों के बीच मीरा का रहस्यवाद और भक्ति की निर्गुण मिश्रित सगुण पद्धति सर्वमान्य बनी।

● **नाले के दोनों तरफ नाली** : दैत्य मगरी, मोती मगरी, पंचवटी, न्यू फतहपुरा, सरदारपुरा, आलू फैक्ट्री कच्ची बस्ती से गुजरते गुमानियावाला नाले के दोनों छोर पर करीब 98 लाख रुपये लागत से 1390 मीटर लम्बी नाली का निर्माण सीवरेज एवं गन्दा पानी के निकास के लिए किया गया, जिससे नाले में यह पूर्व की तरह नहीं गिरे एवं इसे बदरंग नहीं बनाये। इस नाली की ऊँचाई इतनी कम है कि स्वरूप सागर और फतहसागर के ओवरफ्लो से पानी जैसे ही छोड़ा गया तो शुद्ध बरसाती पानी सीवरेज के नाले में भी बहा और इससे सीवरेज एवं गन्दा पानी भी बहकर उदयसागर पहुँच गया। गुमानियावाला नाले के दोनों किनारों पर सीवरेज ट्रंक लाइन बिछाकर, सीवरेज एवं गन्दा पानी सीधे छोटे सीवरेज शुद्धीकरण यंत्र तक पहुँचा कर शुद्धीकरण उपरान्त इसे नाले में पुनः छोड़ा जाता तो यह अधिक उपयोगी सिद्ध होता।

इस नाले के पास निवासरत नागरिकों को स्वच्छ एवं शुद्ध वातावरण के साथ बीमारियों एवं मच्छरों के प्रकोप से सुरक्षा प्रदान करने हेतु सार्थक प्रयास किये जाने अपेक्षित हैं। इसके अन्तर्गत नाली निर्माण किया गया, परन्तु नालियों का कुछ भाग टूटने, पूर्णतया कचरा या प्लास्टिक अवशेष इकट्ठे होने, अनियमित सफाई व्यवस्था, समुचित ढलान एवं ऊँचाई के अभाव में उक्त गन्दा पानी व सीवरेज नाली में नहीं बहकर पूरे गुमानियावाला नाले में बह रहा है। इसकी नियमित साफ-सफाई एवं मरम्मत हो तो इस प्रकार की परिस्थिति उत्पन्न नहीं हो सकेगी।

**गुमानियावाले नाले के दोनों किनारों पर बनी नालियाँ एवं उनमें बहता गन्दा पानी गाद व खरपतवार से अटी हुई एवं वर्षाकाल में बहता हुए निर्मल पानी से सराबोर अवस्था**



**नाले की जल निकास क्षमता में वृद्धि** : नगर विकास प्रन्यास से आयड़ मिलन स्थल तक गुमानियावाला नाले को 1.5 मीटर गहरा करने के साथ पक्का करने से इसकी जल निकास क्षमता में वृद्धि होगी। वर्ष 1973 की अतिवृष्टि एवं बाढ़ के बाद गुमानियावाला नाले की जल निकास क्षमता 5000 क्यूसेक से बढ़ाकर 9000 क्यूसेक कर दी गई थी लेकिन आसपास की बस्तियों की नालियाँ एवं नाले इसमें रखने एवं 5000 क्यूसेक से अधिक पानी छोड़ने से इन नालियों का पानी उल्टा बहकर घरों एवं बस्तियों में पहुँचने लगा तथा ये क्षेत्र प्रभावित होने लगे। अतः गुमानियावाला नाले की सुन्दरता वृद्धि हेतु इसके दोनों तरफ सीवरेज ट्रंक लाइन बिछाने से पूर्व इस नाले को गहरा करने के साथ इसकी दीवारें जो पत्थर व सीमेन्ट की बनी हुई हैं, उन्हें आरसीसी से मजबूत बनाकर इसकी जल निकास क्षमता में वृद्धि की जानी चाहिये। इससे इस नाले को वर्षभर पानी से भरा रखा जा सकेगा एवं नाले के पास स्थित बस्तियों के मकान नमी के कारण प्रभावित नहीं होंगे।

**नगर विकास प्रन्यास के पीछे स्थित नाले में सुधार** : सहेलियों की बाड़ी के दक्षिणी छोर एवं नगर विकास प्रन्यास कार्यालय व टेक्नोक्रेट हाउसिंग कॉलोनी के मध्य फतहसागर झील का ओवरफ्लो नाला भी सीवरेज, गन्दा पानी, झाड़ियाँ एवं अवांछनीय वनस्पति से भरा हुआ रहता है। इसके दोनों तरफ नालियाँ बनाकर इन्हें सीवरेज भूमिगत ट्रंक लाइन के माध्यम से परिवहित करने से उक्त गन्दगी नाले में समाहित नहीं हो सकेगी। इसके नियमित सफाई एवं निरीक्षण के अभाव में उपरोक्त संपूर्ण गंदगी वर्षाकाल में गुमानियावाला एवं आयड़ नदी में बहते हुए उदयसागर में समाहित हो जाती है।

**स्वरूपसागर, फतहसागर एवं गुमानियावाला नाले का विकास** : स्वरूपसागर, फतहसागर की घुमावदार रपट होने से पानी बहुत वेग एवं सुन्दरता लिए हुए गिरता है। स्वरूपसागर नाला दैत्यमगरी एवं नगर विकास प्रन्यास की आवासीय कॉलोनी के मध्य गुमानियावाला नाले की ओर बहता है। यहाँ पर दो-तीन रपट 1.8-2.0 मीटर ऊँचाई की बनाकर वाटर फॉल विकसित कर स्टोन वर्क एवं लाईटें लगाकर इसे सुन्दर स्वरूप दिया जा सकता है। वर्तमान में नाले के दोनों तरफ दीवार के सहारे बनी बड़ी नालियों को हटा कर भूमिगत सीवरेज से जोड़ देने से स्वच्छता के साथ सुन्दरता में भी अभिवृद्धि संभव होगी। नाले के पश्चिम की तरफ स्थित नगर विकास प्रन्यास आवासीय कॉलोनी की सड़क या नाले की दीवार के साथ स्वरूपसागर नाले के ठीक ऊपर पहाड़ी पर कन्द्री लीवर पद्धति से वॉक-वे भी बनाया जा सकता है। इसी प्रकार फतहसागर नाले को गुमानियावाला नाले तक सहेलियों की बाड़ी के अन्दर भव्य रूप देते हुए एक और वॉक-वे विकसित किया जा सकता है। इन नालों के मिलन स्थल के पश्चिमी क्षेत्र की भूमि के कुछ भाग को अधिगृहीत कर एक बड़े एवं गहरे पोण्ड का स्वरूप देकर यहाँ से फतहसागर-स्वरूपसागर रपट तक पाइप लाइन बिछाकर दोनों तालाबों की रपट से पानी को झरने के रूप में प्रतिदिन एक निश्चित समय पर छोड़ना चाहिये, जिससे पर्यटकों को वर्षाकाल का मनोहारी दृश्य प्रतिदिन देखने को मिलेगा।

**मोती मगरी पुलिया का नव-निर्माण** : टाउन प्लानर कार्यालय के पास बनी पुलिया मरम्मत एवं रखरखाव के अभाव में कमजोर हो चुकी है, इसे ऊँची एवं पीलर रहित बनाकर इसके बहाव की सुगमता एवं क्षेत्र के सौन्दर्यीकरण की वृद्धि संभव है।

**आलू फैक्ट्री-अलीपुरा रपट का पुनर्निर्माण** : यह रपट वर्तमान में पानी के समुचित बहाव में रुकावट खड़ी करती है। इस रपट के छोटे मेहराब एवं जर्जर स्थिति के कारण पानी का बहाव धीरे-धीरे चलता है जिससे वर्षाकाल में पानी इसके ऊपर से होकर बहता है। इस रपट के स्थान पर चौड़ी एवं ऊँची सिंगल स्पान पुलिया बनायी जानी चाहिये जिससे ओवरफ्लो के समय पानी निर्बाध रूप से आगे की ओर जा सके।

**गुमानियावाला नाला एवं आयड़ नदी संगम स्थल का विकास** : गुमानियावाला नाला एवं आयड़ नदी का संगम स्थल बहुत विशाल है। जब दोनों ओर से पानी की आवक परस्पर मिलकर आयड़ नदी के रूप में आगे की ओर बढ़ती है, तो इस क्षेत्र की विशालता एवं जल राशि के फैलाव का दृश्य बहुत ही मनोहरी होता है। गुमानियावाला नाला आयड़ नदी के संगम स्थल तक बहुत कम



सीवरेज एवं गन्दायुक्त पानी का समावेश



न.वि.प्र. कार्यालय के पीछे अनवरत बहता गन्दा नाला



मोती मगरी पुलिया - जीर्णोद्धार अवस्था



आलू फैक्ट्री पुलिया - दयनीय स्थिति



संगम स्थल : गुमानियावाला नाला एवं आयड़ आवासीय बस्तियों का अतिक्रमण

गुमानियावाला नाला एवं आयड़ नदी संगम स्थल से पानी अलीपुरा-शोभागपुरा रपट से भूपालपुरा की ओर जाते हुए - अति सुन्दर दृश्य  
 “इस स्थल को एक दर्शनीय पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने पर मंथन किया जाना अपेक्षित है।”



वर्षाकाल के पश्चात् इस स्थल की दयनीय स्थिति



वर्षाकाल के पश्चात सोभागपुरा रपट के पास भरा हुआ गन्दा पानी एवं अन्य खरपतवार

ढलान पर बहता है, जिसे कतिपय प्रयासों से वर्षभर पानी से भरा रखा जा सकता है। इसके लिए वर्तमान में स्थित अलीपुरा-सौभागपुरा रपट के स्थान पर सलूस गेट वाली नई पुलियाओं का निर्माण किया जाना चाहिये। इससे पुला एनिकट तक आयड़ नदी में पानी वर्षभर भरा रखा जा सकेगा। इसके विपरीत इस क्षेत्र में वर्षाकाल के बाद देखते हैं तो सौभागपुरा-अलीपुरा रपट के दोनों तरफ गन्दा सीवरेज युक्त पानी निरन्तर बहता रहता है, जिससे इस क्षेत्र का परिदृश्य काफी अशोभनीय दिखाई देता है।

**शुद्धीकरण संयंत्र की स्थापना :** अलीपुरा या कच्ची बस्ती के किनारे सीवरेज शुद्धीकरण संयंत्र स्थापित करने से यहाँ के संपूर्ण सीवरेज व गन्दे पानी का शुद्धीकरण संभव हो सकेगा। शुद्धीकरण उपरान्त प्राप्त पानी से गुमानियावाला नाला एवं आयड़ नदी के इस भाग को वर्ष भर भरा रखा जा सकेगा।

गुमानियावाला नाले को सदैव स्वच्छ एवं सुन्दरतम रखना है, तो इसके दोनों किनारों पर कम से कम 15-20 फीट चौड़ी निरीक्षण सड़क बनानी होगी। गुमानियावाला नाले के किनारे नवीन बस्तियाँ पंचवटी, न्यू फतहपुरा, सरदारपुरा, अलीपुरा आदि में नियोजन के समय इनके किनारे निरीक्षक सड़क रखी गयी थी, जिसके अवशेष आज भी मिल जायेंगे। अधिकतम भूखण्डधारियों ने इस जगह को नगर-निगम या नगर विकास प्रन्त्यास से स्वीकृतियाँ या एक-दूसरे के देखादेखी अपने आवासीय भूखण्ड में मिला दिया है। इस जमीन के टुकड़े को भूखण्डधारियों को समझाकर या पुनः बाजार दर पर अवाप्त कर उक्त निरीक्षक सड़क का निर्माण करवाना चाहिये। इससे सभी भूखण्डधारी नाले के विकास की गतिविधियों से जुड़ जायेंगे तथा यह अतिक्रमण मुक्त होने के साथ इसमें समाहित गन्दे नालों को उस पर बिछाई गई सीवरेज लाइन में जोड़ा जा सकेगा। भूखण्डधारी निरीक्षक रोड पर अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान, रेस्टोरेन्ट, मनोरंजन केन्द्र, आवासीय गेस्ट हाउस, होटल्स आदि बनाकर चला सकेंगे। गुमानियावाला नाले का सौन्दर्यीकरण आयड़ विकास का प्रथम चरण होना चाहिये। इसकी सफल क्रियान्विति के लिए शहरवासियों की सहभागिता पर ही आयड़ का विकास निर्भर करेगा। नाले का पानी से पूर्ण भरा हुआ नजारा सिंगापुर रिवर फ्रंट से कतई कम नजर नहीं आयेगा। इस प्रकार इस नाले को पर्यटकों एवं शहरवासियों के लिए रात्रिकालीन भ्रमण स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है।



गुमानियावाला नाला के किनारे पर वर्तमान में भी कुछ क्षेत्रों में निरीक्षण पाथ-वे विद्यमान है।

निरीक्षण पाथ-वे

**आयड़ नदी पर पुल एवं रपट :** आयड़ नदी के शहरी क्षेत्र बेदला से सेवाश्रम पुलिया तक नदी के पूर्वी छोर की तरफ बसी नई और पुरानी बस्तियों में रहने वालों को सभी परिस्थितियों में आवागमन सुविधा हेतु बेदला पुलिया, नई पुला पुलिया, नगर विकास प्रन्यास पुलिया, भूपालपुरा पुलिया, सीपीएस पुलिया एवं आयड़ पुलिया कुछ वर्षों में ही नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास द्वारा निर्मित की गई है। इन पुलियाओं पर दृष्टिपात करें तो इनका निर्माण परम्परागत एवं करीब-करीब एक जैसा लगता है। इन पुलियाओं के मेहराब की दूरी भी बहुत कम रखी गई है। भविष्य में जब आयड़ नदी के विकास के साथ यह जलप्लावित रहेगी, तो बड़ी व ऊँची नावों का संचालन पुलिया के नीचे से हो पाना कठिन होगा। इन पुलियाओं को परम्परागत निर्माण पद्धति के स्थान पर बड़े एवं ऊँचे मेहराब के साथ आधुनिकता दी जाती तो इस नदी की सुन्दरता में भी अभिवृद्धि के साथ अधिक सुविधाजनक होती। सिंगापुर रिवर मात्र 3.2 कि.मी. लम्बी है। इस पर विभिन्न आकृतियों के 9 पुल बने हुए हैं। इन पुलों की बनावट एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न है। आयड़ नदी पर भविष्य में बनने वाले पुल आधुनिक एवं आकर्षक हो।

**अहमदाबाद की साबरमती नदी पर विकसित विभिन्न आधुनिक पुलियाएँ**



**आयड़ की वर्तमान पुलियाएँ**

**सिंगापुर रिवर फ्रन्ट पर विकसित पुलियाएँ**



**आयड़ नदी पर निर्मित छोटी पुलिया पर मंथन** : आयड़ नदी के पाँच स्थानों पर छोटी पुलिया बनाई गई हैं जिससे आमजन एवं छोटे वाहनों का दोनों किनारों से सुगमता के साथ आवागमन हो सके। वर्षा ऋतु में तेज बारिश के दौरान नदी के उफान के समय इन पुलियाओं के ऊपर से पानी बहने लगता है और ये पुलिया पानी में डूब जाती हैं। इससे यातायात अवरुद्ध हो जाता है। आयड़ नदी पर बेदला रोड से नवरत्न कॉम्प्लेक्स, अलीपुरा (भूपालपुरा) से सौभागपुरा, आलू फ़ैक्ट्री सर्कल से अलीपुरा कॉलोनी (सेन्ट पॉल स्कूल), सुभाष नगर से आयड़ (धूलकोट), राष्ट्रीय खाद्य निगम भण्डार से हिरण मगरी, सेक्टर-3 में इस प्रकार की पुलियाओं का निर्माण किया गया है। इन छोटी पुलियाओं का निर्माण बहुत ही सामान्य स्तर का है, जो आयड़ विकास एवं उदयपुर जैसे सुन्दर शहर के अनुकूल नहीं है। अतः इन पुलियाओं का निर्माण आयड़ नदी के अधिकतम बहाव स्तर को ध्यान में रखते हुए किया जाता तो वह अधिक सार्थक सिद्ध होता। साथ ही इन्हें बहुत सुन्दर ढंग से आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए निर्मित किया जाना चाहिये। वर्तमान में इन पुलियाओं पर छोटे मेहराब या पाइप डाले गये हैं जिससे पानी का बहाव बढ़ने के साथ जल स्तर बढ़ जाता है।



आयड़ नदी के पेटे में बनी सुभाषनगर से आयड़ (धूलकोट) पुलिया भी छोटे पाइप डालकर बनायी गई है जिससे पानी की निकासी में भारी दिक्कत आ रही है। आधे से ज्यादा पाइप जमीन में धँसे हुए हैं तो कुछ मिट्टी व गन्दगी से अटे पड़े हैं। अधिकांश पानी अभी भी एक छोर पर एकत्रित हो रहा है जो पुलिया को भारी नुकसान पहुँचाकर ढहा सकता है। यह पुलिया आयड़ से सुभाषनगर को जोड़ने वाला मुख्य मार्ग बन चुकी है। हल्के चारपहिया व दोपहिया वाहन इस मार्ग से सर्वाधिक गुजरते हैं। इस मार्ग के चालू होने के बाद टोकर चौराहे पर यातायात का दबाव काफी कम हो गया है। पल-पल में लगते जाम से भी लोगों को निजात मिल गई है। इस पुलिया को नदी के अधिकतम बहाव स्तर तक समुचित ऊँचाई प्रदान करते हुए एक सुन्दर पुलिया के रूप बनाया जा सकता था। साथ ही इसके दोनों तरफ के प्रारम्भिक स्थलों को अधिगृहीत कर चौड़ा बनाया जाना चाहिये था। इस प्रकार की पुलिया बनने से न तो पानी रुकने की समस्या आती, न ही वर्षाकाल में एकाएक ब्रेक लगने से वाहनों के फिसलने का खतरा रहता।

**नदी के बहाव को मापने का यंत्र स्थापित करना** : पिछले 75 वर्षों में आयड़ नदी में कई बार (1973, 2006, 2018 एवं 2022) बाढ़ के हालात देखे गये हैं। वर्षवार किस ऊँचाई तक कितना पानी आया, शायद यह रिकॉर्ड जल संसाधन विभाग के पास उपलब्ध नहीं है। वर्ष 1950 में बने सिंचाई विभाग और 1998 से कार्य कर रहे जल संसाधन विभाग, नगर निगम व नगर विकास प्रन्यास ने आयड़ नदी के बहाव को मापने की ही आवश्यकता नहीं समझी। परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आयड़ नदी पर गुमानियावाले नाले के बाद किसी उचित स्थान पर नदी के बहाव को मापने का यंत्र आवश्यक रूप से स्थापित किया जाना चाहिये।

**आयड़ से कचरा एवं मिट्टी का नियमित निकास** : वर्ष 2014 से वेपकोस के प्रतिवेदन के आधार पर आयड़ नदी में 6.66 लाख क्यूबिक मीटर कचरा/गाद भरा पड़ा है। इसके अतिरिक्त हाल ही में नालियों के निर्माण एवं सीवरेज लाइन बिछाने के दौरान इसमें मिट्टी/कचरे की मात्रा कई गुणा बढ़ गई है। इस गाद को बाहर निकालने के साथ नदी के तल को एक निश्चित ढलान के साथ समतल करने से नदी की जल बहाव क्षमता में काफी वृद्धि संभव हो सकेगी।



### विशेषज्ञों द्वारा आयड़ नदी के संबंध में महत्वपूर्ण सुझाव :

- आयड़ नदी के विकास की हमने बहुत कल्पनाएं संजोए रखी हैं। इसे फ्रांस की सान एवं अहमदाबाद की साबरमती की तरह विकसित करने के सपने हम संजोते हैं, लेकिन यह संभव नहीं है, क्योंकि यह नदी वर्षभर नहीं बहती है। इसके नियमित बहाव के लिए निर्माणोपरान्त जल की आवश्यकता को जलशोधक यंत्र लगाकर शुद्ध पानी पुनः नदी में प्रवाहित किया जाये। हिन्दुस्तान जिंक ने जो शुद्धीकरण यंत्र लगा रखा है, उसका पानी भी पुनः आयड़ नदी में छोड़ा जाये।
- वर्तमान में उपयोग में लिए जाने वाले शुद्धीकरण यंत्रों के स्थान पर हम जलकुम्भी एवं अन्य पौधों की सहायता से भी जल का शुद्धीकरण कर सकते हैं। इस विधि का उपयोग अनेक स्थानों पर हो रहा है, लेकिन हमारी परिस्थितियाँ भिन्न हैं क्योंकि इस नदी के अंतिम छोर पर विशाल उदयसागर झील स्थित है। मानवीय असावधानी से नदी में शुद्धीकरण हेतु जलकुम्भी एवं अन्य पौधे वर्षाकाल में अधिक जल आवक या बाढ़ की परिस्थितियों में बहकर उदयसागर में फँस जायेंगे एवं इस विशाल झील में जलकुम्भी एवं अन्य पौधों की रोकथाम करना संभव नहीं होगा। साथ ही इन पौधों से वाष्पीकरण उपरान्त जल का भी भारी मात्रा में ह्रास होगा।
- आयड़ नदी की विकास परियोजना को पूर्ण करने के लिए तकनीकी अधिकारियों का ज्ञान पूर्णतः उपयोग में लिया जाना चाहिये। विकास की अवधारणा राजनैतिक एवं प्रशासनिक अधिकारियों की मनोभावनाओं तक ही सीमित नहीं रखी जानी चाहिये।
- आयड़ नदी का विकास पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के माध्यम से किया जाना चाहिये। आयड़ नदी के दोनों तटों पर वर्तमान में निर्मित व खाली भूखण्ड मालिकों को इस विकास यात्रा में सरकार का सहयोग करना चाहिये। सहयोग का आधार नदी तट किनारे पर्याप्त स्थान छोड़ते हुए भूखण्डों को सुन्दर होटल, रेस्टोरेन्ट एवं बगीचे में परिवर्तित करना भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस क्षेत्र पर पर्याप्त स्थान रखते हुए बहुमंजिला इमारतें बनाने की स्वीकृति दी जानी चाहिये। आयड़ नदी के दोनों तरफ उपयुक्त दूरी पर जल शोधन संयंत्र लगाकर उपचारित जल को पुनः आयड़ नदी में डाला जाना चाहिये। आयड़ नदी में मत्स्य पालन के माध्यम से भी जल का शुद्धीकरण किया जा सकता है।
- आयड़ नदी का सीमांकन 1947 से पूर्व भू-राजस्व अभिलेखों के आधार पर किया जाना चाहिए।
- आयड़ नदी के विकास कार्य में सीवरेज तथा जलशोधन पर सर्वाधिक खर्च संभावित है, जिसके लिए वैकल्पिक आर्थिक स्रोत से प्रयास किए जाने चाहिए। नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास संयुक्त रूप से एक सीवरेज एवं जलशोधन कोष की स्थापना करें तथा ये दोनों संस्थाएँ प्रतिवर्ष इस कोष में अगले 10-15 वर्षों तक स्वयं आर्थिक सहयोग करते हुए उदयपुर के ख्यातिप्राप्त औद्योगिक प्रतिष्ठानों से सी.एस.आर. के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग प्राप्त कर सकते हैं।
- आयड़ नदी बेसिन की टोपोग्राफी, पहाड़ियों से बनने वाली प्राकृतिक जल प्रवाह व्यवस्था एवं पिछोला, फतहसागर सहित समस्त छोटे तालाबों के मूल स्वरूप व प्राकृतिक किनारों को बचाने से ही आयड़ संरक्षित रह पायेगी।
- जैव विविधता एवं पानी एक-दूसरे के पूरक हैं। जल स्रोतों के विनाश से जैव विविधता समाप्त होती है, वहीं जैव विविधता के समाप्त होने से जल स्रोतों पर भी संकट आ जाता है, यही नियम आयड़ पर भी लागू होता है, अतः जैव विविधता को बनाये रखने हेतु इसमें पानी का बहाव वर्षपर्यन्त बना रहना आवश्यक है। आयड़ नदी में बढ़ रहे अतिक्रमण एवं प्रदूषण से उदयपुर घाटी की जैव विविधता नष्ट हो रही है। ऐसे में सभी को मिलकर इसे बचाने के लिए सक्रिय होना होगा।
- नदी के किनारे/पेटे के आसपास जहाँ सरकारी जमीनें उपलब्ध हैं, वहाँ पार्क विकसित करने और छोटे एसटीपी से उपचारित होने वाले जल को भरकर छोटे तालाब बनाने की योजना पर कार्य किया जाए ताकि नदी के किनारों को सुन्दर बनाया जा सके।
- शहरी क्षेत्र में जहाँ छोटे एसटीपी लगाए जाने हैं, उनके भी स्थान चिह्नित किये जाने चाहिये ताकि उदयसागर वाले छोर तक पूरी नदी में उपचारित जल का प्रवाह होता रहे और पेटे के पास बनने वाले कृत्रिम छोटे तालाबों में भी साफ पानी भरा रहे।
- जहाँ आवश्यक हो वहाँ नदी पर ब्रिज के साथ संपूर्ण तट पर भी रिटेनिंग वॉल संसाधन उपलब्धता के साथ बनायी जानी चाहिये।
- आयड़ सौन्दर्यीकरण हेतु आयड़ विकास ऑथोरिटी का गठन कर एक वृहद मास्टर प्लान वेपकोस या तकनीकी रूप से सक्षम संस्था द्वारा उदयपुर के जल विशेषज्ञों के सहयोग से बनाया जाना चाहिये। इसके साथ नियमित विकास के पहलू पर अनुसंधान करने के साथ इसके समस्त कार्य संसाधन उपलब्धता के साथ प्राथमिकता के आधार पर किये जाने चाहिये।



अतः आयड़ नदी जो उदयपुर शहर की जीवन रेखा है एवं झीलों के साथ पूर्ण रूप से जुड़ी हुई है, इसे पूर्ण रूप से स्वच्छ, निर्मल, सलिल प्रवाहिनी बनाने हेतु आर्थिक सहयोग से कई अधिक जन-सहभागिता एवं राज्य सरकार, नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास, उदयपुर के वृद्ध संकल्प की आवश्यकता है। शहर के औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा अपने सी.एस.आर. फण्ड के तहत सक्रिय भागीदारी निभाने से इस महत्वपूर्ण आयड़ नदी के विकास एवं अनुसंधान कार्यक्रम की निरन्तरता, दक्षता, गुणवत्ता एवं समयबद्धता में अत्यधिक वृद्धि संभव होगी। आयड़ नदी का शहर में जो स्वरूप है, उसमें उच्च नियोजन के साथ विकास के लिए नदी के दोनों किनारों पर रहने वाले नागरिकों की सक्रिय भागीदारी एवं सहयोग भी आवश्यक ही नहीं बल्कि अति महत्वपूर्ण होगा।

### इटली का रोम शहर एवं हमारी आयड़ :

नदी के किनारे विकसित इटली का रोम शहर यहाँ के शहरवासियों विशेषकर दोनों किनारों पर रहने वाले आम नागरिकों के साथ स्थानीय प्रशासन, राजनेता, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के दृढ़ संकल्प, पूर्ण निष्ठा एवं सहयोग से ही विश्व के पर्यटन मानचित्र पर उभरा है। क्या हम सभी उदयपुरवासी मिलकर इसी तर्ज पर आयड़ नदी का कायाकल्प नहीं कर सकते? मेरे विचारों से यह संभव है। इसके लिए निम्न सकारात्मक प्रयास अपेक्षित हैं :-

- स्थानीय प्रशासन, नगर निगम एवं नगर विकास प्रन्यास द्वारा आयड़ नदी के दोनों किनारों के अतिक्रमणों को हटाकर गहरी नींव के साथ आरसीसी की मजबूत दीवार खड़ी की जावे तथा इसके ऊपर जहाँ भी स्थान उपलब्ध हो, वहाँ सीवरेज, पानी एवं विद्युत की पाइप लाइन डालकर आरसीसी की सड़क बनायी जावे।
- नदी तल से पर्याप्त गाद व कचरा निकालते हुए एक निश्चित ढलान के साथ समतलीकरण कर इसे भी आरसीसी से पक्का बनाया जावे।
- नदी तल पर पूर्व में बिछाई गई सीवरेज लाइन को दोनों किनारों पर निर्मित सड़क पर बिछाने से नदी में सीवरेज लिकेज की कोई समस्या नहीं रहेगी। इससे सीवरेज लाइन के रखरखाव में भी सुविधा रहेगी। वर्तमान में आयड़ नदी के पेटे में सीवरेज डालने से इसमें कभी-कभी रिसाव होने के साथ जल प्रदूषित हो रहा है।
- नदी के दोनों किनारों पर एक निश्चित दूरी पर सीवरेज शुद्धीकरण यंत्र लगाकर उससे प्राप्त शुद्ध जल को पुनः आयड़ नदी में छोड़ने से वर्षपर्यन्त यह नदी पानी से भरी रहेगी।
- इसी प्रकार बाजार का विकास, रेस्टोरेन्ट, होटल, उद्यान, जीम, कसीनों, यातायात व्यवस्था आदि कार्यों को नदी के किनारों पर रहने वाले नागरिकों, शहर के उद्योगपति एवं व्यापारी वर्ग के लिए नियोजित करके छोड़ देना चाहिये। नागरिकगण इन कार्यों को अपनी व्यापारिक गतिविधियों से आर्थिक लाभ प्राप्त करते हुए उच्च स्तरीय "वर्ल्डक्लास" बनाने में सहयोगी बन सकते हैं। इससे उदयपुर की आयड़ नदी विरासत में मिली संस्कृति के अनुसार परिवर्तित होकर उदयपुर की जीवनरेखा के रूप में निखारी जा सकती है।

